श्री

वैराग्योपदेशक विविध पद संग्रह.

पंडित श्री यशोविजय, विनयविजय

तथा ज्ञानसारजी विरचित.

तेने

यथामति संशोधन करीने

श्री [illegible] जापुरी मध्ये

जगदीश्वर [illegible] छापी प्रगट कर्यो छे.

संवत् १९३८ सने १८८१.

अथ

॥श्रीभूधरविलास प्रारंभः॥

॥पद पेहलुं॥

॥राग धन्याश्री॥ चेतन ज्ञानकी दृष्टि निहा
लो चेतन॰॥टेक॥ मोह दृष्टि हे जेसो जाडेरो, हो
त महा मतवालो॥ चेतन॰॥१॥ मोह दृष्टि अति
चपल करत हे, भव वन वानर वालो॥ योग वियो
ग दवानल लागत, पावत नांहि विचालो॥ चेत
न॰॥२॥ मोह दृष्टि कायर नर डरपे, करे अकारन रा
लो॥ रन मेदान लरे नहीं अरिसुं, सूर लरे ज्युं पालो
॥ चेतन॰॥३॥ मोह दृष्टि जन जनके परवश, दीन
अनाथ दुखालो॥ मागे भीख फिरे घर घरसुं, कहे
मुजकुं कोउ पालो॥ चेतन॰॥४॥ मोह दृष्टि मद
मदिरा माती, ताको होत उछालो॥ पर अवगु

न राचे सो अहनिस, काग असुचि ज्यों कालो॥
चेतन॰॥५॥ ज्ञान दृष्टि मां दोष न एते, करे ज्ञा
न अजुआलो॥ चिदानंद घन सुजस वचन रस,
सज्जन हृदय पखालो॥ चेतन॰॥६॥ इति॥

॥पद बीजुं॥

॥राग सारंग॥ कंत बिनु कहो कौन गति ना
री॥ टेक॥ सुमति सखी जई वेगी मनावो, कहे चे
तन सुन प्यारी॥ कंत॰॥१॥ धन कन कंचन मह
ल मालिजे, पिउ बिन सबहि उजारी॥ नि
द्रा जोग लहु सुख नांही, पियु वियोग तनु ज
री॥ कंत॰॥२॥ तोरे भीत पराई दुरिजन, अछते
दोष पुकारी॥ घर भंजन के कहन न कीजे, कीजे
काज विचारी॥ कंत॰॥३॥ विभ्रम मोह महा मद
विजुरी, माया रेन अंधारी॥ गर्जित अरति
लवे रति दादुर, काम की भई असवारी॥ कंत॰

॥४॥ पिउ मिलवेकुं मुझ मन तलफे, मे पिउ बि-
न मत गारी॥ सुरझी देई गये पिउ मुझकुं, नख-
हे पीर पीयारी॥३॥तं०॥ संदेश सुनी आये पि-
उ उतम, लई अद्भुत मनुहारी॥ चिदानंद घन
सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी॥४॥तं०॥५॥

॥पद छठुं॥

॥राग धन्याश्री॥ परम गुरु जैन कहो क्यौं होवे,
गुरु उपदेश विना जन मूढा, दर्शन जैन बिगोवे
॥परम गुरु जैन कहो क्यौं होवे॥टेक॥१॥कहत कृ-
पानिधि समजल झीले, कर्म मयल जे धोवे॥ब-
हुल पाप मल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे॥
परम०॥२॥ स्याद्वाद पूरन जे जाने, नयगर्भि-
त जस वाचा॥ गुन पर्याय द्रव्य जे बूझे, सोई
जैन है साचा॥ परम०॥३॥ क्रिया मूढ मति जे
अज्ञानी, चालत चाल अपूठी॥ जैन दशा उन-

मेकी नाही, जैसो सब की अूठी ॥ परमगाभ्मा पर परनति अपनी कर माने, किरिया गर्वे घेहे जो ॥ तिनकुं अनेकको क्युं कहियें, सो मूरखमें पहिलो ॥ परमगापा ॥ ज्ञान भाव ज्ञान सब मांही, शिव साधन सर्द्दहिओ ॥ नाम भेषसें काम न सीझे, भाव उदासे रहिओ ॥ परमगाउ ॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी दासी ॥ क्रिया करत धरतु हे ममता, याहि गलेमें फांसी ॥ परमगा६ ॥ क्रिया बिना ज्ञान नहिं कबहुं, क्रिया ज्ञान बिनु नांही ॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहतु हे, ज्यों जलरस जल मांही ॥ परमगा७ ॥ क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस भांगे ॥ सद्गुरु शीख सुने नहीं कबहुं, सो जन जनतें लाजे ॥ परमगा८ ॥ तत्व बुद्धि जिनकी परनति हे, स

कुलसूरजकी कूंचीा॥ जगजस चाहै चहै छीनहीको,
जैनदशा जस लीनी॥ परम०॥ ५॥ इति॥

॥पद चोथुं॥

॥राग कल्याणी॥ परम प्रभु सब जन शब्दें
ध्यावे॥ जब लग अंतर भरम न भांजे, तब ल
ग कोउ न पावे॥ परम प्रभु०॥ १॥ सकल
अंस देखे जग जोगी, जो जिनु समता आवे॥
ममता अंधन देखे याको, चित्त चिहुं ओरे ध्या
वे॥ परम प्रभु०॥ २॥ सहज शक्ति अरु भ
क्ति सुगुरु की, जो चित्त जोग जगावे॥ गुन प
र्याय द्रव्य सुं अपने, तो लय कोउ लगावे॥ प
रम प्रभु०॥ ३॥ पढत पूरान वेद अरु गीता, मू
रख अर्थ न भावे॥ इत उत फिरत गहत रस ना
ही, ज्यौं पशु चर्वित चावे॥ परम प्रभु०॥ ४॥
पुद्गल सें न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छिपा

वो॥ उनसें अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो
जावो॥ परम प्रभु०॥५॥ अकल अलख अज
अजर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावो॥ अंतरजा
मी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुन गावो॥ परमप्र
भु०॥६॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग उपर प्रमाणे॥ चेतन जो तुं ज्ञान अ
भ्यासी॥ आपहि बांधे आपहि छोडे, निजम
ति शक्ति विकासी॥ चेतन०॥टेक॥ जो तु आ
प स्वभावें खेले, आसा छोरी उदासी॥ सुरनर
किन्नर नायक संपति, तो तुज घरकी दासी॥ चे
तन०॥१॥ मोह चोर जन गुन धन लूसे, देत आ
स गल फांसी॥ आसा छोर उदास रहे जो, सो
उत्तम संन्यासी॥ चेतन०॥२॥ जोग लई पर
आस धरत है, याही जगमें हांसी॥ तु जाने मे

गुनकुं संचुं, गुनतो भवे नासी॥ चेतन०॥ ४॥
पुद्गलकी तुं आस धरत है, सोतो सबहिं विना-
सी॥ तुं तो भिन्न रूप है उनतें, चिदानंद अ-
विनासी॥ चेतन०॥ ५॥ धन खरचे नर बहु-
त गुमाने, करवत लेवे कासी॥ तोभी दुःखको
अंत न आवे, जे आसा नहिं घासी॥ चेतन
०॥ ६॥ सुख जल विषम विषय मृग तृष्णा,
होत मूढ मति प्यासी॥ विभ्रम भूमि भई
पर आसी, तुंतो सहज विलासी॥ चेतन
०॥ ७॥ याको पिता मोह दुःख भ्राता, हो-
त विषय रति मासी॥ भव सुत भरता अ-
विरति प्रानी, मिथ्या मति है हांसी॥ चेतन०
॥ ८॥ आसा छोर रहे जे जोगी, सो होवे सि-
व वासी॥ उनको सुजस बखाने ज्ञाता, अं-
तर दृष्टि प्रकासी॥ चेतन०॥ ९॥ इति॥

॥पद छंद॥

॥राग कनडो॥ भज गति चिदानंद घन की॥टेक॥ भव बंधन शक्ति सुं होवे, ऊजर पुलटकिन की॥ भज०॥२॥ भेदी परनति समकित पायो, कर्मबंध घन की॥ जैसी सबल कठिनता दीसे, कोमलता मन की॥ भज०॥३॥ भारी भूमि भयंकर चूरी, मोहरायरन की॥ सहज अखंड चंडता याकी, छमा विमल गुन की॥ भज०॥४॥ आपापर वेली सब ज्ञान दहन से, भली भववन की॥ शीतलता प्रगटी घट अंतर, उत्तम लच्छन की॥ भज०॥५॥ ठकुराई बन गन ते अधिकी, चरन करन घन की॥ ऋद्धि वृद्धि प्रगटे निज नामे, ख्याति अकिंचन की॥ भज०॥६॥ अनुभव जिनु गति कोऊन भने, अलख निरंजन की॥ ब्रह्म गुन गावत

प्रीती निबाहो, तिनके समरन कीं॥ अ०॥ ६॥

॥ पद सातमुं॥

॥ राग सारंग॥ भविजन लाग रह्यो परभाव में, टेक॥

सहज स्वभाव तजे नहिं अपनो, परियो मोह जंजाल में॥ भवि०॥ १॥ वंछे मोक्ष करे नहिं करनी, डोलत ममता वाडी में॥ यह अंध ज्युं जलनिधि तरवो, जेसे कांणे नाडी में॥ भवि०॥ २॥ अरति पिशाची परवश रहते, जिनहु न समरयो आडी में॥ आप जयाय सकत नहिं मूरख, घोर विषय के धाडी में॥ भवि०॥ ३॥ पूर्व पुण्य धन सब नहिं खसत हे, रहत न मूल जबाडी में॥ तामें तुज कैसे बनी आवे, नय व्यवहार के दाडी में॥ भवि०॥ ४॥ जस कहे अब मेरो मन लीनो, श्री जिनवर के पाडी में॥ याहि कल्यान सिद्धि को कारन, ज्युं वेधक रस जाडी में॥ भवि०॥ ५॥ इति॥

॥ पद आठमुं॥

॥राग जिंजोटी॥ मेरे साहिब तुमहि हो, श्री
पास जिणंद॥ खिजमतगार गरीब हुं, मे तेरा बंद
॥मेरा०॥१॥ मैं चकोर करूं चाकरी, जब तुमहि
चंद॥ चक्रवाक मैं हुइ रहों, जब तुमहि दिणंद॥
मेरे०॥२॥ मधुकर परे मैं रन झनुं, जब तुम अर
विंद॥ भक्ति करो खग पति परे, जब तुमहि गो
विंद॥ मेरे०॥३॥ तुम जब गार्जित घन भये, त
ब मैं शिखि नंद॥ तुम सायर जब मैं तदा, सुर
सरिता अमंद॥ मेरे०॥४॥ दूर करो दादा पासजी
भव दुःख फंद॥ वाचक जश कहे दास कुं, दियो प
रमानंद॥ मेरे०॥५॥ इति॥

॥पद नवमुं॥

॥राग सामेरी॥ मेरे प्रभु सुं प्रगट्यो पूरन राग
॥टेक॥ जिन गुन चंद किरनसुं उमग्यो, सहज समुद्र
अथाग॥ मेरे०॥१॥ ध्याता ध्येय भये दोउ एकु,

मिट्यो नेहको दाग॥ कूल बिदारी चले जल सरि
ता, तब नहिं रहत तडाग॥ मेरे०॥२॥ पूरन मन
सब पूरन दीसे, नहिं दुबिधाको लाग॥ पाउं चल
त पनही जो पहिरे, नहिं तस कंटक लाग॥ मेरे०॥
३॥ भयो प्रेम लोकोत्तर झूठो, लोक बंधको ताग॥
कहो कोउ कछु हमतो न रुचे, छुरि एक वीतराग॥
मेरे०॥४॥ वासत है जिनगुन मुझ दिलकुं, जैसो
सुरतरु बाग॥ और वासना लगे न ताते, जस कहे
तुं बड भाग॥ मेरे०॥५॥ इति॥

॥पद दशमुं॥

॥राग गोडसारंग तथा पूर्वी॥ पसारी करलीजे,
ईक्षुरस भगवान॥ चढत सिखा श्रेयंस कुमरकी,
मानु निरमल ध्यान॥ पसारी०॥ धारे करमें पुरुषो
त्तम करकी गंगा, तुं तो चरन निधान॥ इत गंगा
अंजर तरनकुं, मानुं चली असमान॥ पसारी०

॥३॥ किधौ विधु बिंब सुधासूं चाहत, आप मधुर ता मान॥ किधौं दायक की पुण्य परंपर, दर्सत सुर ग विमान॥ पसारी०॥४॥ अलुकर ए सुरस हैजी क रत है, ऐसी उपमा जान॥ भरा कहै चित चित पा त्र मिलावें, युं लवि कुं जिन ज्ञान॥ पसारी॥५॥ इति

॥ पद इग्यारमुं॥

॥ राग अडाणो ॥ शीतल जिन मोहि प्यारा॥ टेक ॥ भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउके जिउ हमारा॥ शीतल०॥१॥ ज्योति शुं ज्योत मिलत जब ध्यावें, होवत नहि तब न्यारा॥ बांधी मूठी खुले जब माया, मिटे महा भ्रम भारा॥ शीतल०॥ २॥ तुम न्यारे तब सब ही न्यारा, अंतर कुटुंब उदा रा॥ तुमही नजिक नजिक है सबही, ऋद्धि अनंत अपारा॥ शीतल०॥ ३॥ विषय जगन की अगनि बू झवत, तुम गुन अनुभव धारा॥ भई मगनता

तुमगुनरसकी, कुन कंचन कुनधारा॥ शीतल०॥
४॥शीतलता गुनहोर करत तुम, चंदन काहु बि
चारा॥नामेहीं तुम ताप हरतहे, वाकुं घसत घसारा
॥शीतल०॥५॥ करहु कष्ट जन अद्भुत हमारे, नाम
तिहारो आधारा॥ जस कहे जनम मरण भय भा
गो, तुम नामे भवपारा॥शीतल०॥६॥इति॥

॥पद अगारमुं॥

॥राग वेलावल॥ प्रभु तेरो वचन सुन्यो जब
हीयें सुविहान॥टेक॥ तबहीथें तत्व दाख्यो, चाख्यो
रस ध्यान॥ भाग्यना लीजे जगी, मानुं कीधो सु
धापान॥प्रभु तेरो०॥१॥ श्रुत चिंता ज्ञान होतो,
खीरनीर वान॥ विषय तृष्णा बुझावे, सो हि सा
थो ज्ञान॥ प्रभु तेरो०॥२॥ गायन करत तातें, ना
हे धरे आन॥ तेसें हि करत मोहि, संत गुन ध्यान
॥प्रभु तेरो०॥३॥ प्रानतें अधिक साहि, कैसे कहुं

प्रानाप्रानथी अभिन्न दाख्यो, प्रत्यक्ष प्रमाना
प्रभु तेरो राया भिन्न ने अभिन्न कछु, स्याद्वा
दें याना ब्रह्म कहे तुहैं तुहैं, तुहै जिनभाना प्रणाम

॥पद तेरमुं॥

॥राग परजा॥ चेतन राह चले उलटे ॥टेक॥ न
ख शिख लो बंधन मां जेह, कुगुरु वचन गुलटे॥
चेतनराया विषय विपाक भोग सुख कारन,
छिनमें तुम पल रोगा चाखी छोर सुधारस स
मता, भवभव विषय घरे चेतनराया भयो
दधि भिचरहे तुम जैसे, आवन नाहिं तटे॥ कि
हां तिमिंगल घोर रहतु है, चार कषाय करे॥ चेत
नराउा व रविलास वनिता नयनके पड़े पारस पर
टे॥ अख परवश भोगे किहा भजोगे, झाले
मोह भरे॥ चेतनराया मन मेले भे किरिया
कीनी, ठगे लोक कपटे॥ उनकुं कुलखि नु भेख

मिटेगो, तुमकुं नांहि रटे॥ चेतन०॥२॥ सीख
सुनी अब रहो सुगुरुके, चरण कमल निकटे॥
चुकरते तुम सुजस लहोगे, तत्व ज्ञान प्रगटे॥
चेतन०॥३॥ इति॥

॥पद चौदमुं॥

॥राग नायकी कानडो॥ चेतन ममता छांडप
रीरी दूर परीरी॥ चेतन०॥टेक॥ पर रमनीसुं
प्रेम न कीजे, आदरी समता आप वरीरी॥
चेतन०॥१॥ ममता मोह चंडालकी बेटी, स
मता संयम नृप कुमरीरी॥ ममता मुख दुर्ग
ध असत्यें, समता सत्य सुगंध भरीरी॥ चे
तन०॥२॥ ममतासें लरते दिन जावे, समता
नहिं कोउसाथ लरीरी, ममता हेतु बहुत है दुश्म
न, समताके कोउ न अरीरी॥ चेतन०॥३॥
ममताकी दुर्मति है आली, डाकिनी जगत अनर्थ

करीरी॥ समता की शुद्ध मति है आली, पर उपगार
गुणे समरीरी॥ चेतन०॥३॥ ममता पुत्त भये कुल
जंपन, शोक बियोग महा मत्सरीरी॥ समता सु
त होवेगे केवल, रहे दिव्य निशान घुरीरीरी॥ चेतन०॥
॥४॥ समता मग्न रहे भी चेतन, भी ज्ञे धारे शी
खजरीरी॥ सुज्ञान विलास लहेगो तोतुं, चिदानंद
घन पद्व वियरीरी॥ चेतन०॥५॥ इति॥

॥पद पन्नरमुं॥

॥राग नायकी कानडो॥ योगति कौन है सखी तो
री कौन है सखी तोरी॥ टेक॥ इत उत युंही फिरत
है घहेली, कंत गयो चित चोरी॥ योगति०॥१॥
चितवत है बिरहानल ज्युंअवत, सिंच नयन
जल भोरी॥ जानत है पीउंहै अज्ञान, ज्ञान
भ्यो पिंहु जोरी॥ योगति०॥२॥ चल गिर आ
र पिया दिखलावुं, नेह निभावन घोरी॥ दृलिमि

लि सुगति सो होतमें जैसे, भजनमें ज्ञानध्यान मेरी॥ यागति॥ ३॥ इति॥

॥ पद शोलमुं॥

॥ राग सारंग॥ हम मगन भये प्रभु ध्यानमें, टेक॥ बिसर गई दुविधा तन मनकी, अचिरा सुत गुन ज्ञानमें॥ हम॥ १॥ हरिहर ब्रह्म पुरंदरकी ऋद्धि आवत नांहि कोउ मानमें॥ चिदानंदकी मौज मची है, समता रसके पानमें॥ हम॥ २॥ इतने दिन तुं नांहि पिछान्यो मेरो, जन्म गमायो अजानमें॥ अब तो अधिकारी होई बैठे, प्रभु गुन अखय खजानमें॥ हम॥ ३॥ गई दीनता सबही हमारी, प्रभु तुज समकित दानमें॥ प्रभु गुन अनुभवके रस आगें, आवत नहि कोउ ध्यानमें॥ हम॥ ४॥ जिनहि पाया तिनहि छिपाया, न कहे कोउके कानमें॥ ताली लागी जब

अनुभवकी, तज अने होठी ज्ञानमें ।। हम० ।।४।।
प्रभुगुन अनुभव चंद्रहास्य ज्यों, सो तो न रहे म्यानमें ।। वाचक जश कहे मोह महा अरि, जीत लीयो है मेदानमें ।। हम० ।।५।। इति

।।पद सत्तरमुं।।

।।राग काफी।। देखत ही चित्त चोर लीयो है, देखत ही चित्त चोर लीयो ।।सामको नाम इथे मोहि अहनिस, साम बिना कहा काज भयो ।। देखतही० ।।टेक।। सिध्यवधूके लीजे मुज छोरी, पशुअनके सिर दोष दीयो ।।१।। परकी पीर न जाने तासों, वैर बसायो जे नेह कीयो ।। देखतही० ।।२।। प्रान धर्इमें प्रान पिया बिन, वज्र हृथें मोहि कठिन कियो ।। जस प्रभु नेमि मिले दुःख डार्यो, राजुल शिव सुख अमृत पियो ।। देखतही० ।।३।। इति ।।

॥पद अठारमुं॥

॥राग कल्याण॥ सुने प्रभु मेरे, अंतरीक प्रभु मेरे॥ सु०॥ टेक॥ जगत वच्छल हित दाई, सु०॥ मोह चोर जब जोर किरावत, तब समर्यो प्रभु मेरे॥ सु०॥१॥ और सबाई चार दिवस के, साथ सखा प्रभु जेठा॥ इतनो आप विवेक विचारो, माया में मत लेरो॥ सु०॥२॥ भामण्डे तो भूजन भांगे, जिनुं भोजन गये पेटा॥ भगवंत भक्ति बिना सवि निष्फल, जस कहे भक्ति में मेरे॥ सु०॥३॥ इति॥

॥पद ओगणीशमुं॥

॥राग धन्याश्री॥ जिन चरन सरन ग्रहुं॥ टेक॥ हृदय कमल में ध्यान धरतुहे, सिर तुज आण वहुं॥ जिन०॥१॥ तुज सम जोल्यो देव खलकमें, पैख्यें नांहि कहुं॥ तेरे गुन की जपुं जप माला, अ

हविसि पाप हरुं॥ जिन०॥२॥ मेरे मनकी तु
म सब जानो, क्या मुज अकुत कहुं, कहे जस वि
नय करो तुम साहिब॥ ज्युं भव दुःख न सहुं॥
जिन०॥३॥इति॥

॥पदछवीशमुं॥

॥राग जयजयवंती॥ अजब बनी हे जो
री, अर्धंग धरी हे गोरी॥ शंकर शंक हि छोरी,
गंग सिर धरी हे॥ अ०॥१॥ प्रेमके पीवत प्याले, होत
महा मतवाले, न चलत तिहूं पाले, असवा
री जरी हे॥ अ०॥२॥ ज्ञानीको ऐसो उ
त्साह, समताके गले बांह, सिरपर जगनाह,
ध्यान सुर सरी हे॥ अ०॥३॥ लोकके प्रवाह नां
हि, सुजस विलास मांहि, चिदानंद घन छां
हि, इति अनुसरी हे॥ अ०॥४॥इति॥

॥पदअडवीशमुं॥

॥राग ऊपर प्रमाणे॥ धर्म के विलास वास,
ज्ञान के महा प्रकास, होत भगवंत के उल्हास भा
व लगे हैं॥ समता नदी तरंग, अंग ही उपंग यं
ग, मज्जन प्रसंग रंग, अंग भग भगे हैं॥धर्म०॥
१॥ कर्म के संग्राम घोर, लरे महा मोह चोर, भ
रता को तोरवें कु, सावधान भगे हैं॥ शील को ध
री सनाह, धनुष महा उत्साह, ज्ञान बान के प्र
वाह, सब वैरी भगे हैं॥धर्म०॥२॥ आयो है प्रथ
म सेन, काम को गयो है रेन, हरि हर ब्रह्म जेणे,
ऐक से ने ठगे हैं, क्रोध मान माया लोभ, सुभट
महा अजोभ, हारे सोय छोड थोभ, मुख दई भ
गे हैं॥धर्म०॥३॥ नो कषाय भये खीन, आपको
प्रताप हीन, और भट भये दीन, ताके पग ड
गे हैं॥ कोउ नहीं रहे ठाढे, कर्म भेमिले लेगा
ढे, चरन के निहार काढे, करयास नगे हैं॥धर्म०॥

मा जगत्रय भयो प्रताप, तपत अधिक ताप, ता
तें नाहिं रही याप, अरी तन तजे हैं।। सुजस निसा
नसाज, विजय वधार्थ साज, ऐसे मुनिराज, ताकुं
हम पाय लगे हैं।। धर्म०।।५८।।

।।पद छवीशमुं।।

।।राग रामकली।। ऋषभ देव हित कारी, जग
तगुरु ऋषभ देव हितकारी।।टेक।। प्रथम तीर्थंकर
प्रथम नरेसर, प्रथम यति ब्रह्मचारी।। ऋषभ
देव०।।१।। बरसी दान देई तुम जगमें, ईसति भी
ति निवारी।। तैसी काही करतु नांही करुना सा
हिब मेर हमारी।। ऋषभ०।।२।। मांगत नहिं हम
हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी।। दियो मोहि च
रन कमलकी सेवा, याहि लगत मोहि प्यारी।। ऋष
भ०।।३।। भवलीला वासित सुर डारे, तुं पर सब
ही वारी।। मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आ

॥ सिरधारी॥ ऋषभ०॥ ४॥ ऐसो साहिब नहिं कोउ जगमें, यासुं होय दिलधारी॥ दिलहि दलास प्रेमके बिचे, तिहां हठ ऐंचे गमारी ॥ ऋषभ०॥ ५॥ तुम ही साहिब मैं हुं बंदा, या मत दो बिसारी॥ श्री नयविजय विबुध सेवक के, तुम हो परम उपकारी॥ ऋषभ०॥ ६॥

॥ पद त्रेवीशमुं॥

॥ राग बेलावल॥ गौतम गणधर नमि येंहो अहनिसि, गौतम गणधर नमियेंहो॥ टेक॥ नाम जपत नवही निधि पईयें, मनवंछित सुख लहियें हो॥ अह०॥ १॥ घर अंगन मे सुरतरु फलियो, कहा भव जन भमियें॥ सरस सुरभि घृत मे हुवे घरमें, तो क्यों तेल नमियेंहो॥ अह०॥ २॥ तैसी श्री गौतम गुरु सेवा, और ठोर क्युं रमियें॥ गौतम ना

में नयनस तरियें, कहा प्रकृत तनु दमियें॥ज
हगा०॥३॥गुन अनंत गौतमके समरन, मिथ्या
मति विष गमियें॥जसकहे गौतम गुनरस आ
गें, ईंधन नहें हम अमियें॥जहगा०॥४॥इति॥

॥पद चोवीशमुं॥

॥राग नट॥ सुखदाई रे सुखदाई, दादो पास
ल सुखदाई॥ ऐसो साहिब नहिं कोउ जग
में, सेवा कीजें दील लाई॥ सुखदा०॥१॥ सब
सुखदाई एहनि नायक, जेहि सायक सुरसहा
ई॥ किंकरकुं करे शंकर सरिसो, आपे अपनी
ठकुराई॥ सुखदा०॥२॥ मंगलरंग वधे प्रभु ध्या
नें, पापवेली जरजे करमाई॥ सीतलता प्रग
टे घट अंतर, मिटे मोहकी गरमाई॥ सुखदा०
॥३॥ कहा कहूं सुरतरु चिंतामनिकुं, जे में प्रभु
सेवा पाई॥ श्री नयविजय कहे दर्शन देज्यो॥

घर अंगन नवनिधि आवें॥ सुजना॥४॥ इति

॥पद पचीसमुं॥

॥राग देशाख॥ अजमें सांयो साहिब पायो, टेक॥ याकी सेव करत हुं याकुं, मुझ मन प्रेम सुहायो॥ अजना॥१॥ ठाकुर और न होवे अपनो, जे दीजे घर मायो॥ संपति अपनी खिणुं में देवे, वे तो दिलमें ध्यायो॥ अजना॥२॥ औरन की लगन करत याकरी, दूर देश पाय धासे॥ अंतर यामी ध्यान दीशे, वे तो अपने पासें॥ अजना॥३॥ और कुल कुं कोडि कारन को खो, अद्भुत उपायन तूसे॥ चिदानंद में मगन रहतु हे, वे तो कबहुं न रूसे॥ अजना॥४॥ औरन की चिंता चिंती न मिटे, सब दिन धंधे लवे॥ थिरता गुन पूरन सुख खेले, वे तो अपने भावें॥ अजना॥५॥ पर परधी नहलो

ग औरको, अतें होत वियोगी॥ सदा सिद्ध स
मताई विलासी, वेतो निज गुन भोगी॥ अ
जग डाल्यौं अनोत्यौं सुगति न अनो, मैतो
सेवक ठीनको॥ पक्ष पातती परसुं होवे, राग
धरतहुं गुनको॥ अजग॥ आत्माव अंको सज
ज्ञानीको, मूरख भेद न भावे॥ अपनो साहि
ज अने पहियाने, सो भ्रम लीला पावे॥ अग॥८

॥पद छवीशमुं॥

॥राग भूप कल्याण॥ सयनकी नयनकी
जयनकी छबी नीकी॥ मयनकी गोरी तकी छगी सोहि
अंखियां॥ मनकी लगन भर अंग नीय ला
गे अली, डलन परत कछु कहा कहुं अलीयां॥
सयनकी॥१॥ मोहन मनाठी मानी, कहाज
नी रति छानी, शिया देवी के नंदन माने.
विनतियां॥ गुन गहो भ्रस जहो धर रहो सुम

लहो, बुधजन मो मुज समो रंग रमो रतियां।।
सयन कीना रा।।२६ति।।

।।पद सत्तावीसमुं।।

।।राग ऊझीझुशेनी।। साहिब ध्याया म
न मोहना, अति सोहना भवि जोहना।।स
हिब०।। टेक।। आजतें दिन सफल मेरे,
मानुं चिंतामनी पाया।। साहिब०।।१।।सो
सहद्रि मिलिय पूज्यो, इंद्रानी गुन गाया।।
साहिब०।।२।। जनम महोच्छव करे देव, मे
रु शिखर ले आया।। हरिको मन संदेह ज
नी, चरनन मेरु चलाया।। साहिब०।।३।।
अहि वैताल रूप देवी, देवेंन वीर बोला
या।। अगर भये पाय लागी , वीरना
म जुलाया।। साहिब०।।४।। इन्द्र पूछे वीर
केहे, व्याकरन नीपाया।। मोहि थी निशा

ज धरन, युंहि वीर पठाया॥ साहिबजी॥४॥
वरसीदान देई धीर, लेई व्रत सुहाया॥ सा
लतले ध्यान ध्याता, घाती घन खपाया॥
साहिबजी॥५॥ लहि अनंत ज्ञान आप, रू
प जग भगाया॥ जस कहे हम सो ई वीर,
ज्योति सुं ज्योति मिलाया॥ साहिबजी॥६॥

॥पद अठ्ठावीशमुं॥

॥राग केदारो दरबारी॥ आवे हाथी हलसा
जगाजते, नेमकुं घर आवे, ए देशी॥ प्रभुज
ल देखी सुरराज, लाजतो ऐभजो लो॥ देखो
जल मांग्यो भ्रम सेरो, को नहि जग तुमतोले
॥प्रभु०॥१॥ टेक॥ चरन अगुरु ऊपित सुरंगि
रि, मानुं नाचत डोले॥ छन मिसि प्रभु मोहि
ऊपर तूठे, हरख हियाको खोले॥ प्रभु०॥
२॥ उरत शेष धर हरत महो दधि, त्यचलंगु

रभूगोलो॥ रिहिसि कुंभर छिमूछ भजे तज, सजहिं
भिजत जे कुरेलो॥ प्रभु०॥३॥ भीला जाल जजाल
पराक्रम, तीन भुवन धंधोलो॥ भस प्रभु वीर महेर
भजकीजें, भ कुरि कुन परिहु भोलो॥ प्रभु०॥४॥ इति

॥पद ओगणत्रीशमुं॥

॥राग ठीपर प्रमाणे॥ प्रभु धरी पीठ वेताल भा
ल, सात ताल लों वाधो॥ काल रूप विकराल भयंकर, ल
गत जंजर जाधो॥ प्रभु०॥१॥ टेक॥ भाल कहे को वीर ले
गयो, परिभन देव आराधो॥ तिल त्रिभाग चित्त वीर
न भोल्यो, जल अनंत कुन जाधो॥ प्रभु०॥२॥ बढत रहे
नांहि सुर भिषण, भनु मोहि विराधो॥ कुलिश कठिन
हढ मुष्टि मार्यो, संकु चित्त तनु मन छाधो॥ प्रभु०॥३॥
सुर कहे परतज मोहि नयो है, पानी रस विण जाधो॥
भसकहे ईंद्र प्रसंस्यो तैसो, तुंही वीर शिव साधो॥
प्रभु०॥४॥ इति॥

॥पदत्रीशमुं॥

॥राग श्रीराग॥ जग मोही ऐसी आय ब
नी ॥टेक॥ श्री संखेस्वर पास जिनेसर, मेरे तुं
एक धनी॥ जग०॥१॥ तुं जिनुं होय चिंतन सुहा
वे, आवे कोडि गुनी॥ मन मेरे तुज ऊपर रसिओ,
अलि जिम कमल भनी॥ जग०॥२॥ तुज नामे स
वि संकट दूरे, नागराज धरनी॥ नाम जपौं निसि
वासर तेरो, या सुख मुज करनी॥ जग०॥३॥ को
पानल ऊपजत दुर्जन, मथन वचन अरनी॥ ना
म जपुं जलधार तिहां तुज, धाइं दुःख हरनी॥ जग०
॥४॥ मिथ्या मति बहु जन है जगमां॥ मदन धरे ध
रनी, ऊनतें हम तुज भक्ति प्रभावे, भयनहें ए
कुनी॥ जग०॥५॥ सज्जन नयन सुधारस अंज
न, दुरजन रवि भरनी॥ तुज मूरत निरखे सो पा
वे, सुख जस लील घनी॥ जग०॥६॥ इति॥

॥पद एकत्रीशमुं॥

॥राग मल्हार॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजे एहनी सेव॥ मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेव॥ विमलाचल०॥ ए टेक॥
उज्वल जिनगृह मंडले, तिहां दीपे उत्तंग॥ मानु हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा॥ विमलाचल०॥१॥
कोई अनेरुं जग नहीं, तीरथ ए तोले॥ एम श्रीमुख आगले, श्री सीमंधर बोले॥ विमलाचल०॥२॥
जे सघलां तीरथ करे, यात्रा फल लहिये॥ तेहथी ए गिरि भेटतां, शत गुणुं फल लहिये॥ विमलाचल०॥३॥
जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे॥ विमलाचल०॥४॥ इति॥

॥पद बत्रीशमुं॥

॥राग देवगंधार॥ देखो माई अजब रूप जि

नवलको ॥ साहेब गाढ़का ठाकुर आगें और सजनको,
रूप लगे मोहि फीको ॥ साहेबो० ॥ २ ॥ जो घन कइला
अमृत कुचोले, मुख सोहे अति नीको ॥ छवि
नवल विनय करे यों साहिब, नेमजी त्रिभुव
नधनीको ॥ साहेबो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेतीसमुं ॥

॥ राग गुर्जरी पूर्वी ॥ आली रूप शाला ग
ले माला सोहे मोतनकी, करे नृत्य बाला गोरी
गोरी मिलि लोरी ॥ सी० ॥ देवर कुं रहि घेरी, सेवा
भानु करम केरी, गुन गाती आवे तेरी, करे चित
चोरी ॥ सी० ॥ विवाह मनावे आली, पहिरी दष
ण शाली, वाकुं निहाले आली, छोडी लाल होरी
॥ सी० ॥ तोली नेमि स्वामि, गजगामी नवलका
मी, नवल धामी, रहे अहि मौन ध्यान धारा व
ल छोरी ॥ सी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥पद चोत्रीशमुं॥

॥राग धन्याश्री॥ जब लग आवे नहिं मन ठाम॥रे ज्ञात जब लग कष्ट क्रिया सवि निष्फल, ज्यौं गगने चित्राम॥जब लग॥१॥करनी बिन तुं करे रे मोटाई, ब्रह्मव्रति तुझ नाम॥ आखर फल न लहेगो ज्यौं जग, व्यापारी बिनु दाम॥ जब लग॥२॥ मुंड मुंडावत सबहि गडरिया, हरिण रोझ वन धाम॥ जटाधार वट भस्म लगावत, रासभ सहतु है धाम॥जब लग॥३॥एते पर नहीं योगकी रचना, जो नहि मन विश्राम॥चित अंतर पर छलवेकुं चिंतवत, कहा जपत मुख राम॥जब लग॥४॥वचन काय गोपें दृढ न धरे, चित्त तुरंग लगाम॥ तामें तुं न लहे शिव साधन, ज्यौं कण सुने गाम॥जब लग॥५॥ पढो ज्ञान धरो संजम किरिया, न फिरावो मन

ठमा॥ चिदानंदघन सुजस विलासी, प्रगटे आ-
तमरामा॥ जसगा॥ ५॥ इति॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ चतुरनर सामायक नय धा-
रो॥ टेक॥ लोक प्रवाह छांडकर अपनी, परिण-
ति शुद्ध विचारो॥ चतुरनर०॥१॥ द्रव्यत अन्वय
अलंग आतमा, सामायक निज जातें॥ शुद्ध
रूप समता मय कहीये, संग्रह नयकी बातें॥
चतुरनर०॥२॥ अब व्यवहार कहे युं सजन्न,
सामायक हुई जावे॥ ताते आचरना सो माने
ऐसा नैगम गावे॥ चतुरनर०॥३॥ आचर-
ना रिजु सूत्र सिथलकी, बिनु उपयोग नमा-
ने॥ आचारी उपयोगी आतम, सो सामाय-
क माने॥ चतुरनर०॥४॥ शब्द कहे संजत ले
ऐसो, सो सामायक कहिये॥ चोथे गुणठाने

आचरना, उपयोगें शिव जब लहियें॥ चतुरन
र०॥५॥ अप्रमत्तठाणे चर्याको, समभिरूढ
नय साजी॥ केवल ज्ञान दशा थिति उनकी,
एवंभूते भाजी॥ चतुरनर०॥६॥ सामाय
क नय जे कुन जाने, सो कुछ कहेसो मानो॥ ज्ञान
वंतकी संगति नाहीं, रहियो प्रथम गुनठा
नो॥ चतुर०॥७॥ सामायक नय अंतर दृष्टे,
जे दिनदिन अभ्यासे॥ जग जसवाद लहे
सो बैठो, ज्ञानवंतके पासे॥ चतुरनर०॥८॥

॥ पद छत्रीशमुं॥

॥ राग बिहागडो॥ सजन या छाक मोह
मदिराकी॥ टेक॥ मिथ्या मतिके जोर गुरुकी,
वचनशक्ति जिहां थाकी॥ सजन०॥१॥ नि
ज दशा छोड जड उंघी, दृष्टि देतहे ताकी॥ न
करे किरिया जनकुं लाजे, नाहि भवथिति पाकी

॥ सजन० ॥२॥ ज्यान गत ज्यों जनको उछांडी,
इसत्तर विणि होरे ॥ ग्रहत ज्ञानकुं किरियात्या
गी, होत औरकी औरे ॥ सजन० ॥३॥ ज्ञा
नवात निसुनी सिर धूने, लागे निज मति
मीठी ॥ जे कोउ बोल कहे किरियाको, तो भा
ने नृप चीठी ॥ सजन० ॥४॥ ज्युं कोउ ताइज
लमें पेसी, हाथ पाउ न हलावे ॥ ज्ञान सेती
किरिया सब लागी, युं अपनो मत गावे ॥
सजन० ॥५॥ जैसे पाग कोउ सिर बांधे, पहि
रन नहिं लंगोटी ॥ सद्गुरु पास क्रिया बिनु
सीखे आगम जात त्युं खोटी ॥ सजन० ॥६॥
जैसे गज अपने सिर ऊपर, छार आपही डा
रे ॥ ज्ञान ग्रहत क्रिया तुछ्छारत, अल्प बु
द्धि इम हारे ॥ सजन० ॥७॥ ज्ञान क्रिया दोउ
शुद्ध धरेंगे, शुद्ध कहे निरधारी ॥ जस प्रताप

गुननिधि की भक्ति, जिनकी में बलिहारी॥
सवस०॥ २॥ इति॥

॥पदसउ बीशासुं॥

॥राग काफी भंगलो॥ चेतन अब मोहि
दर्शन दीजे॥ टेक॥ तुम दर्शन शिव सुख पा
मीजे, तुम दर्शन भव छीजे॥ चेतन०॥ १॥
तुम कारन तप संयम किरिया, कहो कहांलों
कीजे॥ तुम दर्शन बिनु सब या झूठी, अंतर
चित्त न भीजे॥ चेतन०॥ २॥ क्रिया मूढ मति
कहे जन कोई, ज्ञान और कुं प्यारो॥ मिलत
भाव रस दोउन चाखे, तुं दोनुं तें न्यारो॥
चेतन०॥ ३॥ सब में है और सब में नांही,
पूरन रूप अकेलो॥ आप स्वभावे केलि
रमतो, तुं गुरु अरु तुं चेलो॥ चेतन०॥ ४॥
अकल अलख प्रभु तुं सब रूपी, तुं अपनी

गति जिनेश॥ अगम रूप आगम अनुसारे, सेवक
सुजस बखानो चेतन॥५॥इति॥

॥पद अडत्रीशमुं॥

॥रागललीत पलासी॥राम चिरीया चेह
री हो॥ एदेशी॥मन कितहुं न लागे हेवेरे॥ मन०
॥टेक॥पूरन आस भई अब मेरी, अविनासी
की सेवेरे॥ मन०॥१॥अंग अंग सुनि पिउ गु
न हरखे, लागो रंग करेवेरे॥जैसो छिटायजो न
वि छूटे, करहु अनेर अनेर उपेरे॥ मन०॥२॥योग
अग्ना संजन नहिं निष्फल, तीर लगो ज्युं चेवेरे॥
जगतो नेह तिमिर मोहि त्यागो, पूरन ब्रह्म की
सेवेरे॥ सुजस ब्रह्म के तेवेरे॥ मन०॥३॥
इति॥

॥पद ओगणचालीशमुं॥

॥ राग सोरठी ॥ चिदानंद अविनासी हो, मे
रे चिदानंद अविनासी हो ॥ टेक ॥ कोर मरोर कर
मकी मेटे, सहज स्वभाव विलासी हो ॥ चिदानंद०
॥१॥ पुद्गल खेल मेल जो जगमें, सोतो सबहि वि
नासी हो ॥ पूरन गुन अध्यातम प्रगटे, जागे जो
ग उदासी हो ॥ चिदानंद० ॥२॥ नाम भेष किरिया
कुं सबही, देखे लोक तमासी हो ॥ चिन मूरत चेतन
गुन चिन्हे, साच्यो सोही सन्यासी हो ॥ चिदानंद०
॥३॥ दोरी दयाकी हिति दोरे, मति व्यवहार प्र
कासी हो ॥ अगम अगोचर निश्चय नयकी, दो
री अनंत अगासी हो ॥ चिदानंद० ॥४॥ नाना घ
टमें एक पिछाने, आतमराम उपासी हो ॥ भे
दजपना में जड भूल्यो, लुब्ध्यो तृष्णा दासी हो ॥
५ चिदानंद० ॥५॥ धर्म सिद्धि नव निधि
है घरमें, कहा ढूंढत जई कासी हो ॥ जस कहे शां

तसुधारस चाख्यो, पूरनब्रह्म अभ्यासी होय विहार॥

॥पद चालीशमुं॥

॥राग होरी॥ हरी नारी टोले मिलि रंग
हो होरी॥टेक॥ डगर मे नंदलाल रंग हो होरी
देवरकुं घेर रही॥ रंग हो॥१॥ व्याह मनावत ढोल
लाला॥ रंग०॥ था तान कुंसाज मृदंग सुं॥ रं
ग०॥ मधुर बजावत चंग लाला॥ रंग०॥ गये
जगुलाल नयन भरे॥ रंग०॥ अर्छन अजनवे
अनंग लाला॥ रंग०॥२॥ पिय डारी छोरे पी
या॥ रंग०॥ भरी भरी केसर नीर लाला॥ रंग०
॥ मानुं मदन करती छटा॥ रंग०॥ अलबेउडाये अं
जीर लाला॥ रंग०॥३॥ योवन मद मदिरा छा
डी॥ रंग०॥ गावत प्रेम धमाली लाला॥ रं
ग०॥ राचत माचत नाचती॥ रंग०॥ औ
तु सुंदरे आली लाला॥ रंग०॥४॥ सोहे मुनितं

जोलसुं॥ रंगण॥ भानु संध्या युत चंदलाल॥ रंगण॥
पूरित केसर कुंजेलसुं॥ रंगण॥ अरुत मेरु ज्युं कुंदला
ला॥ रंगण॥ पाथण जुज मूल हेमावती॥ रंगण॥ जा
ह लगावत कंठलाला॥ रंगण॥ कहे देव परनो पीयाप
रंगण॥ परना॥ जिन पुरुष उलंठलाला॥ रंगण॥ ५॥ दू
जमिलित रहे वेलीसुं॥ रंगण॥ सागर गंगा रंगला
ला॥ रंगण॥ जन ठगाने अजनवें॥ रंगण॥ किउं नक
रो त्रिया संगलाला॥ रंगण॥ ६॥ युं विलास करी
नारी के॥ रंगण॥ देखी घरे मनु मोन लाला॥ रंगण॥ स्त्री
शिशु सह कहनत जे॥ रंगण॥ करे चयन श्रम केंनला
ला॥ रंगण॥ टाजन के जने कहा जयो॥ रंगण॥ मनके ज
न्यो भमानलाला॥ रंगण॥ चतुरन चूके नेम जो॥ रंगण॥
पाजे सुजस कल्यानलाला॥ रंगण॥ ७॥ इति॥

॥ पद अेकुतालीशमुं॥

॥ जय जय जय जय पास जिणंद॥

दोहा ॥ अंतरीक प्रभु त्रिभुवन तारन, भविक
कमल उल्लास दिणंद ॥ जय० ॥ १ ॥ तेरे चरन
शरन में कीने, तु बिनु कुन तोरे भवफंद ॥ परमपु
रुष परमारथ दरशी, तुं दिये भविकुं परमानं
द ॥ जय० ॥ २ ॥ तुं नायक तुं शिवसुख दायक,
तुं हित चिंतक तुं सुखकंद ॥ तुं जनरंजन तुं भव
भंजन, तुं केवल कमला गोविंद ॥ जय० ॥ ३ ॥ को
टि देव मिलिके कर न सके, एक अंगुठ रूप प्रति
छंद ॥ ऐसो अद्भुत रूप तिहारो, बरषत मानुं
अमृत को बुंद ॥ जय० ॥ ४ ॥ मेरे मन मधुकर के
मोहन, तुम हो विमल सदल अरविंद ॥ जय
नयन चकोर विलास करत है, देखत तुम मुख पूरन
चंद ॥ जय० ॥ ५ ॥ दूर भये प्रभु तुम दरसनते, दुः
ख दोहग दालिद्र अघ द्वंद ॥ वाचक जस कहे स
हस फलतें तुम हो, जे बोले तुम गुनके वृंद ॥ जय० ॥

॥पद बेतालीशमुं॥

॥राग धन्याश्री॥ वामानंदन जगदानंदन, सेवकजन आसा विसरामा॥ नेक निजर करी मोहि पर निरखो, तुम हो करुना रस के धामा॥ वामा०॥१॥ देशकाल तनी भूमि प्रभु तुमही जान्यो, परिपरि बहुत बनाई मामा॥ अब कुमार गुन गान जगावत, लागत है क्युं तुमकुं दामा॥ वामा०॥२॥ अहनिसि ध्यान धरुं हुं तेरो, मुजथी न विसारुं तुम नाम॥ श्री नय विजय विबुध सेवक कहे, तुम हो मेरे आतम रामा॥ वामा०॥३॥

॥पद तेतालीशमुं॥

॥राग काफी॥ अजित देव मुज वालहा, ज्युं मोरा मेहा॥टेक॥ ज्युं मधुकर मन मालती, पंथी मन गेहा॥ अजित०॥१॥ मेरे मन तुंहि रुच्यो, प्रभु कंचन देहा॥ हरी हर ब्रह्म पुरंदरा, तुज आगें

केहा॥अजित०॥२॥ तुंही अगोचर को नहीं, सज्जन गुन केहा॥ चकोरताकुं चहियें, धरी धर्म सनेहा॥अजित०॥३॥ भक्ति वच्छल जगतारनो, तुं जिदेह धरेहा॥ वीतराग कुअे वा कहा॥ क्युं कर्म रीको छेहा॥अजित०॥४॥ जे जिनवर के भरतमें, अेरावत विदेहा॥ जस कहे तुज पद प्रणमतें, सब प्रणमें तेहा॥ अजित०॥५॥

॥पद चुमालीसमुं॥

॥राग गोडी॥ संभव जिन जब नयन मिल्यो हो॥टेक॥ प्रगटे पूरव पुन्य के अंकुर, तब तें दिन मोहि सफल वल्यो हो॥ संभव०॥१॥ अंगन में अमिये मेह वूठे, जन्म ताप को व्याप गल्यो हो॥ संभव०॥२॥ जैसी भक्ति तैसी प्रभु करुना, श्वेत संख में दुध मिल्यो हो॥ संभव०॥ डाउरत फिरत हे कुरही दीजतें, मोह मल्ल जि

एो जगधय छल्यो होा समकित रतन सेकु दरि
सणतें, अजन जहीं कुगति रल्यो होा सं
वगाम्रा नेह नजर जर निरखत ही मुझ, प्रभु
सुं हियडो हे ज हल्यो होा श्री नयविजय विबु
धसेवक कुंा साहिब सुरतरु होय फल्यो होा सं
भवगा पा छेति॥

॥पद पुसतालीसमुं॥

॥राग नटा प्रभुतें हियडो हे जहल्यो होा
रेसा याही सोला विहित तपस्या, कमलकर
तुंहे जलचारीा विधुंकेसरन गयो मुष आरिहे,
जनतें गगन हरिण हारीा प्रभुगा १॥ सह
जहि अंजन मंजुस निरिषत, षंजन गरव हि
ओडारी॥ छिन लहि हे चकोरकी सोला, अ
ग्नि जजे सो दुःषभारी॥ प्रभुतेंा २॥ चंचल
ता गुन लियो मीनको, अलिज्युं तारी हे का

री॥ कहुं सुभगता केती छबिनकी, मोहि सबहि
अमरनारी॥ प्रभु ते०॥३॥ घूमत है समता रस
पाने, जैसे गजवर मद भारी॥ तीन भुवन
में नहीं कोई छबिन को, अभिनंदन जिन अनु
कारी॥ प्रभु ते०॥४॥ मेरे मन तो तुमहि रुचत
है, परे कुन परकी लारी॥ तेरे नयनकी मेरे
नयनमें, जस कहे दीओ छबि अवतारी॥ प्र
भु ते०॥५॥ इति॥

॥पद छेतालीशमुं॥

॥राग माड॥ सुमतिनाथ सांचा हो॥ रे
का पर पर परखत हि भया, जैसा हीरा ज
च्या हो॥ ओर देव सवि परहरया, मैं जाणी
काच्या हो॥ सुमति०॥१॥ तेसी किरिया है जसी,
जैसी तु भावा हो॥ ओर देव सवि मोहे भ
रया, सवि मिथ्या माच्या हो॥ सुमति०॥२॥

चौरासी लखजोनमां, हुं बहु परनाच्याहो॥ सु
गति दान देई साहिबा, अब करहो ऊंच्याहो॥
सुमति०॥३॥ लागी अग्नि दुषरयकी, सब ठोर
ही आया हो॥ रक्षक जाणी आदर्या, मैं तुम शा
रन आया हो॥ सुमति०॥४॥ पक्षपात नहिं
कोउसुं, नहिं लालच लांच्याहो॥ श्री नयविज
य सु शिष्यको, तोसुं दिल रांच्या हो॥ सुमति०
॥५॥ इति॥

॥पद अडतालीशमुं॥

॥राग पूरवी॥ घडि घडि सांभरे सांई सलू
ना, घडि घडि०॥ टेक॥ पलक प्रभु छिन दिलसें
न विसरे, मानु कियो कछु गुन को दुना॥ दरस
न देखत ही सुख पाऊं, तो बिन होत हुं ऊला
दुना॥ घडि०॥१॥ प्रभु गुन ज्ञान ध्यान विधि
रचना, पान सोपारी काथा चूना॥ राग भयो

दिलमें आयोगे, रहे छिपाया छाना छूना॥ घडि०॥
२॥ प्रभु गुन चित्त जो ध्यो सजसाथे, तुन पेसे
लेई घर सुना॥ राग लग्या प्रभु सुं मोहि परग
ट, कहो नया ओछा कहो जूना॥ घडि०॥३॥ लोक
लाजसें जो चित चोरे, सोतो सहज विवेकही सू
ना॥ प्रभु गुन ध्यान बिगर भ्रम भूला, करे किरि
या सो रने रूना॥ घडि०॥४॥ मैं तो नेह कियो तो
हि साथे, अब निवाहतो तो यह हुना॥ जसक
हे तो जिन ओर न सेवुं, अमिय जाई कुन चाखे
लूना॥ घडि०॥५॥ इति॥

॥पद अडतालीसमुं॥

॥राग ईमन कल्याण॥ ऐसे स्वामी सुपा
र्श्वसें दिल लगा, दुःख भगा सुख जगा जगता
रणा॥ राज हंसकुं मान सरोवर, रेहेवा जल ज्युं
वारणा॥ ऐसे०॥१॥ मोर कुं मेह चकोरकुं

चंद, मधु मनमथ चित्त ठारना॥ फूल अमूल लम
रकी अंबही, कोकिलकुं सुख कारना॥ औसे०॥२॥
सीताकुं राम काम ज्युं रतिकुं, पंथीकुं घर बारना॥
धनीकुं त्याग याग ब्राह्मनकुं, योगीकुं संयम धारना॥
॥औसे०॥३॥नंदनवन ज्युं सुरकुं वल्लभ, न्यायीकुं
न्याय निहारना॥त्युं मेरे मन तुंहि सुहायो, और
तो चित्ततें उतारना॥ औसे०॥४॥श्री सुपार्श्व
दरिशन परतेरे, कीने कोडि उवारना॥ श्री नय
विजय विबुध सेवककुं, दियो समता रस पारना॥
औसे०॥५॥इति॥

॥पद ओगणपचाशमुं॥

॥राग रामश्री॥ श्री चंद्रप्रभ जिनराज राजे,
वदन पूनम चंदरे॥ भविक लोक चकोर निरखत,
लहे परमानंदरे॥ श्री चंद्रनाथ रे ॥१॥ महमहे
महिमा जसभर, सरस जस अरविंदरे॥

रण झणे कविजन मन रशिया, जाहि सुजस कुरंदेरा। श्री चंद्र०॥२॥ जस नामे होवत अघि हिये, रवे होहग दंदेरा॥ जसगुन कथा भव व्यथा भांजे, ध्यान शिवतइ कंदेरा॥ श्री चंद्र०॥३॥ विपुलहृदय विशाल भुजयुग, चलित चाल गयंदेरा॥ अतुल अतिशय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंदेरा॥ श्री चंद्र०॥४॥ मेंदास चाकर प्रभु तेरो, शीषव तुम करंदेरा॥ जसविजय वाचक धर्म विजय दासे सुजव इंदेरा॥ श्री चंद्र०॥५॥ इति॥

॥पद पचाशमुं॥

॥राग केदारो॥ मे कीनो नहीं तो बिन ओरसुं राग॥ टेक॥ दिनदिन वान चढ़े गुन तेरो, ज्युं कंचन पर भाग॥ ओरनमेंहे कषायकी कालिमा, सो क्युं सेवा लाग॥मे०॥१॥ राजहंस तुं मान सरोवर, ओर अशुचि रुचि काग॥ विषय भुजंगम गरुड तुं क

हियें, और विषय विषनाग॥मैं कीनो गाराग॥जो रहेय जगजीवन सरिखे, तुंतो समुद्र अथाग॥तुं सुरतरु जगवंछित पूरन, औरतो सुके साग॥मैं कीनो ॥३॥ तुं पुरुषोत्तम तुंहि निरंजन, तुंशंकर वडभाग॥ तुंब्रह्मा तुं बुद्धि महाबल, तुंहि देव वीतराग॥मैं कीनो॥४॥ सुविधिनाथ तुज गुन फूलनको, मेरो दिल है बाग॥जस कहे भमररसिक होई ताभें, लीजे भक्ति पराग॥मैं कीनो॥५॥

॥पद एकावनमुं॥

॥राग फागनी देशी॥ पापी कसाय पाताल कलशा जिहां, तृष्णा पवन प्रचंड॥जहु विकल्प कल्लोल चढतु है, आरति फेन उदंड॥१॥ भवसायर भीषण तारीयें हो, अहो मेरे ललना॥ पाशजी त्रिभुवन नाथ दिलमें, ए विनति धारियें हो॥अ०॥२॥ जरत उदाम काम वडवा

भव, परत सैल गिरी श्रृंग॥ फिरत व्यसन बहु
मगर तिमिंगल, करत है निमग उमंग॥ अ०॥३
॥ लभरी याके जिय भयंकर, उलटी गुलटी वा
याकरत प्रमाद पिशाच सहित बिहां, अविर
ति व्यंतरी नाचा॥ अ०॥४॥ गर्भित अरति कुर
ति रति पिशुरी, होत अहोत तोफान॥ लागति
चोर कुगुरु मालजारी, धरम बिहार निदान
॥ अ०॥ ५॥ सुरंग पारे अ बिठी अति भेरी, स
हस अठार शीलंग॥ धरम बिहार तिठीस
बकरी चलवो, बसके शिवपुर चंग॥ अ०॥६

॥ पद जावन मुं॥

॥ गुजरसियां मुज दीठडो मुब सुज आप
नोरे, भेल्यो भेल्यो वीर बिणंदरा॥ हवे मुज म
न मंदिर मां प्रभु आवी वसोरे, पामुं पामुं
परमानंद रे॥ कुणा॥ पा॥ पीठ अंध छेहां डीधो

समकित थंभनोरे, काढ्यो काढ्यो कचरो नें
भ्रांतिरे ॥ इहां अति ऊंच्या सोहे यतिधर्म थं
कुआरे, झूडी झूडी संवर भांतिरे ॥ कु० ॥ २ ॥ कर्म
विवर गोखे इहां मोति झुमखारे, झुले झुले थी
गुण आठरे ॥ चार भावना पंचाली अपछ
रारे, कोरी कोरी कोरणी काढरे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इहां
आवी समता राणी सुं प्रभु रमोरे, सारि सा
रि थिरता सेजरे ॥ जिम जश राखशो अखय
राजे आवशोरे, रंज्या रंज्या हियडा नी हे
जरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ चंचल अरज सुणी प्रभु मन
मंदिर आवियारे, आपे तुठा तुठा त्रिभुवन
भाणरे ॥ श्री नयविजय विबुध पय सेवक
भाणेरे, तेणे पाम्या पाम्या कोडि कल्याणरे ॥
कु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥

॥सज्जन राखत रीति भली, जिनु कार
न उपकारी उत्तम, अर्थ सफल मिलि॥ दुर्ज
नकी मन परिनति काली, जैसी होय गली॥
स०॥१॥ औरनको देखत गुन जगमें, दुर्ज
न भये जली॥ कुल पावे गुन गुनको ज्ञाता,
सज्जन हैज हली॥ स०॥२॥ ऊंच छीति पद
जैसे दुर्जन, अर्थ नांहिं जली॥ उपगृह
उपर जैसी भीनी, होत नहीं उजली॥ स०
॥३॥ विनय विवेक विचारत सज्जन, भर
कलाव भली॥ दोष लेश जो देखे कबहुं, या
ले चतुर रली॥ स०॥४॥ जगमें ऐसो स
ज्जन पायो, उनकी रीत भली॥ श्री नय
विजय सुगुरु सेवातें, सुज रस रंगरली
॥स०॥५॥ इति॥

॥पद चोपनमुं॥

॥आज आनंद भयो, प्रभुको दर्शन लह्यो, रोम रोम सीतल भयो, प्रभु चित्त आयो है॥ आ०॥ मन कुं ते धार्यो तो है, चलके आयो मन मोहै, चरण कमल तेरो मन में ठहरायो है॥ आ०॥ २॥ अकल अरूपी तुंही, अकल अमूरति योंही, निरंजन निरंजन तेरो, सुमति शुं मिलायो है॥ आ०॥ सुमति स्वरूप तेरो, रंग भयो एक अनेरो, यार्छे रंग आत्म प्रदेशो, सुरस रंगायो है॥ आ०॥ ३॥ इति॥

॥पद पंच्यावनमुं॥

॥ज्ञानादिक गुण तेरो, अनंत अपार अनेको॥ याही कीरत सुन मेरो, चित्त कुं लस गायो है॥ ज्ञा०॥ १॥ तेरो ग्यान तेरो ध्यान, तेरो नाम मेरो प्राण, कारण कारज सिध्यो, ध्याता ध्येय ठहरायो है॥ ज्ञा०॥ २॥ छूट गयो भ्रम मेरो,

दर्शन पायोमें तेरो॥ चरण कमल तेरो, सुजस
रंगायो है॥३॥॥३॥ इति॥

॥पद छपनमुं॥

॥जा॥ दजाहीसर ताजे, गुरु मेरो गच्छ रा
जे, पंच महाव्रत जहाज, सुधर्मा ज्युं सवायो
है॥जा॥१॥ मिथ्याको वडो प्रताप संग, जल
ज्युं ऊठत तुरंग, निरमल जैसो संग, समुद्र कहा
यो है॥जा॥२॥ सत्त समुद्र भर्यो, धरम पो
तता मे तर्यो, शील सुजान वालम, क्षमालं
गर डार्यो है॥ जा॥३॥ सहुड संतोष करी,
तपतो तपी छ्या भरी, ध्यान रंजक धरी, दत
गोला ज्ञान चलायो है॥जा॥४॥ ऐसो
जहाज क्रियाकाज, मुनिराज साजसजे,
दया मया मणि माणिक, ताहिमें भरायो
है॥जा॥५॥ पुण्य पवन आयो, सुजस

बहाल चलायो, प्राणजीवन ऐसो भाल, घरजेठ पायो होम्याणाडाढेतिा।

॥पद सत्तावनमुं॥

॥ऐरी आज आनंद भयो मेरे, तेरो मुखनिरख निरख रोम रोम शीतल भ यो अंगो अंग ॥ ऐणा सुध्य समकेल समता रस जलत, आनंद रंग भयो अनं तरंगा॥ ऐणा॥१॥ ऐसी आनंद दशा प्रग टी, चित्त अंतर ताको प्रभाव चलत निर मल, गंग याहीं गंगा॥ समता दोठी मिल रहे, ब्रस विलय जलत ताके संगा॥ ऐणा॥२॥

॥पद अट्ठावनमुं॥

॥भले हेजे वीतरागने, सोसो होशे वीरारे॥ जिन हेजे होसे नहीं कोई, कोई होजे अधीरारे॥ भेणा॥१॥ समय ऐक्र घ

नहीं धरसी, जे सुख दुःखकी पीडा रे॥ तुं
क्युं सोच करे मन मूडा, होवे वज्र जे हीरा
रे॥ जे०॥२॥ लगे न तीर कमान बान ज्युं
मारी सके नहीं मिरारे॥ तुं संभार पुरुष बले
अपनो, सुख अनंत तो पीरारे॥ जे०॥३॥
नयन ध्यान धरो वा प्रभुको, जे टारे भव
भीरारे॥ सब सचेतन धरम निज अप
नो, जे तारे भवतीरारे॥ जे०॥४॥ इति॥

॥पद ३७॥ राग साढमुं॥

॥ दुर्जन जिनुं जीवित जैसे प्रेत, मलिन
मंदमति डोलत घर घर, उदर भरनके हेत॥
॥दु०॥१॥ कुमुख वचन जल्पत नित निंदा, स
ज्जन सकल दुःख देत॥ कबहुं पापको पा
वत पैसो, गाढे धुरीमें देत॥ दु०॥२॥ गुरु
ब्राह्मण अच्युत जन सज्जन, जातन कुं ध

ए॥ निचेता॥ सेवा नहीं प्रभु तेरी करजकुं, भु
वन नीलको जेत॥ भ॥ ३॥ कथे नहीं गुन
गीत सुजस प्रभु, साधन देव अनेत॥ रसना
रस विगारो काहे जो, जुडत कुटुंब समेत
॥ भ॥ ४॥ इति॥

॥ पद रसाठ मुं ॥

॥ प्रभु तेरो गुन ज्ञान, करत महा मुनि
ध्यान, समरत जाको नाम, हृदे में समायो
हो॥ प्रभु॥ १॥ या मन मंजन कर लायो, सुध्य
समकित ठहरायो, वचन काय स मनयो, जे
से प्रभु कुं ध्यायो हो॥ प्र॥ २॥ ध्यायो सही
पायो रस, अनुभव भयो लस, मिट
गयो भ्रमको रस, ध्याता ध्येय समायो
हो॥ प्र॥ ३॥ प्रगट भयो महा प्रकास,
ज्ञानको महा विलास, जैसो मुनिराज ताज

रस प्रभु छायो है॥ प्रणाम॥

॥ पद अेकसठमुं ॥

॥ राग कनडो ॥ अे परम ब्रह्म परमेस्वर, परमआनंद मयि सोहायो॥ जे परतापकी सुख संपत्ती बरनीन जात मोपें, ता सुख अलख कहायो॥ अे०॥१॥ ता सुख ग्रहवेकुं मुनि मन खोजत, मन मंजन कर ध्यायो॥ मन मंजरी भई प्रफुल्लीत दसा लई, तापर भमर लोभायो॥ अे०॥२॥ भमर अनुभव भयो, प्रभु गुन बास लह्यो॥ चरन करन तेरो, अंबज लजायो॥ अेसी दसा होत जब, परम पुरुषतब, पकर तपास पठायो॥ अे०॥३॥ आतम सुरस भयो, अंतरंग आनंद लह्यो, रोमरोम सीतल भयो, परमात्म पायो॥ अकल स्वरूप भूप, कोन परखत रूप, सुरस प्रभु चित लायो॥ अे०

॥पद बासठमुं॥

॥राग धुपद॥ कैसे देत कर्मनकुं दोस, म
ननि वहे वेहे आपु भूलो॥ यह राग अरु दोष॥
टे०॥ विषयके रस आप भूलो, पापसो तनठो
स टे०॥१॥ देवधर्मगुरुकी करी निंदा, मिथ्याम
तके भेस॥ टे०॥२॥ कुल उदय आये नरकपद
वी, भोगे केउ संग॥ टे०॥३॥ किये आपुं
कर्म भुगतें, अब कहा करो सोस॥ टे०॥४॥ दुः
खतो बहु काल वीत्यो, कहूं न सुख लव ओ
स॥ टे०॥५॥ क्रोध मान माया लोभ, ब
स्यो तन घर ठोस॥ टे०॥६॥ चेत चेतन पाय
सुजस, मुगति पंथसो पोस॥ टे०॥७॥ इति॥

॥पद त्रेसठमुं॥

॥राग गोडी सारंग॥ तुह्मारे शिर राजत
अलक जटा, छारये मानुं गयल न छारत॥

सीस सणगार धरा॥ तुह्मारे०॥४॥ किधुं गंगा
अमरीस सुर सेवत, यमुना ढीलय तरा॥
गिरिवर सिखरें जेह अनोपम, ऊंनत मे
घ घटा॥ तुमारा॥५॥ केसे जाल जगे लपि लप
जल, तारत अति विकटा॥ हरि कहे जस प्रभु
अघ लरणो ये, हमहिं अति ढीमटा॥ तु०॥६॥

॥पद चोसठमुं॥

॥राग बिहाग॥ माया कारमी रे, माया म
करो चतुर सुजाण॥ माया वाह्यो जगत वलुध्यो,
दुःखियो थाय अजान॥ जे नर मायायें मोहि
रह्यो, तेने सुपनें नहीं सुख ठाम॥ माया०॥१॥
न्हाना मोटा नरने माया, नारी ने अध के
री॥ वली विशेषें अधिकी माया, गरढा ने
अनेरी॥ माया०॥२॥ माया कामण माया
मोहन, माया जग धूतारी॥ मायाथी मन

सहु नुं चलीयुं, खोली ने जहु प्यारी॥ माया०॥
३॥ माया कारन देश देशांतर, अटवी वनमां
जाय॥ ञ्हाजेसीने द्वीप द्वीपांतरें, ञ्ई शा
यर ञंपलाय॥ माया०॥ ४॥ माया मेली करी
बहु लेसी, लोभे लक्षण जाय॥ भयथी धन
धरती मां गाडे, ऊपर विसहर थाय॥ माया॥
०॥ ५॥ योगी ञति तपसी सन्यासी, नग्न थ
ई परवरिया॥ ऊंधे मस्तक ञ्ग्नि तापें, मा
याथी नही गरिया॥ माया०॥ ६॥ शिवभूति
सरिखो सत्यवादी, सत्य घोष कहेवाया॥ र
त्न देखी तेनुं मन चलियुं, मरीने दुर्गति जा
य॥ माया०॥ ७॥ लोभ घरन मायायें पाडि
यो, पडियो समुद्र मोझार॥ मुठ माछनीयो
थईने मरियो, पोतो नरक मोझार॥ ८॥ मा
या०॥ ९॥ मन वचन कायायें माया, मूकी

वनमां ध्याया घनघन ते मुनिश्वर राया, दे
वगांधर्व जस गाया॥ माया० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पांशठमुं ॥

॥ कज घर चेतन आवेंगें मेरा॥ कज घर चेतन
आवेंगे॥ रे० ॥ ए आंकणी ॥ रि लेवुं जलैया बार बार॥
मेरे कज०॥ रेन दीना मानुं ध्यानतुं साद्धा, कज
हुं के दरस देखावेंगे॥ मेरे कज०॥१॥ विरह दीवानी
फिरुं दुंढती, पीछि पीछि करके पोकारेंगे॥ पिछ ल
य मले ममतासें, काल अनंत गमावेंगे॥ मेरे क
ज०॥२॥ कड एक उपायमें गिरीम, अनुलव मि
त्र जो आवेंगे॥ जाय उपाय करके अनुलव, ना
थ मेरा समजावेंगे॥ मेरे कज०॥३॥ अनुलव मि
त्र कहे सुनो साहेब, अरज एक अवधारेंगे॥ म
मता त्याग समता घर अपनो, वेगें जाय मना
वेंगे॥ मेरे कज०॥४॥ अनुलव चेतन मित्र मिले

होळी, सुमति निशान घुरावेंगे॥ विलसत
सुख जस लीलामें, अनुभव प्रीति जगावेंगे
॥मेरे०॥७॥पा॥ इति॥

॥पद६३॥ राग मुं॥

॥राग मोतीडानी देशी॥ सूरत मंडन पा
स जिणंदा, अरज सुणो टालो दुःख दंदा॥सा
हेजा रंगीला हमारा, मोहना रंगीला॥ तुंसा
हेज कुंछु तुज जंदा, प्रीति जनी जैसी कैरव
चंदा॥सा०॥१॥ तुज सुं नेह नहीं मुज काच्यो,
घणहीन लाजे हीरो जाच्यो॥सा०॥२॥ दाननें
ढांई विमासो, लागे मुज मन अहलमासो॥सा०
॥३॥ जे उलगाते केड न छोडे, दीयो वंछित
सेवक करजोडे॥सा०॥४॥ अजय जनम तुज न
वी पूरे, हाथ चडीतो सुं नवी छूटे॥सा०॥५॥
जो जिन मनमां आवी छाजो, तो पण निज

जाणीहित राजो॥सा०॥ जेणे दीधुंछे तेहज
देशे, सेवा करशो ते फल लेशो॥सा०॥४॥ चे
नु रूप आराम स्वभावे, देतां देतां संपत्ती
पावे॥सा०॥ तिम मुजने तमो जे गुण देशो,
तो जगमा जस अधिक थहेशो॥सा०॥५॥
अधिकुं ओछुं किशुं रे कहावो, जिमतिम से
वक चित्त मनावो॥सा०॥ माग्या विण तो
माय न पिरसे, जे ऊपजाणो सायो किसे
॥सा०॥६॥ इम जाणीने वीनती कीजे,
मोहनगारा मुजरो लीजे॥सा०॥ वाचक ज
स कहे जमियें आसंगो, दियो शिव सुख
वरी अविहड रंगो॥सा०॥७॥ इति॥

॥पद सडशठमुं॥

॥राग आशावरी॥ चेतन मोहको संग निवारो,
ग्यान सुधारस धारो॥चे०॥१॥ मोह महातम म

अंकूरे रे, धरे सुमति परकास॥ मुक्ति पंथ परगट
करे रे, दीपक ज्ञान विलास॥ चे०॥२॥ ज्ञानी ज्ञान
मगन रहे रे, रागादिक मल खोय॥ चित्त उदास
करनी करे रे, कर्म बंध नहिं होय॥ चे०॥३॥ लीन भ
यो व्यवहार में रे, युक्ति न उपजे कोय॥ दीन भयो
प्रभु पद जपे रे, मुक्ति कहां सु होय॥ चे०॥४॥ प्र
भु समरो पूजो पढो रे, करो विविध व्यवहार॥ मो
क्ष स्वरूपी आतमा रे, ज्ञान गम्य निरधार॥ चे
॥५॥ ज्ञान कला घट घट बसे रे, जोग जुगति के पा
र॥ निज निज कला उद्योत करे रे, मुक्ति होय
संसार॥ चे०॥६॥ बहु विध क्रिया कलेससुं रे,
शिव पद नहिं कोय॥ ज्ञान कला परकाससों, स
हज मोक्ष पद होय॥ चे०॥७॥ अनुभव चिंताम
णि रतन, जाके हिये परकास॥ सो पुनीत शि
व पद लहे रे, दहे चतुर्गति वास॥ चे०॥८॥ महि

मा सम्यक् ग्यानकी, जद्यपि राग जल होय ॥
क्रिया करत फल भुंजते, कर्म बंध नहिं होय॥४
०॥ जेह ग्यान तजसों लसो, ज्ञजसों मुक्ति
न होय॥ परम जोति परगट जिहां, तिहां विकल्प
नहिं कोय॥४१॥ जेह ग्यान साकू लयो, स
मरस निर्मल नीर॥ धोवी अंतर आतमा,
धोवे निज गुण चीर॥४२॥ राग विरोध
विमोह मलीरे, येही आस्रव मूल॥ येही कर
म बंधाय के, करे धर्मकी भूल॥४३॥ ग्यान
सरूपी आतमा, करे ग्यान नहिं और॥ द्रव्य कर्म
चेतन करेरे, यह व्यवहारकी दौर॥४४॥ कर
ता परणामी द्रव्यरे, कर्मरूप परिणाम॥ क्रिरि
या परजयकी फिरत, वस्तु एक त्रय नाम॥४०
॥४५॥ करता कर्म क्रिया करे, क्रिया करम करता
र॥ नाम भेद बहुविध भयेरे, वस्तु एक निर्धा

साधै॥४॥ एक कर्म कर्तव्यता, करै न करता दो
य॥ तैसें जस सत्ता साधि, एक भावको होय॥
पै०॥ २६॥ इति॥

॥पद खड शाहसुं॥

॥राग धन्याश्री॥ जस जंग उपसम ना
हिं रति, तज जंग जोग धरे क्युं होवे, नाम धरा
वे जति॥ जग॥१॥ पर करतुं जहु विघलाते
क्रोधै जले छति॥ ताको फल तुं क्या पावेगो,
ज्ञान विना नांहिं जती॥ जग॥२॥ भूख
तरस और धूप सहतु है, कहेतु ब्रह्म व्रती॥ क
पट केलवे माया मंडे, मनमें धरे व्यकुली॥ जग
॥३॥ आसन जगावत टाढो रहेवत, कहत है कु
वसती॥ तंत्र मंत्र जडी जूटी लेजल, सो लव
श मूढ मती॥ जग॥४॥ जडे जडे जहु पूर्व
धारी, जिनमें सक्ति हती॥ सो ली उपसम

छोडी जीयारे, पावे नरक गति॥ ज०॥४॥
कोउ गृहस्थ कोउ होवे वैरागी, जोगी जगत
जति॥ अध्यातम भावें उदासी रहेगो, पावे
गो तब ही मुगति॥ ज०॥५॥ श्री नय विज
य विबुध वर राज, जने जगदीश रति॥ श्रीज
सविजय उवझाय पसाये, हेम प्रभु सुख
संतति॥ ज०॥६॥ इति॥

॥पद ओगणोतेरमुं॥

॥राग राम ग्री॥ चंद्रप्रभु जिनराज

राज, वदन पूनम चंदरे भविक लोक चकोर निर
खत, लहे परमानंदरे॥ चं०॥१॥ महमहे महि
माये भ्रमर, रस जस कर विंदरा रण अणे
भविजन भ्रमर रसिया, जाहि सुख मकरंद
रे॥ चं०॥२॥ जस नामे दोसत अधिक दीपे,
रसे दोहग दंदरे॥ जसगुण कथा भवव्यथा लं

जे, ध्यान शिवतरु कंदरो ॥ चं० ॥३॥ विपुल हृदय विशाल भुजयुग, चलत चाल गयंदरो ॥ अतुल अतिसय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंदरो ॥ चं० ॥४॥ हुं दास चाकर देवतोरो, सिस तुज फरजंदरो ॥ जस विजय वाचक एम विनवे, टाल मुज भव फंदरो ॥ चं० ॥५॥ इति ॥

॥ पद सित्तेरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ तो बिना और न जाचुं जिनंदराय ॥ तो० ॥ रक ॥ में मेरो मन निश्चय कीनो, एह मां कछु नहि काचुं ॥ जिनंदराय ॥ तो० ॥१॥ तुम चरन कमल पर पंकज मन मेरो, अनुभव रस भर चाखुं ॥ अंतरंग अमृत रस चाखो, एह वचन मन साचुं ॥ प्रभुजा ॥ तो० ॥२॥ जस प्रभु ध्यायो महारस पायो, अवर रसें नहि राचुं ॥ अंतरंग फरस्यो दरस

नतेरो, तुम गुण रस संग मायुंग प्रभु भातो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद अठोतेरमुं ॥

॥ राग प्रभाती ॥ दृष्टिरागें नविलागियें, वली लागियें चित्तें ॥ मागियें शिव ज्ञानी तणी, हठ भांगी भजें नित्यें ॥ दृष्टि० ॥ ध्रु० ॥ एकला दोष देखे नहिं, जिहां जिहां अतिरागी ॥ दोष अछता पण दाखवे, जिहांथी रुचि भांगी ॥ दृ० ॥ २ ॥ दृष्टिराग वसे चित्तशी, करे जेअ विकरालें ॥ पूर्व उपकार न सांभले, पडे अधिक जंजालें ॥ दृ० ॥ ३ ॥ वीर जिन जगहुता विचरतां, नव भेजली पुत्तां ॥ जिन कही जडजनें आदर्यो, ईहां मोह अति धूतो ॥ दृ० ॥ ४ ॥ अष्टि लंडार रमणी तणे, तजे आप मतिरागो ॥ दृष्टिरागें जमाली जह्यो, नावि ज

चलत लागो॥ दृ०॥ ५॥ वली आचार्य सावद्य
जेहुओ अनंत संसारो॥ दृष्टि राग स्वमति प
णे थयो, महा निशीथ विचारो॥ दृ०॥ ६॥ हु
वे जिन धर्म आशातना, अजाण्युं कहे रंगो॥ म
हु आगमें जिनवरे, वंदियो भगवई अंगो॥ दृ०
॥ ७॥ ग्रामना नटने मूरखनो, मिल्यो जेहवो
संगो॥ दृष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक
जोगो॥ दृ०॥ ८॥ आपण गोठडी मीठडी, रु
ढीने मन लागो॥ ज्ञानी गुरु वचन रजिया म
णां, कडुक तीर स्यां वागो॥ दृ०॥ ९॥ दृष्टिरा
गे भ्रम ऊपजे, वधे ज्ञान गुण रागो॥ जेहमां
एक तुमें आदरो, भलो होय ते आगो॥ दृ०॥
१०॥ दृष्टिरागी कदा मत हुओ, सदा सुगुरु
अनुसरजो॥ वाचक जस विनय कहे, हित
शिष्य मन धरजो॥ दृ०॥ ११॥ इति॥

॥पद बहोंतेरमुं॥

॥राग गोडी॥ जबलगें समता क्षणुं नहिं आवे, जबलगें क्रोध व्यापक हे अंतर, तबलगें जोग न सोहावे॥ ज०॥१॥ बाह्य क्रिया करे कपट केलवे, फिरके महंत कहावे॥ पक्षपात कबहु नहिं छोडे, उनकुं कुगति बोलावे॥ ज०॥२॥ जिन जोगीने क्रोध किहांतें, उनकुं सुगुरु बतावे॥ नाम धारक भिन्न भिन्न बतावे॥ उपसम विनु दुःख पावे॥ ज०॥३॥ क्रोध करी बंधक आयारज, हुओ अग्नि कुमार॥ दंडकी नृपनो देश प्रजल्यो, भमियो भव मोझार॥ ज०॥४॥ संब प्रद्युम्न कुमार संताप्यो, कष्ट द्वीपायन पाया॥ क्रोध करी तपनो फल हार्यो, कीधो द्वारकां दाया॥ ज०॥५॥ काउस्सग्गमां पड्यो अति क्रोध, प्रसन्न चंद्र ऋषि

राच्या॥ सातमी नरक तणां दुख मेली. कडवां
ते न खमाया॥ गा०॥८॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग
दीधो, कमठ भवंतर बीठा॥ नरक तिर्यंचनां दु
ख पामी, क्रोध तणां फल दीठा॥ गा०॥९॥ ए
म अनेक साधु पूर्वधर, तपिया तप करी बहु
कारण पडे पण ते नवि रहिया, क्रोध तणुं ख
ल जोहा॥ गा०॥१०॥ समता भाव वली जे मुनि
वरिया, तेहनो धन्य अवतारा॥ खंधक ऋषिनी
खाल उतारी, उपसर्ग उतार्यो पारा॥ गा०॥११॥
चार पंच सूर आचारज चलतां, मस्तक दीया
प्रहारा॥ समतां करतां केवल पाम्यो, नवदीक्षि
त अणगारा॥ गा०॥१२॥ सागरचंदनुं शीश
प्रजाल्युं, नीसलसेन नरेंद्रा॥ सुमता भाव
धरी सुरलोकें, पोतो परम आनंदा॥ गा०॥१३॥
॥ खेमा करतां खरचन लागे, भांगे कोड कले

सो अरिहंत देव आराधक ध्यावे, पावे सुज
स प्रवेश ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सतहोंतेरमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ प्रभु मेरे तुं सब वातें पूरा
परकी आश कहा करे प्रीतम, ए किण वातें अ
धूरा ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ परवश बसत लहत परत
क्ष दुःख, सब ही बासे सनूरा ॥ निज घर आप
सत्तार संपदा, मत मन होय सनूरा ॥ प्रभु० ॥
२ ॥ परसंग त्याग लाग निज रंगे, आनंद वेली अं
कूरा ॥ निज अनुभवरस लागे मीठा, ज्युं घेवर
मे घूरा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अपने ख्याल पलक मे खे
ले, करे शत्रु का चूरा ॥ सहजानंद अचल सुख पा
वे, पूरे जगजस नूरा ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अठ्योतेरमुं ॥

॥ अथ श्री पूजाविधिनुं पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ शांति जिन भोगी रह्यो ॥ ए देशी ॥

पूजविधि मांहे भाविये जी, अंतरंग जे भाव ॥
ते सवि तुझ आगल कहुं जी, साहेब सरल स्व
भाव ॥ सुहंकर अवधारो प्रभु पास ॥ ए आंकणी
॥ १ ॥ न्हातण करतां भाविये जी, प्रभु गुण जल मु
झ सुध्य ॥ उकल ऊतारी प्रमत्तता जी, हो मु
झ निर्मल बुध्य ॥ सु० ॥ २ ॥ जतनाये स्नानें
करी जी, काढो मेल मिथ्यात्व ॥ अंगुछो अंग
शोषवी जी, जाणो हुं अवदात ॥ सु० ॥ ३ ॥ क्षी
रोदकनां धोतियां जी, चिंतवो चित्त संतोष
॥ अष्ट कर्म संवर भलो जी, आठ पडो मुहको
श ॥ सु० ॥ ४ ॥ ओरशीयो एकाग्रता जी, केस
र भक्ति कल्लोल ॥ श्रध्या चंदन चिंतवो जी,
ध्यान घोल रंग रोल ॥ सु० ॥ ५ ॥ भालव
हुं आण भली जी, तिलक तणो तेह भाव ॥

जे आभरण उतारीयें जी, ते उतारो निज
भाव ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे निर्मल उतारियें जी,
ते तो चित्त उपाधा ॥ परभाव करंता चिंतवो
जी, निर्मल चित्त समाधा ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंग
लूहणां जे धर्मनां जी, आत्म स्वभावने अं
गा ॥ जे आभरण पहेरावीयें जी, ते स्वभाव
निज चंगा ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे नववाडी विशुद्ध
ता जी, ते फूल नव अंगा ॥ पंचा च्यार विशु
द्धता जी, तेह फूल पंच रंगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ दी
वो करतां चिंतवो जी, ज्ञान दीपक सुप्रकास
॥ नय चिंता घृत पूरियुं जी, तत्व पात्र सु
विलास ॥ सु० ॥ ७ ॥ धूप रूप अति कार्य
ता जी, कृष्णागरुनो भंगा ॥ शुद्ध वासना
महमहे जी, ते तो अनुभव योगा ॥ सु० ॥
८ ॥ मद स्थानक अड छांडवा जी, तेह

અષ્ટ મંગલિકના જી નૈવેદ્ય નિવેદિયેં
જી, તેમન નિશ્ચલ રીઝ ॥ સુ૦ ॥૧૨॥
લવણ ઉતારી ભાવી એં જી, કૃત્રિમ ધર્મ
નો ત્યાગ ॥ મંગલ દીવો અતિ ભલો જી
મુખ્ય ધરમ પરભાગ ॥ સુ૦ ॥૧૩॥ ગી
ત નૃત્ય વાજિંત્રનો જી, નાદ અનાદ અ
સાર ॥ સમરતિ રમણી જે કરી જી, તે સા
ચો થેઈકાર ॥ સુ૦ ॥૧૪॥ ભાવપૂજ એ
મ સાચવી જી, સત્ય બજાઓ રે ઘંટ ॥
ત્રિભુવન માંહે તે વિસ્તરે જી, ટાલે કર્મ
નો કંટ ॥ સુ૦ ॥૧૫॥ એણી પરે ભા
વના ભાવતાં જી, સાહેબ જસ સુપ્રસ
ન્ન ॥ જનમ સફલ જગ તેહનો જી, તે
હ પુરૂષ ધન ધન ॥ સુ૦ ॥૧૬॥ પરમ પુરૂ
ષ પ્રભુ સામલા જી માનો એ મુજ સેવ ॥ દૂ

रकुशोजय आमलोक, वाचक जस कहे

हे॥सुण॥१७॥ इति॥

॥पद पंचोतेरमु॥

॥राग गोडी॥ संजयजिन जय।

नमिल्यो हे, प्रगटे पुण्यके अंकुर॥ अ आं०

एडी॥ तजथें दिन मोही सफल वल्यो हे॥

अंगणे अमीयें मेह वुठा, जनम ताप

शोल्याप गल्यो हे॥ संज०॥१॥ जैसी जक्ति

तैसी प्रजु करूना, स्वेत संखमें दूध भिल्यो हे॥ दर्श

नथें नव निधि रिधि पाई, दुख दोहग सब दूर टल्यो हे॥ सं

ज०॥२॥ डरत फिरत हे दूरहिं दिलथें, मोह मलन जिणे

जगत्र छल्यो हे॥ समकित रत्न लहुं दरिसनसें, अब न

वि जाउं कुगति रल्यो हे॥ संज०॥३॥ नेह नजर जर निर

खनहीं मुज, प्रजु सुं हैयडो हेज हल्यो हे॥ श्रीनयविजय

विबुधसेवककुं, साहेब सुरतरु होय फल्यो हे॥ संज०॥४॥ इति॥

अथ

॥श्रीविनयविलासप्रारंभः॥

॥पद पहेलुं॥

॥राग जयजयवंती॥ सजन सज्जने ला
ल, चरन न छोडुं ताल, मेरे तो अजब माल,
तेरो छे भजनहुं॥धा॥ दोलत न चाहुं दाम, काम सुं
न मेरे काम, नाम तेरो आछो भाम, लिउं कोरं
भनेहा॥१॥ तेरो हुं आधीन लीन, जलज्युं मग
न मीन, दीन जगडेरो प्रभु, दुःखडे भंजन
हे॥२॥ नाभि भई देवानंद, नयन आनंद ये
द, चरन विनय तेरो, अमिय को अंजन हे॥४

॥पद बीजुं॥

॥राग कानडो दरबारी॥ चालति छोर दे
गुन गोरी॥ तुं गुन गोरी॥ टेक॥ अपरिछ ये

हुं मिले शशि पंकज, प्रिय जमुनावेंहि लोरी॥याग्रतिन॥४॥ चल गिरनार पिया दिखलावुं, जहुरि जोरि रति होरी॥ मुगति महलमें मिले राजुल नेम, विनय नमे कर जोरी॥याग्रतिनारे

॥पद छत्रीसमुं॥

॥राग कल्याण रूपक॥ मेरी गति मेरी मति मेरी रति मेरि छति, मेरो पिया मेरो लि या यदुपति यतियां॥ मेरी॥॥ मेरो ज्ञान मे रो ध्यान मेरोमान मेरो प्रान मेरो जश, सु नि जन्निधान मोहि आसर्सति छतियां॥मे री॥२॥राग जे गिरनार मोकु छारि रस अरि तोरि, रहि चित्त दिन रति जेसें धीया जतियां ॥मेरी॥३॥ मेरे तुंहि मेरे तुंहि शिया हवी नं द तुंहि, मानो पिया राजुलकी विनय विन तियां॥मेरी॥४॥ इति॥

॥पद चौथुं॥

॥राग दरबारी कानडो॥ कुमति कारे मे
रे प्रानी॥टेक॥ झूठी सब संसारकी माया,
झूठी गरब गुमानी॥ कुमति०॥१॥ आपन
भूले मोह निंदसुं, डोले दुनियां दिवानी॥
वीतराग कुं कारण दिलसुं, विनय रूपी
शुद्ध ज्ञानी॥ कुमति०॥२॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग भूपाल तथा गोडी॥ प्यारे काहे
कुं ललचायो॥टेक॥ या दुनियांका देख तमा
सा, देखत ही सकुचायो॥ प्यारे०॥१॥ मेरी मे
री करत हे बाउरे, फीरे जिउ अकुलायो॥ प
लक एक में बहुरि न देखे, जल बुंद की न्यायो॥
प्यारे०॥२॥ कोटि विकल्प व्याधि की वेदन,
लही शुद्ध लपटायो॥ ज्ञान कुसुम की सेज न

नपाछे, रहे अघाय अघायो॥ प्यारे॥३॥
फिया दोर चिहुं ओर नेरसें, मृगतृष्णा चि
त लायो॥ प्यास बुझावन बुंदन पायो, यौंहि
जनम गुमायो॥ प्यारे॥४॥ सुधा सरोवर है
या घरमें, जिसतें सब दुःख जायो॥ विनय
कहे गुरुदेव दिखावे, जो लाउं दिल ठायो॥ प्या
रे॥५॥ इति॥

॥पद छहुं॥

॥राग सामेरी॥ पिउजी मोहि दरिसन
दीजे ओंरे॥ टेक॥ तेरे दरशन की मैं प्यासी, तुं
कहां नयो उदासी॥ पिउजी॥१॥ पिउ पि
उ रटतें नहिं छूके, नयनों निंदकी आलरे॥
तज देखा पिउ प्रेमसें झूनी, संकुचि रहि में ला
जरे॥ पिउजी॥२॥ रसिकन राख्यो हृदेसुं
नीरी, सखिमें बहुत चरांसीरे॥ अब पाउं

तो पाउं न छोडूं, राखुं रंग बिलासी रे॥ पि
उ रज०॥३॥ पिउ के गुनकी मोतन माला, कं
ठ करौं जप माली रे॥ चकित भये मेरे लोचन
चिहुं ओर, सुरिजन पंथ निहाली रे॥ पिउ
रज०॥४॥ कह मति भारी रजवन प्यारे, मैं कुं
तेरी अंघी रे॥ गोर निहाउं विनय विनोदं, घ
र आवो आनंदी रे॥ पिउ रज०॥५॥ इति॥

॥पद सातमुं॥

॥राग मिश्रित बिहागडो॥ प्यारे प्रीत
मन छु छो वो रे॥ टेक॥ तोरन आय फिरे कुन
कारन, कीहे रथ्यों या जोरो॥ प्यारे०॥१॥ मो
सुं कीनी अैसी ठगाइ, ज्यैसें करत ठगोरो॥
भूठ जगत में काहि दिखायो, अैसो ज्याफ
जर घोरो॥ प्यारे०॥२॥ मैं तो नाहु न छोडूं
नयनवको, जूरयो प्रेमको जोरो॥ अजतो

चरन जिनय मोहि दीजें, राजुल करत
नि होरो॥ प्यारे॥३॥ इति॥

॥पद आठमुं॥

॥राग जयजयवंती॥ सुरत मंडन
पास, देखत अति उल्लास, सुजस सुवास
जस जगत में जेत है॥ सुरत मोहन रूप,
सुरनरनमे भूप, अकल सरूप स्वामि अधि
क उद्योत है॥१॥ जमत जमत जब, पा
यो प्रभु अलि नव, सुरत रूप सुभ साज
देखन प्रवीन है॥ तेरा रूप गुन ग्यान, सो
उ दिन सुविहान, तिहारे चरन मेरो, दिल
लय लीन है॥२॥ मुगट कुंडल माल, रतन
तिलक भाल, सुगुन रसाल लाल, पूज
जनि हे भई॥ केसर कपूर कूल, धूप चंद जहु
कूल, जिनय कुं दिजे दुःख तिजरसुं प्रेम भई॥३॥

॥पद नवमुं॥

॥राग मेघ मल्हार॥ किउं मान मेरे
मोहन, कई विनती होउ करही केरा॥ वि
न गुन्हा क्यौं छोरि सिधाये, महर करहु या
हो सिरके मोरा॥ किउं०॥१॥ विरह विज्ञा
न लग्यो मेरे हिउमें, पिउ पिउ हमुं साज
ही ठेरा॥ सूझ न परत अकल गति या कछु,
कीयो विजोग संजोग की हेरा॥ किउं०॥२॥
पलक एक कल न परत मोकुं, पिउ पिउ रट
त होतही भोरा॥ चमक लोह ज्यौं खेंच लि
यो मन, चले प्रेमकी जांह मरोरा॥ किउं०॥
३॥ लियो छीन मन मानिक मेरो, विनके
भूल हये लोक करोरा॥ तो अब मोहि दिले
मन अपनो, करहो नीआउ पिउ मकरो
केरा॥ किउं०॥४॥ रतन तीन दीले राजुलउं

भयो रंगरस झकरी जेरा॥ विनय सदा सेव
क सुजस दाखै, समुद राणी शिवा देवी किसोरा॥
लि०॥७॥पा॥ इति॥

॥पद दशमुं॥

॥राग जेजेवंती॥ जनकुं वहालों प्यारे
रहोगे हमसुं न्यारे, चाहितो युतारे प्यारे
तुम चित्त भाये हो॥१॥ जकुत जिगोये जोये ये
रही सकल गुन, लोगनमें शोभा तुम भालि
युं जगाये हो॥२॥ हमकुं उहेकुं मानो चाहिसो
तिहारो तानो, भनोगे आपहि वातो जैसी
दुःख दाये हो॥३॥ सजनकुं प्यारी नारी, भा
याके जगत हारी, यनसें तें यारी भारी आ
जर भुराये हो॥४॥ झूठे हि दिखावे नेह, पाथ
रकी जैसी मेह, छरकी दाजेंगी छेह, अंततो
पराये हो॥५॥पा॥ कहे ज्ञान कला लिणी भनोसो

उरह्यो पिउ, जैसी है तैसी तो तुम जिनये सु
नाई है॥ ५॥ ई०ती॥

॥ पद अगीआरमुं॥

॥ राग बिहागडो॥ सांई सलूना केसें

पाउरी, मन थिर मेरा न होया॥ दिन सारा
खातो में खोया, रजनी गुमाई सोया॥ सां
ई०॥ १॥ टेक॥ खेर खेर जर ज्यामें दिलकुं,
खरल्या न रहे सोया॥ मन और मद मत्त
खाला कुंजर, अरके न रहे होया॥ सांई०॥ २॥
छिन ताता छिन शीतल होवें, छिनुइ हसे छि
नु रोया॥ छिनु हरखे सुख संपत्ति पेखी छिनु
झूरे सब खोया॥ सांई०॥ ३॥ वृथा फुरत है कौ
री कुराकृत, लाधो न मिरे कोया॥ याकी नी
में याहि कडुंगी, यों ही नीर बिलोया॥ सां
ई०॥ ४॥ मन धागा पिउ गुनको मोती, हा

रबना ज्युं पोया॥ बिनय कहे मेरे जियडेके र-
चन, नेकनिजर मोहे जोया॥ सांई०॥५॥ इति

॥पद इग्यारमुं॥

॥राग नट॥ थिर नांहि रे थिर नांहि, या-
वत धन यौवन थिर नांहि॥ पलक एकमें छेह
दिखावत, जैसी बादलकी छांहि॥ थिर०॥१॥
टेक॥ मेरे मेरे कर मरत बिचारे, दुनियां अप-
नी करी चाही॥ दुसरा स्त्री ज्यौं उलरा होवे, च-
साथ किसिके नांही॥ थिर०॥२॥ कहे दुनियां
कहा हसे बाउरे, मेरी गति समजै नांहि॥
केते ही छोरे मे प्यासे, केते ओर गहे बांहि॥
थिर०॥३॥ सयन सनेह सजन हे पंथल, किस-
के सुत किसकी माई॥ रितु बसंत शिर रूख पा-
त ज्यौं, जय परोगे को मांहि॥ थिर०॥४॥
अजरामर अकलंक अरूपी, सब लोगनकुं.

सुखदाई॥ बिनय कहै अब दुःख बंधनतें, छोडनहार वे सांई॥ थिर०॥ ५॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग बिहागडो ॥ मन न काहुके वश मन कीजे सब वश, मन की सो गति जाने याको मन वश होय॥ पद॥ हो बहुत पाठ तप करो कै पाहार, मन वश कीजे बिनु तप जप बश होय॥ १॥ काहुं कीरे हे मन कहुं न पावेगो चैन, विषयकेही संग रंग कछुन कुरस होय॥ २॥ सोही ज्ञानी सोही ध्यानी सोही मेरे ज्यायानी, जिने मन वश किये वाकि सुजश होय॥ ३॥ विनय कहे सो धनु या जो मनु छिनु छिनु, सांई सांई सांई सांई सांई संतिरस होय॥ ४॥ इति॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ जबजत मासा छेकुला

ख्या॥रेड़ा॥डोरी भतहि दोनु भेरे, पिछला अगि
ला सुं हारया॥अलबना॥२॥आय नबल महेल
अ पीछला, तब अगिला दुरि हु दोरे॥ पिछला
भेरस भेरया याहे, अगिला दोरतहि दोरे॥अ
लबना॥१॥भोह भाड़ा येन जियारे, आगिल
आंबो मुहि मंगे॥ पिछला आपरा छिनु छिनु
अरड़े, उयरे अंबर भय संगे॥अलबना॥३॥तब
प्रभुने एक ओर पठाया, उने भय आगिला
आंध्या॥ पिछला तबथें रहा उदासी, साहिब ने
बहु सुख साध्या॥अलबना॥४॥एक नीय अति
एकहि मध्यम, एक उत्तम प्रभु कुं प्यारा॥ याति
नों कुं बिनय पिछान्यो, रहो अधम सेंती न्यारा
॥अलबना॥५॥इति॥

॥पद पन्नरमुं॥

॥राग लेरवा॥ भगो प्यारें भयो सुजिह॥

न, श्री तीर्थंकर उदयो भाण॥ प्रभु०॥ करे क
पाये भविक मन कमल विकास, उड गये औ
गुन भरम उदास॥ प्रभु०॥१॥ नयन उघा
री बिलोके कंत, मोह तिमिर अब आयो अंत
। प्रगटी ज्ञान कलाकी ज्योत, मुगति पंथ अ
ब भयो उद्योत॥ प्रभु०॥२॥ सुपन में मूंझी
रह्यो मेरे लाल, इन विधि गया अनंता काल॥
अब सुहनेका छोडा ख्याल, या सब झूठा मि
थ्या भाल॥ प्रभु०॥३॥ काया अपावन माया से
ल, उसपर विवेका चेतना है भला॥ सुकल ध्यान
पखारो अंग, युं प्रगटे तुम निर्मल रंग॥ प्रभु०
॥४॥ पिउ निरखो जिन राउ जिनंद, कहे मति
नारी मिटयुं निंदा आप संभालो जोती नेत,
विनय करी विनवो पिउ चेत॥ प्रभु०॥५॥

॥ पद ४१ मुं

॥ राग ॥ कुसेनी ॥ कहाके जोर जैसी रमत त्यो ज
लगारी ॥ ऐहरी ॥ सुन सुहागिन जे दिलकी बा
त हमारी ॥ टेक ॥ में सोदागर दूर विदेशी, सोदा क
रने आया ॥ देखत तोकुं भूलि गया सब, तोहि
सुं चित्त लाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ निसी वासर तेरे र
स राता, अपने काम न सूझे ॥ तेरे विरह दरदतें
तरधूं, ज्युं दुसमनसें झूझे ॥ सुन० ॥ २ ॥ सुंदरी ते क
छु काम न कीया, तुझ विनु पलक न ल्हेवा ॥ लोचन
लागी रहे तेरी आसरय, और कछु न सोहावे ॥ सु
न० ॥ ३ ॥ अरथ गरथ सब तुझे खिलाया, हमरा
ओकन कमाया ॥ क्युं कर बंधे मिलुं सांईकुं, त्या
या कछु न लाया ॥ सुन० ॥ ४ ॥ विनय यती तुं खरी
पियारी, कहे अब करी कुशीयारी ॥ मुंहसी करे
तो मिलुं सांईसुं, अविहड करूं अयारी ॥ सुन
० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥पद सत्तरमुं॥

॥राग ऊपर प्रमाणे॥ काया कामनी जेला
न, सुनी कहे कणिरा॥ मेंकुं जंही जे लाल, तुं मेरा
पिउरा॥ पिउरा सुनि के कहुं विनती, मकरी
जोरसें नेहरे॥ दो दिवसकी या दाम होलत, हे
त छिनुमें छेहरा॥ १॥ तुं गुमास्ता जे लाल, अप
ने शेठ कमाले न्यायका जे लाल, कु भी ठठका॥ ठ
ठेका आवे हुकम न्ज तुहीं, पलक ईक न रा
के रहीं॥ तो कहा मूरख करे धंधा, अंते तेरा
कछु नहीं॥ २॥ हो लेजुआ जे लाल, अपने सां
ईका, नाकु चोरीओ जेलाल, नाकहु पाईका॥
पाईका नाकहु चोरी उपनका, न्अ नवि होत
न्जा परो॥ तज ताहिकुं दूर होजउ, होषेद
जे आपरे॥ ३॥ सोहा हुऊ का जेलाल, ऐ
सा कीन्जें, होवे कायदा जेलाल, साहि

जरीझी ओं पारीझी ओं साहिज युं निवाहे, आ
प दुःख तें डहेरे॥ विनती एतनी मानी जालि
म, बेपरवाही मत करो॥३॥ तुं परदेशी का बेला
ल, पंथी प्राहुणा, प्रीतमें बांधी बेलाल, ज्युं
रहुं तो विना॥ तुं विना, ज्युं करी रहुं दुःखल
री, सती युं संगें चलुं॥ सांई का करी विनय
सज्जन, युं अलेहैं तुझ मिलुं॥५॥ इति॥

॥पद अढारमुं॥

॥राग आशावरी॥ काकडूं मंदिर कहा
कडूं हमरा, नरभवनुं कहुं तुं डोडजो ठगा लमरा॥
भेरी भेरी गरजे छोरी कुमाला, डोड गरजे
पंखी पड रह्या माला॥ का०॥१॥ टेका॥ प
वनकी गंठरी जैसें ठराओ, घरन जसत आ
य जेह जराओ॥ जगनी जुआनी कहे की
आगा, दीप छीपे तज जेसें डील राग॥ कहा॥

राचित्तके तईयर कुंजकुं न मोरे, मारिका घोरा केते
घोराज्युं जेकी हरी तूरका थंल्या, ऊहां भेले है सारे
जो अर्थ॥४॥ फिरि फिरि आवत अं-
त ऊसासा, सो परे तोरका ऐसा विश्वासा॥५॥ या
दुनिया की झूठी है यारी, जैसी जनाई बाजीगर
बाजी॥६॥ परमातम अविचल अवि-
नासी, सो है शुद्ध परम पद वासी॥ विनय कहे
साहिब मेरा, फिर न करूं आ दुनिया में फेरा॥७॥
॥१८॥ इति॥

॥पद ओगणीशमुं॥

॥राग काफी॥ किसके चेले किसके पूत, आत
मराम अकेला अवधूत॥ जीउ जानलो॥ अहो
मेरे ज्ञानीका घर सुत॥ जीउ जानले, दिल मान
लो॥१॥ आप स्वारथ मिलिया अनेक, आ
ये छे केला जायेगा एक॥ जीउ॥ दिल॥ राम

हीगिरंदकी झूठे गुमान, आखके माल गिरेंगी
निधन॥ नि०॥ हि०॥ ३॥ तीसना पावडली जर
जर, आजु काहेकुं सायो गोरा॥ नि०॥ हि०॥ ४॥
आगि अंगि ही नावेगी साथ, नाथ रमो गे
आली हाथा॥ नि०॥ हि०॥ ५॥ आशा जोली प
त्तरलोल, विषय भिक्षा भरी लायो थोल॥
नि०॥ हि०॥ ६॥ करमकी कंथा डारो दूर, विनय
विराजे सुख भरपूर॥ नि०॥ हि०॥ ७॥ इति॥

॥ पद वीशमुं॥

॥ राग आशावरी॥ घोरा झूठा हेरे तुम
त झूले असवारा॥ टेक॥ तोहि मुधा ओलग
तुहे प्यारा, ए अंत होयगा न्यारा॥ घोरा०॥
चारे चीज अरु डरे कहसुं, ऊपर चले अस
वारा॥ जन करे तब सोया चाहे, पानेकुं हुशि
यारा॥ घोरा०॥ १॥ झूज जलना चरप

खिजावें, घो सजन ज्यां भत यारा॥ असवारी
का अवसर होवे, तब गलियां होवे गमारा॥
घोड़ा जाणि छिन नाता छिन प्यासा होवे, जि
न भत अकुत उरावन हारा॥ दूर दौर जंगल
भेंडारे, भूरे चली खियारा॥ घोरा॥ साकर
हो पोकड़ा पातुरयो कुस, घो पाजक दोयरयारा॥
ऐन घोरेकुं विनय सिखाओ, युं पावो सव प
रा॥ घोरा॥४॥ इति॥

॥ पद अेकुवीशमुं॥

॥ राग आशावरी॥ पांच्यो घोरे अेकु रथ
जूता, साहिब ऊसका लितर सूता॥ अेकु ऊ
सकुं मद मतवारा, घोडेंकुं दोरावनहारा॥ पां
चोंना॥ रादेशा घोरे जूह अोर अोर चाहे, र
थकुं फिरि फिरि ऊबर वाहे॥ विषम पंथ पिंकुं जोय
जगियारा, तो लिन जागे साहिब प्यारा॥ पां

चो॰॥२॥ जेहु रथकुं दूर होरावे, जे अंबर सा
हिब कुंअ पावे॥ रथ जंगलमां जाय असुजे,
साहिब सोया कछु अन सूझे॥ पां॰चो॰॥३॥
चोर ठगोरे तिहां मिलि आये, दोनुंकुं मर ध्या
ला पाओ॥ रथ जंगल में जरण कीना, माल
धनी का तिहां री लीना॥ पां॰चो॰॥४॥ धनी ल
ग्या ताज जेहु बांध्या, रासी परांना ले सिर सां
ध्या॥ चोर लगे रथ मारग लाया, अपना सा
ल जिनय लिउी पाया॥ पां॰चो॰॥५॥ इति॥

॥पद छवीशंमुं॥

॥राग सोरठ॥ चतुर विचारो चतुर विचारो, ते कुण
कहियें नारी ज॥ पीउथी क्षण अलग न रहे अ
लगी, कुल वंती अति सारी ज॥ च॰॥१॥
नाचे गाये पियसुं राचे, रमे जमे पीय सा
थेंज॥ जे कहिने आजाणी तरुणी, नवि

चढ्यो ते हाथें ज॥ चं०॥ ३॥ धीर चीवर पहेरी
सा सुंदरी, ऊंडे पाणी पेसे ज॥ पण जीभ
ये नहीं तस ओछ, अपरंच ए जग दीसे ज
॥ चं०॥ ४॥ चाहल करते भरे तत काले, आत
पयोगें ज्यें ज॥ अंधारा मां ने निसि
नय, तो देखाडु दीवे ज॥ चं०॥ ५॥ अवधि
ऊडुं छु मास ओरनी, आपो अरथ विचा
री ज॥ कीर्त्ति विजय वाचक शिष्य जंपे,
मुध रननी जलिहारी ज॥ चं०॥ ६॥

॥ पद त्रेवीशमुं॥

॥ राग आशावरी॥ जोगी ऐसा होय फरुं,
परम पुरुषसुं प्रीत करुं॥ ओरसें प्रीत हरुं॥ जो॥
निरविषयकी मुद्रा पहेरं, माला फीराउं मेरा
मनकी॥ ग्यान ध्यानकी लाठी पकरुं, भभूत
चढाउं प्रभु गुनकी॥ जो॥ शील संतोषकी कं

था पहुं, विषय रसानुं घूणी॥ पंचुं चोर
पेरें फरी फरुं, तो दिलमें न होय चोरी हुणी॥३॥
अबर लेहेमें जिनमत तेरो, शब्द सीरी
अलखो॥ घट अंतर निरंजन बेठे, चासुं ल
चलगाओ॥४॥ मेरे सुगुरुने उपदेश दियाहे,
निरमल अंग बतायो॥ विनय कहे में उनकुं
ध्यावुं, जिने सुध मारग दिखायो॥५॥ इति

॥पद चोवीशमुं॥

॥मगध देशको राज राजेसर॥ ए देशी॥

जंगलथी एक लगो चोपद, नंचर वसंतो दीठो
पनविनीये नवी नासे त्रासे, जेसे थिर अति
दीठो॥१॥ चतुर नर अर्थ विचारी कहियें॥ चतु
राई निव रहीयें, चतुर नर आपनहीं तो गरव न क
हियें॥ चतु०॥ अंचली॥ जय दया पालक
रंगीलो, आवियो तुम काम, अंगुल लघु युग

गुरु सरषा ले, लिपि अक्षर तस नाम ॥ ए तु० ॥
३ ॥ घनरिपु तसरिपु तसरिपु सेवक, मंदिर नंद
न ले हुं ॥ तरुणी पण लिल धारि जोले, जे लेछे
नित नेहा ॥ ए तु० ॥ ४ ॥ रोग रहित काया अति
निर्मल, पण तस एक विकारा ॥ पीछे पीछे ने
नाके नाखे, नरहे पेरे आहारा ॥ ए तु० ॥ ५ ॥ तात
त सहोदर तास नपुंसक, पासे जेहुं सोहा ॥ वि
नय लाणे ले अर्थ कहेते, पंडित ना मन मोहा ॥
ए तु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पंदपचीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधु भाई सो है जे
न का रागी, भली सुरत मूल धुन लागी ॥ सा०
परके ॥ सो साधु अष्ट करम सुं झगडे, सुन बांधे
धर्म शाला ॥ सोहं शब्दका धागा सांधे, जपे
अजंपा माला ॥ साधु० ॥ १ ॥ गंगा यमुना

मध्य सरसति, अघर वहे जलधारा॥ करी अ
स्नान मगन हुई बैठे, तोड्या कर्म दल भारा॥
साधु॥३॥ आप अभ्यंतर ज्योति बिराजे,
बंक नाल ग्रहे मूला॥ पछिम दिशाकी खडकी
खोलो, तो बाजे अनहद तूरा॥ साधु॥४॥
पंच भूतका भरम मिटाया, छट्ठु मांहि समाया॥
विनयप्रभु सुं ज्योत मिलि जब, फिर संसा
रन आया॥ साधु॥५॥ इति॥

॥पद छवीशमुं॥

॥राग गोडी॥ शांति तेरे लोचन हे अलि
यारे॥शां॥टेक॥कमल ज्यौं सुंदर मीन ज्यौं चंच
ल, मधुकरथी अति कारे॥शां॥१॥ कजरी नलो कहरता
लजत जनमें, फिरते हरिन बिचारे॥ चतुर
चकोर पराभव निरखत, जपरे चुनत अंगा
रे॥शां॥२॥ उपशम रसके भरजय चकोरे,

मानो चिरंजी अलबारे ॥ कीर्त्ति विजय
वाचकको विनयी, मोको है अति
प्यारे ॥ शां० ॥ ३ ॥ छेति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ तोलों मेरे जेर फिर आवें
गे, जउं लगन मेरे प्यारे पीयुकी, अंग अंगसे
लग पावेंगे ॥ तोलों ॥ १ ॥ विरह दिवानी फिरूं
ढुंढती, सेज न सार सुहावेंगे ॥ रूप रंग जो
बन मेरी सखियो, पीयु बिन कैसें दिखावें
गे ॥ तोलों ॥ २ ॥ नाथ निरंजनके रंजनकुं,
जोत सिणगार बनावेंगे ॥ करले बीना ना
दनगीना, मोहनके गुन गावेंगे ॥ तोलों ॥
३ ॥ देखत पीयुकुं मानि मुगताफल, भरी भ
री थाल बधावेंगे ॥ प्रेमके प्याले, ग्याननी
याले, विरहकी प्यास बुझावेंगे ॥ तोलों ॥ ४ ॥

सदा रही मेरे लाल में पीउलाल, पीयु में लालि
मिलावेंगे॥ विनय ज्योति सें ज्योत मिलेगी,
तब इहां वेहुन आवेंगे॥ तोलो॰॥ ५॥ इति॥

॥ पद छवीसमुं॥

॥ राग धन्याश्री॥ मेरी सजनी ऋषभ
चंद्रानन नमुं, वारिषेण जगचंद॥ वर्द्धमा
न जिन प्रण मिये, जहीयें सुख अनंत॥
मेरे आतम सासय जिन मुज वंदय, जिम
सासय सुख होय॥ मेरे आतम॰॥ १॥ अ
धो कुंडली॥ भवन पतिनां भवन जे होत्तेर, ला
ख ने सात क्रोडी॥ अेरले प्रासाद कह्या, जिनवा
र नमुं कर जोडी॥ मे॰॥ २॥ ज्योतिषी व्यंतर
तणा जे, नगर विमान असंख॥ तिहां अ
संख्य प्रासादें कह्या जिन, प्यार नमुं सहु
संख॥ मे॰॥ ३॥ तिर्छे लोकें गुण सहु लाल,

अधिक शत छत्रीशा॥ जिन भवन तिहां
चार जिन अे, नमतां पूगे जगीसा॥ मे०॥
४॥ लाख चोरासी सहस सत्ता, एगवर्छ
अधिक वीशा॥ ऊर्द्ध न लोक प्रासाद जि
न अे, नमिये नामी शीशा॥ मे०॥ ५॥
पंच वर्ण उदार माणि मय, सात हस्त प्र
माण॥ कोई धनुस्य पंच परिमित, अेजि
न मूरति जाण॥ मे०॥ ६॥ ईद्रादिक सुर
सयल पूजे, उरे समकित सुजाण॥ केसर चंदन
अगर पूजन, सेवे भाव विशुद्ध॥ मे०॥ ७॥ ध
ण सुरवर लहियें जिनपद, पूजतां अे जिन
चार॥ ध्यान धरतां जेह प्रभुनुं, लहियें भ
व नो पार॥ मे०॥ ८॥ श्री कीर्त्ति विजय उ
वझाय केरो, लहे अे पुण्य पसाय॥ सास
ता जिन थुणियें अेणीपर, विनय विजय उ

चलायो॥मे०॥४॥इति॥

॥पद ओगणत्रीशमुं॥

॥राग भूपाल॥ श्री विमलाचल मंडन आ
दिजिना, प्रह ऊठी चंदो जेउ मनां, माता मरु
देवा नंदना, नावें दीठे नयन आनंदना॥
वि०॥१॥रवि ऊदयो जग पंकज वना, विक
सत हूआं आलि जंघनां॥कोरे निंदित नि
ज लोचनां, आतम हित मन आलोचना
॥वि०॥२॥चंचल चेतन चल जेजनां, जी
ने सरण नमो जिन भुवनां॥नावे सहु
जकरोर भुवनां, कहे विनय नमे जग भु
वनां॥वि०॥३॥इति॥

॥पद त्रीशमुं॥

॥सुज पूरण सोनाघणी, मनु पा
स जिणंद॥दारा रोगरण नयहरे, जि

मधन अरविंद॥ सु०॥२॥ अश्व सेन वामा
तणो, सुतनमे सुरिंद॥ नाम जपतां तेहनुं धू
रे नव कंद॥ सु०॥३॥ पणि भावठे सानिध करे,
धनद धरणिंद॥ तेने स्वामी एक चित्त
युं, मधुकर अरविंद॥ सु०॥४॥ प्रभु देखीम
न उल्लसे, जेम कुमुदिनी चंद॥ सार वचत
वंछित तदीयो, जेम विनय आणंद॥ सु०॥५॥

॥पद एकत्रीशमुं॥

॥राग रामकली॥ अलख लेत हे तेरी हो
आतम, अलख लेत हे तेरी॥ तुं परमातम
तुं परमागम, लब्धि रिद्धि सब तेरी॥ हो०॥
१॥ सिद्ध बुद्ध हे तुं सिद्धि साधक, तुं गुन कुं
सम चंगेरी॥ तेरो गुन गोरस गुनवे कुं, मु
दित भई मति मेरी॥ हो०॥२॥ चिदानंद चे
तन तुं चातुर, सुरति सुध्ध तुं हे चेरी॥

भूलो कहा भमे या भवमें, भई अनंती फे
री ॥ हो०॥३॥ दूर नहिं आ घटमें तो हे सज,
भ्रम ग्यान की सेरी ॥ माया मोह तिमि
र छल, ग्यान कला गति घेरी ॥ हो०॥४॥
विनय स्वरूप संभारो अपनो, दुर्मति दू
र उखेरी ॥ आपही आपसों आप विचा
रो, मुगति भई अब मेरी ॥ हो०॥५॥ इति

॥ पदअडत्रीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ अब क्युं होत उदा
सी, हो आतमा ॥ अब क्युं०॥ ए आंक-
णी ॥ उदर पदर घर घेरी रही हे, क्युं तु
म आशा दासी ॥ हो०॥१॥ निसि जास
र डीन सुतुम जेसो, होत जलक मां हांसी
॥ छोरो विषम विषयकी आशा, क्युं नि
कसें भव फांसी ॥ हो०॥२॥ पूरण भई न

उनहीं जिसकी, कुरमति देत विसासी॥ जे छोरी नहीं खोजत उनकी, तो कहा भये संन्यासी॥ होवा॥३॥ कहां सुमति पर राणी, देखो हृदय विमासी॥ मुझ रहे होय माया में, अंते छोरी तुम नासी॥ होवा॥४॥ आशा करो एक विनय विचारी, अविचल पद अविनासी॥ आशा पूरण एक परमेसर, सेवो शिवपुर वासी॥होवा॥५॥इति

॥पद तेवीशमुं॥

॥सरसति पाये लागुं, मागुं वचन विलास॥विजयाणंद सूरिंदनी, लावें लाग धुं न्यास॥ सहगुरुना गुण गातां, माता होई मुज पास॥ नर हरि नारी सारी, होय घर अंगण दास॥१॥ सफल फला अन्यासी, वासी रहे सुगम॥ श्रीमंत सा

हनो नंदन, चंदन अति अभिरामा॥ महिमां
हे महिमा निधि, जस तणुं वर नाम॥ज
पथी पाप टले सब, लहियें दोलत दामा॥
रा जस तणा गुण गाजे, छाजे देश विदे
शा॥ चरण कमल आणंदे, वंदे सयल नरेस
॥ तास तणा गुण जोडुं, जोडुं मुगति नि
वेशा॥ मानव भव मुज लाहो, दीहा स
फल करेसा॥३॥ सिणगार देथनो भयो,
गायो भक्तियें भावना पुण्य अनंतां ली
धां, सीधां वंछित काज सो भागी वैरा
गी, सुंदर मुनि सिरताजा भव सायर थी
तारे, तारे जिम वड जहाजा॥ कीर्ति-
विजय उवझाय, पसाय लहि भले भा
वा गच्छपति गायो पायो, जिनवर सरसे
भावा॥ जिहां लगें चंद दिवाकर, मानस

ना मन लावो॥ति हां सगे अपयंता गुई, होले पुण्य भलावो॥५॥

॥पद चोवीशमुं॥

॥आशा॥ हम जियार कर लागे, हम जियार कर
लोगो॥जाग॥ऐसा मन में चिंता रहित होई कुशलतर
न बोल्यो॥जाग॥१॥गुरु शब्द तीर तरकस में,
करे कमान जियारी॥साथे सो रन समसेर
हमारे, तोख्यान थोडे असवारी॥जाग॥२॥रथ
डाल पचीसा कीया, ये हरे नाम लिखाया॥सत्य डाल
संतोष लगामी, नेउडा पाजड लाया॥जाग॥३॥प्रेम
प्रीत जिय अमतहीना, तुरत परात लेजा॥४॥नामप
बना लगत अजुआ, तो पुज पाकरी पा॥जाग॥४॥
हांसाल धाम पैरय कछु नांही, ताजीर करेन छोरो॥
विनयकुं हरसन कीमही जिनमत, लाग्यवि
नानन हां थो॥जाग॥५॥

॥पद पचीशमुं॥

॥ऋषभादित आदि जिन ध्यायो, चरण शरणि हियधर्यो॥अजित ढायो मनु भुज भूर॥ आ०॥२॥ सोम सुक्तित भयो, त्रिहुं जोड आनंद जर्यो॥मनु भुजहेमतपेर शीतल भरपूर॥ आ०॥३॥ घर घर मंगल छायो, बुद्धि विवेक आयो॥गुरुके चरण धायो, सुगुरु समकित पायो॥आ०॥ शानी केतु रकु चलायो, विनय पद तिहां पायो॥ नवनिधान शुभ शिववधू परणायो॥ आ०॥५॥इति

॥पद छत्रीशमुं॥

॥परम पुरुष तुंहि अकल अमूरति युंही, अकल अगोचर रूप, नरस्योंन भत है॥परम०॥१॥ तिन जगत रूप, परम वल्लभ रूप, एक अनेक तुंही गिन्योंन गिनात है॥परम०॥२॥ अंग अनंग नांहिं,

त्रिभुवनको तुं सांई, सब भुवनको सुखदा
ई, तुझ में सोहात है॥ परम०॥३॥ तुम अनं
त तेरा, ब्रह्मा हुन पावे घेरो, इंद्र ईंद्रादि
केहेरा, ताकुं नहि पात है॥ परम०॥४॥ तुंही अ
विनाशी कहायो, जीसे मेंन कछु नहीं आयो
विनय करी जे धायो, ताकुं प्रभु पायो है॥ प
रम०॥५॥ इति॥

॥पद साडत्रीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ माया मोहा ठग
णी में जानी॥ माया०॥टेक॥ त्रिगुन फांस
ले ईश्वर डोरत, बोलत अमृत बानी॥
माया०॥१॥ केसव घर कमला होई बेठी, संभु
घर भवानी॥ ब्रह्मा घर सावित्री होई बे
ठी, इंद्र घर इंद्राणी॥ माया०॥२॥ पंडित
कुं पोथी होई बेठी, तीरथीया कुं पानी॥ यो

गी घर अलूत होई जेही, राजके घर रा
नीत भायानांउ। जिनें माया हीरो उर
लीनो, जिले यही ओरी अनीत। कहत वि
नय सुनो जन लोको, ऊनके हाथ जिऊ
नीत भायानां॥इति॥

॥इति श्रीवशविलास तथा
श्रीविनयविलास संपूर्णः॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीजिनसिद्धान्ताय नमः ॥

अथ

॥ श्रीज्ञानविलासप्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग भैरव ॥ चारित्र पति श्री चारित्र
पार्श्वं, नवनिधि श्रीगृह ध्येयं ॥ चा० ॥ टे
३ ॥ भक्ति भर निर्झर गण नमित, नि
त्यं क्रमभवे यं ॥ चा० ॥ १ ॥ रितु शरघ
न वैडूर्य मणि छबि, रवि कर दीप्ति सु
शरीरं ॥ कन्दर्प मद कंदोत्कर सम वदनं, ह
सन कुंदल हीरं ॥ चा० ॥ २ ॥ नमित चनु
पूरण शशि नयनं, शांति सुधारस रू
पं ॥ अनुपम उत्कर गुण गण जलधिं,
परमानंद सरूपं ॥ चा० ॥ ३ ॥ गंभीरो

ढउरशशचि सद्गुण, युक्त वच्या मृत पेयं॥ त्रिभुव
नगतल विघ्न भुप शमनं, शिवतरु बीज गृहेयं
॥ध्याना॥४॥ पुष्प फला न्वित सुरतरु लभ्यं, वंछि
त पूरण अेयं॥ चारित्र नहि श्री संतति दायक,
पार्श्व चारित्र बिन ज्ञेयं॥ ध्या०॥५॥ इति॥

॥पद २जो॥

॥राग भैरवा॥ भोर भयो उठ जागो म
नुवा, साहिब नाम संभारो॥ भो०॥१॥ सुतां सुतां
रयन विहानी, अब तुम नींद निवारो॥ मंगलकारि
अमृत वेला, थिर चित्त काल सुधारो॥ भो०॥२॥
खिन भर जो तुं याद करेगो, सुख निपजेगो सा
रो॥ वेला बीत्यां है पछतावे, क्युं कर काल सुधा
रो॥ भो०॥३॥ घर व्यापारें दिवस चितायो, राते
निंद गमायो॥ इन वेला निधि चारित्र आदर,
ज्ञाना नंद रमायो॥ भो०॥४॥ इति॥

॥पद३१॥

॥राग भैरवी॥ मेरे तो मुनि वीतराग, चित्त मांहे बस्यौ ॥ मेरे० ॥ टेक ॥ और देव नाम रूप, रूस रो न कोयौ ॥ मेरे० ॥ १ ॥ साधन के संग खेल खेल, जाति पांति खोयौ ॥ अब तो बात फैल गई, अने सजकोयौ ॥ मेरे० ॥ २ ॥ घाति कर्म अरिसम खपाए, देहमें लख्यौ ॥ परम योग सुद्ध भाव, जायकै थित लह्यौ ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तंजूतो ग गन लाभ, भूमि शयन लह्यौ ॥ चारित नव निधि सरूप, ज्ञानानंद लह्यौ ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥पद३२॥

॥राग भैरवी॥ ब्रह्म रूप ज्योति रूप, चित्तमां संभार के ॥ ब्रह्म० ॥ टेक ॥ निर्मल जड़ो रूप निराले, द्रव्य भाग वीतराग रूप गुन-भोग परम योग ज्ञान दरश एक रूप जगत

भासकरेको ॥ब्रह्म०॥५॥ अक्षय अविचल
गुणगण धामी, परम रूप आतम रूप सिध्य
सरूप विश्वरूप जान तरणि रोचि रूप दरस
भाव भासको ॥ब्रह्म०॥६॥ परमानंद चेत
नमय मूरति, रिपु निकंद जोधकंद सुज अ
मंद स्वछंद तत्वरंग धारित नंद ज्ञानानंद
वासको ॥ब्रह्म०॥७॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग भैरवा॥ब्रह्म ज्ञान कांति तेज, आ
नंद अंग परख्यां ॥ब्रह्म०॥टेक॥ भव्य कल
संसराल, तिन लोक प्रति पाल॥ करम वर
ग रहित होय, सासत गुण लहियां ॥ब्रह्म०
॥१॥ सहज निरूपद पहिचान, शुद्ध अशु
द्ध भाव भिन्न॥ सकल परजन विभाव, दू
रथी तजियां ॥ब्रह्म०॥२॥ फटिक सम स्वच्छ

मान, विमल गुण गण निधान ॥ परम निधि चारित रूप, ज्ञानानंद जहियां ॥ अ०॥०॥३॥

॥ पद छट्ठं ॥

॥ राग बेलावल ॥ साहिब वास पहिचानिये, जनो तेहनो लखवा यह जन्या जिन जेतनु. पाहन सम ठावा ॥ साहिब० ॥१॥ ज्ञानं ज्ञेय की जेहता, ध्याने ध्येय समाया ॥ निज अनुभव घर लेखियें, कहावें स्यो रमाया ॥ साहिब० ॥२॥ वेद पुरान में कछु नहीं, नहिं कछु या को साहिनाना ॥ छेंग निधि चारित रूप मय, ज्ञाना नंद सुजना ॥ साहिब० ॥३॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग बेलावल ॥ या नगरी में कुंकर रहना ॥ राज सूर करे सो सहना ॥ या० ॥टेक॥ नहिं व्यापार इहां कोई चासे, नहिं कोई घर मांहे गहना

॥ध्याल॥३॥ तसकर पण निज दाव विचारे, लेह निहाले फिर फिर रहना॥ नारी पंच्च शीपाई सा थें, रमण करे नित कुणसें कहना॥ध्याल॥४॥ अं कलिलज जिम अरची झूरे, आखर छोग दिन केगा परना॥ यातें नव निधि चारित संयुत, छे ग ज्ञानानंद केगा सरना॥ध्याल॥५॥ इति॥

॥पद ४८ मुं॥

॥रागवेलावल॥ साधो भाई ऐसो नायक माया

॥साधो॥ टेक॥ पांच अनतक वेस पहिराया, जहु विध नाटक खेल मचाया॥साधो॥१॥ चोरासी योनि मांहे, नाना रूपें नाच नचाया॥ चवदह राजलोक गत कुल में, विविध भांति कर भाव दिखाया॥साधो॥२॥ अलख तक नायक या थी नांहिं, हार गयो कहुं कुनसें भाया॥ याते निधि चारित्र सहाये, अनुपम ज्ञानानंद पद भाया॥साधो॥३॥

॥पद नवमुं॥

॥राग वेलावल॥ अब हीं प्यारे चेतले, घर पूंछ संभारो॥ अ०॥ टेक॥ सहु परभाव तुं छांडदे, निरजो डगल सारो॥ अ०॥१॥ भगडू री तुम मत करो, नहिं परगल तुझ माया॥ पूंछ तो भोछी घणी, व्यापार वधाया॥ अ०॥२॥ गों झिन होय डर मत रहे, पग हेज हिलावो, घरमें निधि चारित गही, ज्ञानानंद रमावो॥ अ०॥३॥

॥पद दशमुं॥

॥राग येलावल॥ प्यारे चित्त विचारले, तुं कहांसें आया॥ मेरा मेरी करत है, किसकी यह माया॥ प्यारे०॥१॥ आवनो जावनो एकलो, कुगु संग रहाया॥ पंथक होय कर जगमें, जैसें लप थोत्या॥ प्यारे०॥२॥ तीसर भयो इहसें, छेग छिनमें त्याग्या॥ ने निधि चारित आदरे, ज्ञाना

नंद रमाया ॥ ४ ॥ रेखा ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू सुता क्युं इस मठमें ॥ अ० ॥ टेक ॥ इस मठका है कवन भरोसा, पड जावे पट परमें ॥ अ० ॥ छिनमें ताता, छिनमें शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अ० ॥ १ ॥ पानी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तटमें ॥ अ० ॥ सूता सूता काल गमायो, अजहुं न जग्यो तुं घटमें ॥ अ० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो खायो, खरची न बांधी वटमें ॥ अ० ॥ ३ ॥ इतनी सुनी निधि चारित्र मिलकर, ज्ञाना नंद आये घटमें ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ जिन भरा तें जेप भरी भारी ॥ जिन ॥ टेक ॥ चार दसावर जेप

डरीतमलाल लखोखकुमारी॥जि०॥फिरतां फिरतां
भयो तुं नायक, लोभी नाम संभारी॥जि०॥१॥
सहस लाख क्रोडां ऊपर, नाम कुलायो सारी
॥जि०॥जेरा पोतरा जकु घर कीना, जगमें सं
पत्त सारी॥जि०॥२॥जूरी जरची लह गयो
डेरो, पड गयो टांडो भारी॥जि०॥विन जर-
चीतें कवन संभारे, टांडेकी भई ख्वारी॥जि
०॥३॥पहुले देवी पग भे राखे, निधि चारि
त तुं धारी॥जि०॥ज्ञाना नंद पद आसरतो
जरची होती सारी॥जि०॥४॥इति॥

॥पदहतेरमुं॥

॥राग आसावरी॥योगी तेरा सूना मं
दिर क्युं॥योगी॥टेक॥जकु मकनत कर मंदि
र चुनियो, अब नहीं आसताक्युं॥योगी०॥
घातीसथ हलकर अकहने पोया, जोग सुर-

लि हरष ज्युं ॥ योगी० ॥ भसम भूत ए मंदिर ऊपर, घास लगाया ज्युं ॥ योगी० ॥ ३ ॥ राम नाम एक ध्यानमें योगी, धूनी ध्युंकी त्युं ॥ योगी० ॥ एह विचार करी भाई साधो, नय निधि चारित त्युं ॥ योगी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ६७ मुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू वह जोगी हम माने, जे हमकुं सबगत जानो ॥ अ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महेसर हम ही, हमकुं ईसर मानो ॥ अ० ॥ १ ॥ पाचकी जल वासुदेव हमही, सब जग हमकुं जानो ॥ अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोई जगमें, जग परमित हम मानो ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकलंकता हमहीं, शिव वासी ले मानो ॥ अ० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद जोगी, चिद्घन नामके मानो ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥पद पंदरमुं॥

॥राग आशावरी॥ साधो त्याग नहिं मि
लियो हम मीत॥सा०॥टेक॥ मीत जातर
घर घर लरकी, पायो नहिं परतीत॥सा०॥
जहां भडी ताहां अपनी अपनी, मतप
क्षमांभे रीत॥सा०॥१॥ संसय करतो फे
छिनालां, वल्लल डूसे नीत॥सा०॥२॥ तेउ
तसें अघ विषमें भूली, ऐसे करछिन वीतत
॥सा०॥३॥ आगम देषत लगानवि देषुं, कि
मलल लेष पग रीत॥सा०॥ तिनथी हुव अ
म निधि चारित युत, ज्ञानानंद मीत
॥सा०॥४॥ इति॥

॥पद शोलमुं॥

॥राग रामकली॥ नाना रंग गहन का
नन जिय, यार दिलारा देष तमासा॥ना०॥

देखो रंग सुरंग फूली वनराई, नित नित देख
त रहत उल्लासा॥ना०॥१॥ छोटे मोटे जहु
विघलइयर, उरम हेतु महमाता॥ पंथ सखी
सुख पवने हिलमिल, अंगो अंग भूले रंगरा
ता॥ना०॥२॥ केतेई पात फूल फूल लड गये,
केतेई पाके पाता॥ रह गये सोंख पुण वसंत
समय गत, केतेई नय गये फूल फूल पाता॥
ला॥ना०॥३॥ फिर भिर चूत पवन योगेश्वर, लख सुह
सुहडावासा॥ ईग दिन पर पर सबही चलग
ये, जिम लख जिये भ्रतासरणं॥ना०॥४॥ उ
लट पलट तइ देख्यो वनमें तुरतही भयो ठाठ
सा॥ याते नवनिधि चारिअ नंदें, ज्ञाना-
नंद सुख भासा॥ना०॥५॥ इति॥

॥पद सत्तरमुं॥

॥राग रामकली॥ बिन आसा कछा म

खेसा, पर आसा है गल की पासा॥निं०॥टेक
॥आपहि पर की आस करत है, जैसे पूर करे
ते आसा॥निं०॥१॥पर आसा जिन जि
न रउ वडियो, रह कर देख्यो धूज तमासा
॥निं०॥आसा घासि के वस कूकर, लरके ग
लि गलि घर घर वासा॥निं०॥२॥निज
आसी की आस करंता, जर पर पूरण होवे
आसा॥निं०॥येह विचार करी त्यागे साधो, प
भो नवनिधि चारित जासा॥निं०॥३॥

॥पद अठारमुं॥

॥राग रामकली॥कुण जाणे साहेब का
वासा, किहां रहता है साहिब सायां॥कुं०॥टे
क॥साधु होय केई जल में डूबे, जिम मछली
कहे जल वासा॥कुं०॥१॥ब्राह्मण होय कर
गाल जलावे, फेरे काठ की माल तमासा॥गो

मुखि हाथें होठ हलावे, तिणका साहिब ले
वे तमासा॥ कुणारा मुल्लां होय कर बांग
पुकारे, क्या कोई कहणे साहिब बहेरा॥ की
डीके पग नेउर वाजे, सोभी साहिब सुन
ता केरा॥ कुणाया कठ काठ केई मुहडो बांधे,
काला चीवर पहरे तमासा॥ छोत अछोत का
पाणी पीवे, लक्ष अलक्ष लोलनकी आसा
॥ कुणा४॥ साधुलगे असवारी जैसे, नृ
प घर नीति करे सुभ आसा॥ पंचाग्नि केई
तापतपतहे, देह आकरा सत्य परलसा॥
कुणाया॥ काठ दरव आगल केई राखे, देव
नाम परसाद जगावासा॥ घंट जालडी आप
हिं बावे, जित जित साहिबकुं हिलासा॥
कुणा॥६॥ सरवंगीले सबकुं माने, अपनी
अपनी मतिमें जकुराग साहेब सबन

ख्याल देखै, जग अनकार अवस लख्या
अरु राग दुगछा खेमकर नहिं कोई साहेब
मिलता, जगमें पाखंड सब ही कीता पर
खिच ज्ञान अंद विना नाहिं, समझे जग
में तन कोई मीतरा दुवार टारै इति॥

॥पद जोगणीरामुं॥

॥राग रामकली॥ वालो साहेबो ज्यों अ
टके घरवासा, तुज मठ निरखो साहेब वासा॥
वाचा रेखा॥ बिनु अनुभव तांकुं नहिं जाने,
देखें कैसें ठिकासा॥ वाचा॥ नहिं मानस न
हिं नारी साहिब, नांहिं नपुंसक आगम
भासा॥ पांचो रंग जाके नाहिं दिखे, तामें
नहिं गंध रसका वासा॥ वाचा॥ नहिं -
भारी न हिं हलका साहेब, नहिं ऊंचा नां
हि पिकनासा॥ शीतल ताता जाके न पा

व, अमति जंघ आगति गति असा ॥४॥०॥
३॥ कोई संघयण अके नहिं पावे, नहिं को
ई संठाण निवासा॥ अं दिसे तां ओडही सा
हिज, अंग नख परमित है असु वासा॥४
०॥५॥ सो साहिब तुं अपना मठमें, निर
जो थिर चित्त ध्यान सुवासा॥ चारित ज्ञा
नानंद निधि आगर, ज्योति रूप निकलं
क विलासा॥४०॥ पा॥ ६ति॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ अनंत जो मन कारू
सा थो, साहिबकी गति है गी न्यारी॥ अं०
॥ टेक॥ उतपाद व्यय स्व परयायें, भेउ अ
नेक धरत है पुन सारी॥ सा०॥ १॥ थिरता ए
क समय गत अके, उतपाद व्यय पाग ध्रुव
सारी॥ अस्ति नास्ति नास्ति अस्तिके

आगम मांहे द्रव्य विचारी॥सा०॥२॥ ऐसी
जात हम कुंदकुंद भनी, जिनकी मुख सुन
नांहि संसारी॥ परम नयन कर नहिं ह
म निरखी, अनुपम साद वाद गुण धारी
॥सा०॥३॥ पढी निक्षेपें सात नयें कर, सा
तें भंग समाधि संसारी॥ विधि चारित्र
ज्ञानानंद अनुभव, निहचे साहेज भणे सा
री॥सा०॥४॥ इति॥

॥पद छवीशमुं॥

॥राग रोडी॥ सुनो चिदातम मुझसें वि
चरो री, नंदनवनकी सयल करोरी॥सु
०॥टेक॥ मेरुजापको जाप मनोहर, ज
हु विध तरेताल चि र धरोरी॥सु०॥१॥
नारी सभी युत तइताल जेस्यो, कुंज
सुजडी सहु घात करेरी॥ कुमंतरी

परिकर युत शालो, आयो अंगो अंगभिरेरी॥ सुणा॥१॥सासु आठ सखीयुत आई, मनकी भोरुं भिन्न बिकस्यो री॥ परमराङ्को परिकर सघलो, आय मिल्यो मन शुध्ध विकस्यो॥सुण॥ आहव चेतन सहु निज परिवारे, वसता अनु भव वात करेरी॥ निधि चारित्र ज्ञाला नंद सायें, ज्ञान लहर पामे लालीय परेरी॥ सुणा॥३॥इति

॥पद छवीशमुं॥

॥राग टोडी॥कूर रहो तम दूर रहो तम दूर रहो री, भोसुं तो तम दूर रहोरी॥ दूणा टेक॥ एतने दिन अमने दुःख दीधुं, थारे संग कर दुःख न लहोरी॥ दूणा॥ तीन लोककी ठगनी तूंही, तुज सम न ही कोई अेह्यो कहेरी॥ भोठो जोली फिरि इय पैसे, लाड करे बहु भांत परेरी॥ दूणा॥२॥ सात रमेंतुं थाहव ताजे, पाछे गोतो देय टरेरी॥ तुज

कुटिला का कवन भरोंसा, जोसत ही तुं घात
करेरी॥ टूं०॥ ३॥ छिहां सेती तुं दूर परीओ, छेहां था
री मति नांहि लहेरी॥ चारित ज्ञानानंद रंज
वालो, अम प्यारी मोरे पास रहेरी॥ टूं०॥ ४॥

॥ पद त्रेवीसमुं ॥

॥ राग टोडी॥ तूंही पिया मन भमतो मि-
ल्योरी, और ठोर मन नांहि मिल्योरी॥ तूं०॥
टेक॥ हुं तोसुं कछु नहिं चाहुं, केवल संगें रमन
करोरी॥ तूं०॥ १॥ केवल तन मध जेहल लायो,
मोसुं प्रेमें प्रीति करोरी॥ आठ दृष्टि साजि अ
तम साथें, वात करो तम सुज चरोरी॥ तूं०॥
२॥ मनुवो सुनकर घरनी जानी, पास चसा
रे प्रीत करेरी॥ चारित ज्ञानानंद स्वहाये, वालो
चीरकृ चित्त घरेरी॥ तूं०॥ ३॥ इति॥

॥ पद चोवीसमुं ॥

॥राग जरोडी॥ प्यारे तुम चेठी ग्यान लरो
री, शांति खडग तुम तेग करोरी॥ प्या०॥१॥ उप
धरम राज लसकर तुम साथें, मोटो मंतरी सं
ग लरोरी॥ प्या०॥२॥ मोहराज मकरध्वज ग
ज पर, आयो तन जिन रूप करेरी॥ चेठी सु
त मंतरि युत जतु लसकर, रण कारण साव
धान करेरी॥ प्या०॥३॥ चालो संयम बखतर
धारी, धरम रोप धर खडग गहेरी॥ आगम
साथें रण में झूले, दुर्धर रिपुदल हनन गहेरी
॥ प्या०॥४॥ सातनो जय कर तीन पछाड्या,
आठ शोसनो घात करेरी॥ अेक अेक पर छगते
माडं, चोथो क्रोधनो घात करेरी॥ प्या०॥५॥ द
शमे सुखम लोभ पिछाडी, हूयो आरम ह
न करेरी॥ मोहराजने गजसें पाड्यो, अेक
हि हाथें घात करेरी॥ प्या०॥६॥ बजत नगारे

तेहु वलयो, तेरमी लूमें सुज वियरोरीा३॥ यी होय घडी रण लंती, यारित ज्ञानानंद वरोरी॥प्या०॥४॥इति॥

॥पद पच्चीशमुं॥

॥राग रोडी॥ मेरो पियाहे परम सन्यासी, इयन करे हे पियाजी हांसी॥मे०॥टेक॥ वरलित ईडा पिंगलामारग, सुषमना घर अलिलाषी॥मे०॥१॥यम नियम आसन अनुरंगी, भत्या हारध्यान धारण वासी॥प्राणयाम समाधि सुरंगी, मूलोत्तर सुविलासी॥मे०॥२॥रेच्य कपूरक कुंभक लोहे, जाहर मनवशकारी॥परम रंध्र मध्यगेहे पूरी, अनहद नादविचारी॥मे०॥३॥जाहर योग युगति सकु थिरता, आतम ध्यान विलासी॥पांचवरण पणतत्व सुदर्शी, परमातम गतलासी॥मे०॥ना

परमातम अनुसारे करतां, निज सहु भाव वि
कासी॥ चारितताना नंद संन्यासी, भने
तिण निज वासी॥ मे०॥५॥ इति॥

॥पद छवीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ कैसें विचार क
रे भाई साधु, दिव्य विचारें मन आराधो
॥कै०॥टेक॥ भे परथम सिध्ध गति अनुभ
वियें, संसृति विण कहो सिध्ध होय साधो॥
कै०॥१॥ संसृति चउगति भेद कहावे, तीन भे
द तीग वेद सु भनो॥ नारक तिरिजें परथम क
हियो, फिर नर नर जिन तें कैसे मानें॥ कै०॥
२॥ चउगति परथम भेद जुजानुं, नर नारी
कुण पहिले भयो॥ जीव अड पहिले कुण
कहियें, इंग विना इंग किहांसें आयो॥ कै०॥
३॥ इनकी आदि किहां कुण भाखे, आगम

छिव्य विचार प्रमाणे॥ चारित ज्ञानानंद अ
नुभव, असहु भाव अनादि जगाने॥ अ०॥४

॥पदसत्ताईशमुं॥

॥राग आशावरी॥ अद्भूत अेक अचं
भो हे जो, अजतक भनुं नहिं कोई लेओ॥ अ०॥
टेक॥ जंगल मांहे मोटो चरणो, कुपन जनायो
चासे ते पेजो॥ अ०॥१॥ छोटीसी कीडी तेहने
कातें, आठ पहर अहनिसि मन लायो॥
चालत चालत थाकत नांहिं, इति जो जल या
में किहांसें आयो॥ अ०॥२॥ कूअडी तेहनी
नहिं कहिं दीसे, शाभने कहां रागी लायो॥
सघलाइ जनने चरजो दीसें, आगल पा
छल कूंन हिजायो॥ अ०॥३॥ कीडी थाकतां
चरजो न चाले, केसो भयो हरामी हेओ॥
तिनतें चारित ज्ञानानंद हे, आप मतें रहे

तमते पेजोा॥ ॥ ॥ १॥ र्घलि॥

॥पद अठ्ठावीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ अद्भुत ओक अ
चंभो भारी, निरख समज आपो आपवि
चारी॥ ॥ टेक॥ पारावार रहित सागर
बिच, नाव ओक जिहां निरखो भारी॥ डांडी
पांच चलावे ताकुं, पतवारी ग्रहे सुखकारी
॥ ॥ १॥ चौदिसि विचित पार परंपर,-
भीतर साहब सुता सारी॥ चौदिसि लेन तर
ड फिरत हे, वासो साहब गोफल भारी॥ ॥
२॥ शैल सुनत ओर जोर साहब, भारे गगे जि
हां तस डर सारी॥ चारित ज्ञान नंद संभारी,
आनंद हरख नहे कुशि भारी॥ ॥ ३॥ र्घलि॥

॥पद ओगणत्रीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ राम राम सज भग

हि माने, राम राम को रूप न जानो ॥ राम ॥ टेक ॥
दशरथ राम कुण नगरी वासो, कहांसे आ
यो किहां जयो वासो ॥ राम ॥ १ ॥ राम राम
सहु जगमें व्यापी, राम विना है कैसे आ
थापी ॥ राम विना कहे जंगल वासा, पाछे को
ई जकी न करे आसा ॥ राम ॥ २ ॥ राम हिरा
जन रामहि राणी, राम रामहि हैरो तानिय
रटन करत है रचन रामको, कैसो रूप जता
वो वाको ॥ राम ॥ ३ ॥ जे कोई वाको रूप जता
वे, ते हि जसायो मुझ मन भावे ॥ सो निधि
चरित ज्ञानानंद, जाने आपनो राम आ
नंद ॥ राम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पदछत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योग समाधि यो
ग आधारो, आगम मांहे तत्व विचा

रो॥ योगा टेक॥ आतम परखे सार हीना रे, अ
नुपम एक नगर सुज्ञ आरो॥ योगा॥१॥ ज
में जीव अनंत रहा हे, उण समरथ ते गिण
तां भाखो॥ साधि अनंता आयु लेहलो, ब
हु विध परिणाल सिद्धि जजानो॥ योगा॥२॥
शिव नीच किं इ. नेह नांही हे, सब जन रूप
ति भाव निहालो॥ परित ज्ञानानंद संभा
लो, जिम पामो पुरवास विशालो॥ योगा॥३॥

॥ पद अेकचौशठमुं॥

॥ राग ठुमरी॥ मंदिर एक बनाया हम
ने॥ मंदिरका देखा जिस मंदिरके दश दरवा
जे, एक पुंठकी मायारे॥ जानो पंखी एक अं
तर, राज करे चित लाया॥ मं०॥१॥ हाड मां
स अरु नहिं दीसे, रूप रंग नहिं न्यारो॥ पंज
न दीसे उहसें पिछाणुं, षट रस भोगें भायारे

॥ मं० ॥ २ ॥ जातो आतो नहिं कोई देखे, न
हिं कोई रूप बतावे रे ॥ सब जग आयो तो
पण भूखो, तृप्ति कबहिं न पावे रे ॥ मं० ॥ ३ ॥
जासम पंखी तासम मंदिर, पाछे कौन बता
वे रे ॥ वह पंखी को जो कोई जाने, सो ज्ञाना
नंद निधि पावे रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग कूमरी ॥ ए तन ॥ काम करेले जो
गी, सोई योग न जाने रे ॥ ए० ॥ टेक ॥ मूंड
मूंडाया भस्म लगाया, जोगी नाम जने
रे ॥ अफसर पहेरी रंग कुं जतें, सो योगी ह
म जाने रे ॥ ए तन० ॥ १ ॥ राग वस कर पायो
जते, दुर्धर देयले मारे रे ॥ प्यार करके सो
लापि छाडे, सोई योग सुधारे रे ॥ एतन० ॥ २
॥ अमृत भावे सरव समय रहे, परम या

रिच कहावे रा॥ ज्ञानानंद लहेर मत वाला,
सो योगी मन भावे रा॥ इत॥०॥७॥ इति॥

॥ पद तेत्रीशमुं॥

॥ राग झूमरी॥ या दिलकुं नहि अनना अजत
ऊ, कैसा ध्यान लगाया रा॥ या०॥ टेक॥ अटा वधा
री भस्म लगाई, गंगा तीर रहाया रा॥ ०॥ रय
जाह आतापना लेई, योगी नाम धराया रा॥
या०॥ २॥ चार वेद ध्वनि सूत्र धारकर, आम
ए नाम कहाया रा॥ शास्तर पढके अगडे लंते,
पंडित नाम रहाया रे॥ या०॥ ३॥ सुन्नत करके
अलला अंह, सीया सुन्नी कहाया रा॥ या को रूप
न अने कोई, नवि कोई अतलाया रा॥ या०॥ ३॥
जे कोई या को रूप पहिचाने, ते हिज साच्च अनाप
या रा॥ ज्ञानानंद निधि अनुभव योगे, ज्ञानी
नाम सुहाया रा॥ या०॥ ४॥ इति॥

॥पद च्योत्रीशमुं॥

॥राग कुमरी॥ ऐसो योग रमावो सा
धो॥ ऐसो योग रमावोरे॥ ऐ०॥ टेक॥ परम
विभूति अंग रमावो, दया तीर मन लावोरे॥
ज्ञान शोधता अंतर घरमें, आतम ध्यान ज
गावोरे॥ ऐ०॥१॥ धरम शुकल दोय मुद्रा
धारो उनहोरो समस्तारो रे॥ सुल संयम ओ
पीन जियारो, मोहनानिरक्षा धारोरे॥ ऐ०॥
२॥ अतुलय प्याला प्रेम मसाला, पीओ रहे म
तवालोरे॥ ज्ञानानंद लहर में भूले, सोया
गी महवासारे॥ ऐ०॥३॥ इति॥

॥पद पांत्रीशमुं॥

॥राग कुमरी॥ कुं सहलानी भनुं धुं तु
म अहे कुं भरऊये रे॥ कुं०॥ टेक॥ भरकत भरकत
भरहुं कुरानी, तूं मत रीस चढावेरे॥ कुं०॥१॥

ऐसा ज्ञान नपुंसक जननी, मंदिर मांहि रहा येरे ॥ सघलाई मानसने तूं छले, जेहि अर्थ न्हो आवेरे ॥ हुं० ॥२॥ आस पासना अमल देखी, कुटिल भाव बनावेरे ॥ चलन सांभल मोकुं छांडे, मोरी कु रमत भवेरे ॥ हुं० ॥३॥ तूंतो निरलज्ज भयो मतवालो, थारी इकन चलावेरे ॥ अम चलन ज्ञानानंद साथे, अंगो अंग मिलावेरे ॥ हुं० ॥४॥ इति ॥

॥पद छत्रीशमुं॥

॥राग वसंत॥ योगी यासें चित्त रमायो, याकी लगति उरत कुं आयो ॥ए॥ मेरो तो योगी भालो भोलो, परम यारी मन भायो ॥ या० ॥ जे यह देखे सोई लोभावे, मतवालो लग लायो ॥ या० ॥१॥ योगी जातर घर घर फरकी, यह योगी अज पायो ॥ या० ॥ अम

ने वत्सल याकुं मान्यो, मेरो चित्त लोभायो॥ चर
ण॥ निरलोभी निकलंकी योगी, योगी योग रम
यो॥ या॥ निधि चारित ज्ञाना नंद मूरति प्राण
पियारो पायो॥ या॥ ३॥ इति॥

॥ पद ३५ ॥ श्री रागमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी छेग नारी, सतिय शि
रोमणि भाई॥ ऐ॥ रेखा रूप वंत अ नागी ल
टके, सजहिके मन भाई॥ ऐ॥ १॥ सचल ई म
नस तेह रमावे, मुनि जन शोभा धाई॥ ऐ॥
भोगी जन तिन नांहि जतावे, योगी चित्त रमा
ई॥ ऐ॥ २॥ पंडित याकुं लाड करत है, अह निसि
चित्त रमाई॥ ऐ॥ योगी सर अंगो अंग रमावे,
हाथो हाथ बुलायो॥ ऐ॥ ३॥ धन ने निरंजी मुनि मनभा
ले, ध्यान धरे चित्त लायो॥ ऐ॥ निधि चारित ज्ञा
ना नंद पायो, या नारी चित्त लायो॥ ऐ॥ ना

॥पद३८ अडत्रीशमुं॥

॥राग वसंत॥ सुण लीजे पिताजी, योगी
यासें चित्त रमायो॥ सुण॰॥ टेक॥ अह निसि यो
गीके संग जैसी, लग लग लाज गमायो॥ सु॰
॥१॥ अपने मन इयि अम से कीयो, यशोदि
रिवात फुलायो॥ सु॰॥ मेरे तो घरसें काम न
ही है, योगी पास रहायो॥ सु॰॥२॥ ईतनी क
हकर घरसे निकसी, योगी वल्लभ लायो॥
सु॰॥ निधि चारित ज्ञानानंद योगी, मिलक
र अंग मिलायो॥ सु॰॥३॥ इति॥

॥पद३९ ओगणचालीशमुं॥

॥राग वसंत॥ में कैसे रहुं सखी, पियाग
यो परदेशो॥ मेंं॰॥ टेक॥ रितु वसंत फूली वन
राई, रंग सुरंगीत देशो॥ में॰॥१॥ दूर देश गये ला
लची बालम, कागल ओ न आयो॥ में॰॥

निर्मोही निस्नेही पिया मुझ, कुण नारीसंग
रायो॥मे०॥२॥ वसंत मासनी रात अंधारी,
कैसें विरह जुलयो॥मे०॥ छतने निधि यारि,
त्र पुत वल्लभ, ज्ञानानंद घर आयो॥मे०॥३॥

॥पद चालीशमुं॥

॥राग वसंत॥ मेरे पियाकी निशानी मोरे
हाथ न आवे॥मे०॥ ऐसा रूपी कहुंतो रूप न दीसे,
कैसें करी जतलावे॥मे०॥१॥ जोति सरूपी तेह
पियाकूं, करम बंध कैसें लावे॥मे०॥ सिद्धस
नातन अपलंगने जिनसन, कैसें पियारसुहा
वे॥मे०॥२॥ वेदपुरानमें नहिं कहि दीसे, किण
परभाव रमावे॥मे०॥ यातें व्यारित ज्ञानानं
दी, अेकहि रूप कहावे॥मे०॥३॥ इति॥

॥पद अेकतालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ क्यों कर महिल जनावे

पियारे॥ क्यों॥टेक॥ पांच भूमिका महल ब
नाया, चित्रित रंग रंगावे॥ क्यों॥१॥ गो
खें बैठो नाटिक निरखे, तरुणी रस ललचा
वे, एक दिन जंगल होगा डेरा, नहिं तुम संग क
छु आवे॥ क्यों॥२॥ तीर्थंकर गणधर बल
चक्रि, जंगल वास रहावे॥ तेहना पण मंदिर
नहिं दीसे, थारी कवन चलावे॥ क्यों॥३॥ ह
रिहर नारद परमुख चल गये, तूं क्यों काल
भुलावे॥ तिनतें नवनिधि चारित आदर, ज्ञा
नानंद रमावे॥ क्यों॥४॥ इति॥

॥पद छेंतालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ क्या मगरूरी जतावे पि
यारे॥ क्या॥टेक॥ अपनी कहा चलावे॥ पि०
॥टेक॥ कवन देश कुण नगरीसें आया, कहां
तुम वास रहावे॥ पि०॥१॥ कहा दिनस तुम

लागे मगडू, उिस जिय कालजितायो कहा अने
डा मफसह हगा, कैसो विचार रहावो पिं०॥२॥
चार दिनांकी चांदनी हगी, पाछे अंधार जतावे
॥घर घर फिरतां थाराकि मानस, अंगुलीयां
दिखलावे॥ पिं०॥३॥ तिनतें तूं मगडूरी छांडी,
७ग सम समता लावे॥ तो नव निध चारित्र
सहायें, ज्ञानानंद पद पावे॥ पिं०॥४॥ इति॥

॥पद्द तेंतालीशमुं॥

॥रागसारंग॥ जिन वालम कहो कुण गति
माहरी, वालम हीं गति नारी॥ जिं०॥टेक॥ सु
नो सखी तुम वेग मनावो, सखियां लावो नि
हारी॥ जिन०॥१॥ चांदनी रात मकर ध्वज शर
जाय लग्यो दुःखकारी॥ विरह व्यथायें जम
ने जिनवर, सुख नहिं पावे सारी॥ जिन०॥२॥
७ल जिन मछली सम रल चलती, विरह अनल

भई भारी॥ इतने ज्ञानानंद वालम आवे,
चरित संग सुखकारी॥ जिन०॥३॥ इति॥

॥पद चुमालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ सेठ जेठ सारंग महलमें
॥सेठ०॥टेक॥ सेठानी मोह नरपति जेठो, जेरा
चार अनोपमें॥ सेठ०॥ मिथ्या मकरध्वज लघु
भाई, व्यापारें गणि क्रोपमें॥ सेठ०॥१॥ चीयी
हार जिछात जिछाई, सुखे करे नवरंगमें॥
सेठ०॥ कनक रतन नां भूषन पहिरयां, चोके जे
से रंगमें॥ सेठ०॥२॥ भोजन करोसें स्याही राजी,
सेठ कहलावे नगरमें॥ सेठ०॥ चातें लोक कमा स
कु राजी, परजी मोली कुठारमें॥ सेठ०॥ तेह
ने कागल करको दीधो, भया निचिंता पलकमें,
सेठ०॥ सहस लाख कोर डानां कागल, लेवे देवे
जलकमें॥ सेठ०॥४॥ च्यार दिशा पर हार करी कि

न, त्यारी स्वराडू परदेशमें॥ सें०॥ सेठ कहे हम
करोड पति हे, हमसम नहिं कोई देशमें॥ सेना
॥२॥ जब तब सहु लिन मांगन आया, डी
यो दियालो मगनमें॥ सें०॥ जलतो शेठ यो
गी भये त्यागे, माल दीयो सहु सुजनमें॥ सें०
॥३॥ जैसे तेसे जंगल चल गये, कबही नहिं छंग
जारमें॥ सें०॥ हार सुजन कोई नहिं साथे,
तई जरा जी वारमें॥ सें०॥४॥ अेह विचार
करी त्याई प्यारे, पुण्य पाप लीयो हाथमें॥ से
॥ तिनते नवेतिधि चारित्र अविचल, ज्ञानानं
द लयो साथमें॥ सें०॥५॥ इति॥

॥पद पीस्तालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ साहिब हे तेरे संगमें,
सा॥टेक॥ जाके दरव अपरिमित होगा, कब
हि न छूटे संगमें॥ लेनां देनां कछु नहिं ज

के, लोगो अहनिसि रंगमें॥सा॰॥२॥जिम
जिम लोगे तिम तिम चाखे, ज्युं लरके मति पं
गमें॥मृग मद गंधे मृग सम लटके, घट अनु
भव नहिं रंगमें॥सा॰॥३॥निर्मल गंगा नीर
न लायो, झारी कुण पीवे वारमें॥तिनतें नि
ज घर चारित संयुत, ज्ञानानंद लेयो ठाठ
में॥सा॰॥४॥इति॥

॥पद छेंतालीसमुं॥

॥राग केरबा॥ सईयां मुज गेंद मंगा
यरे, गेंदा की आछे जहारा जें प्यारा॥प्यार
मोह नारी मिलायरे, प्यारों की प्याही है मिल
पायो॥टेक॥ रूप वंत मोह नारी मिलायरे,
उत्तम कुल गुण धाय॥प्या॰॥१॥पहिली नारी मु
ज लटकायो, पर घर रमवा चालायो॥प्या॰॥तेमु
ज दूता पण कहलायो, जग जन कहेते छि

नानाविधनारी सुंदर सीनी मोहे नारी मिले
जे, तो जम चित्त सुज नावियाविधा छेत
नी सुनकर जायक भंतरी सुमतिनी मेल
कराय॥१॥४॥३॥ घरनी संगे कराज घरीने,
अंग रहे लपटायो॥१॥ चारित्र आदर ज्ञा
नानदें, नवनिधि सहज लहायो॥१॥५॥

॥पद सुडतालीशमुं॥

॥राग केदारो॥ किस मिस नवी पणि
हार डूबे, पर आसन योगीड॥१॥ जे चालत
कुण मिस पियांकुं मनाय, मिलियो पिउ पर
देशीड॥१॥ कुणारेशा देश नगर नाहिं जनुं न
ओ, नत पातन रुनाय॥१॥ मि॥२॥ नाम गो
त नजो कछु नांहिं, केसें निरखुं नायाा मि०
॥ निर्मोही निःसनेही पिया मुज, कुणरी
तें समजयो॥१॥ मि॥३॥ मोसें पहेलें जाड क

रथ्यो, मुझ जिन जिन न रहाया। मि०॥ अ-
जतो मोसें रूसक पाल्यो, बात न पूछे आ-
या। मि०॥३॥ विरह व्यथायें तन मुझ झू-
रे, जिएसुं अधिकें धाया। मि०॥ पिउ संय-
म सुख समता साथें, ज्ञानानंद रमाया।
मि०॥४॥ इति॥

॥पद अडतालीशमुं॥

॥राग केदारो॥ मेरे लोलें नवाज, उलक
सेझी सयरकुं ले चलो॥ए॥ जे चालो॥ मेरी
प्यारी सुनाहे, अजतो तम हमें संग चलो
॥ए॥ मे०॥२॥ हाथ घोडे पर असम कियो-
जन, तम पण चालो प्यारी संग अदीन
॥ मे०॥३॥ अब पण नांहि अज हम हाथ,
दीस नहीं प्यारी चलो हम साथ॥ मे०॥ त
म जालर अम म दुःख जहु दीन, प्यारी-

मत छांडे अमने दीजा मेणा३॥ नारी कहे परो नरे निगोद, थारे मारे कुण करे वातनि ओद्दा मेणा अम आज थासुं किहां थारे सं ग धूत, तुं मूरख शिर मोल कुमूता॥ मेणा४॥ पतनी सुनकर नयोते शिहास, कुटिला आज जानी कुण करे आस॥ मेणा तिन अवसर नही निधि चारित्त, ज्ञाना नंद मूरति लखे सुप चित्त॥ मेणा५॥ इति॥

॥ पद ओगणपचाशमुं॥

॥राग केहरवा॥ अेक अचंलो मुज मन वशियो॥ अे॰॥ टेक॥ चालतो हालतो डुंगर दीठो, तिचमें अेक सिखर ऊचो वसियो॥ अे॰॥ १॥ छोटा पांच शिखर नसुं पण दिशी, नाना तरु विण मंडित रहियो॥ अे॰॥ सरव जाल सागर विच रहितो, कवन प

लावे ते अम कहियो॥ ३॥ रा० मानस नहिं
कोई तेह मांही से, ध्रुव अध्रुव पणो तेह में र-
हियो॥ ४॥ डुंगर जिय नव निधि चारित्र
युत, ज्ञाना नंद सूरति गुण गहियो॥ ५॥

॥पद पच्याशमुं॥

॥राग कहेरवा॥ छोरी जामनकी छोरी
जामनकी, अंगियां कुं अंतर न आये कुं अ
ली॥ हाथमें पिंजरा गुलाब की छडी, ओर क
मर में घुरती जडी॥ जे प्याला मेरे ओले पि
या, मोरे ओले पिया, मो पर लहुंडा डाल कें
चले॥ मे०॥ टेक॥ मेरेहि रहय जिय राजती,
कछु नहिं मागुं तो सुं रति॥ मे०॥ मो सें पिया
तम काहे उदास, हुं थारे छग चरणा री दास॥
मे०॥ १॥ ओ थारा मनमें रहि ओसी हुंस, पे
हलेहि जनाति कराति रूसा॥ मे०॥ विन जाल

म मेरो विरहमें काल, ज्यों कर वीते काल नि
काल॥मे०॥२॥ अजरादिक पति गति मति
अन, अनुपम शील भूषण गुण आन॥
मेरे०॥ चेतनने नवनिधि चारित्र रंग, मिल
गये ज्ञानानंद सुरंग॥मे०॥३॥

॥पद अेकावन्नमुं॥

॥राग सोरठा॥ प्रीतके कोई फंदें पडो ना॥
ऐ चाल॥ वालम नारिके फंदें पडो ना॥चा०॥
टेक॥ उत्तम नारीके फंदमें पडि हो, कोरि जत
न मन राखो रहे ना॥चा०॥१॥ नारी काली
नागन सरिखी, देखत चित्त डमाडोल करे
॥चा०॥ नारी संयोगें अरमदत्त परमुख,
नरकें दुरधर दुख्ख परे॥चा०॥२॥ आद्र
कुमर मुनि नारि संयोगें, वरस चउवीस
गिहिवास कियो॥चा०॥ नारीकी प्रीतें ई

नलव परलव, सुज न रहे पग जंग लयो ॥ वा०॥ ३॥ उत्तम नर छेल नाहि जतावे, ध्यान धरे चल मांह रहे रे॥ वा०॥ निरमल निरगुन आतम ध्याने, सुख समाधि लाव लहे रे॥ वा०॥ ४॥ तिनतें वालम तम पण समजो, कुटिलानी प्रीतडी परिहरो रे॥ वा०॥ मोसुं तो निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद सुज रमण करो रे॥ वा०॥ ५॥

॥ पद जावन्न मुं॥

॥ राग सोरठ॥ देस माहरो पियाकुं जताय दीजे रे, मेंतो लोगी लगनियांकी वसा॥ देशाजे ध्यान॥ कोई सजी पियाकुं जतावे री, मेंतो जोगी वालम पासा॥ जोगा टेका॥ सारी दुनिया पूछीयो, वालमजीको देश कोईकी साथे नाहिं जन्यो, जे आगल पहुंते देशा॥ जोगा॥ १॥ ज्ञानी ज्ञानी सज कहे, मोकुंन दीसें ज्ञाना॥ मेंतो आयो न

जकुं, पिया रूप कहे मात॥कें०॥२॥ सज्जन
जैसो जो मिले, पियाकुं कागल मेल॥ कागल वां
ची मुज लेजे, पाछो उत्तर भेज॥कें०॥३॥ जब
लग कागल तेहनो, नहिं आवे जम पास॥ तब
लग झूठी बात सहु, नहिं पद मोकुं आस॥कें०
॥४॥ इतने जेह विचारमें, निधि चारित के सं
ग॥ आजे ज्ञानानंद पिउ, रमण करे सुख रं
ग॥कें०॥५॥ इति॥

॥पद त्रेपनमुं॥

॥राग सोरठा॥ मैं तो कैसे पियाकुं सेवोंरी,
पिया मेरो योगियांको वेस॥मैं०॥टेक॥ मैं तो
कन्या भूपकी, जाने सकल विज्ञान॥ घरसें निक
सुं कुण परें, कहो सखी चतुर सुजान॥मैं०॥१॥ धा
स तिय सिरो मणी. अम जिउंद, जरभ प्यारी शि
र मोल॥ दीसुं नहिं जग लोकमें, माहरो मोलज

मोखा॥ मेंगा॥२॥ जिन परख्या उत्तम पुरुष. ध्या
न धरे दीन रात॥ तेपण दरशन मांहरा, दरश
न जहे तिस मात्ता॥ मेंगा॥३॥ मेंतो मन गमतो
कियो, छांडी लग जन वाहा॥ दूरमत रहे वालमपि
ने, पसरे लग जस वाहा॥ मेंगा॥४॥ इन्या अहवि
चारतां, आय मिले तत काला॥ ज्ञाना नंद योगी
पिया, चारित युत लगपाला॥ मेंगा॥५॥ इति॥

॥पद चोपन मुं॥

॥राग सोरठ॥ कोई योगी हमकुं जनेरी,
मेरो कोई नामकुं जनता कोन॥ टेक॥ मानस न
हि हम नारी नाहि, नाहि नपुंसक जनता॥ कोई०
॥१॥ दादा आजा नहि हम काका, ना हम कुण
कु जायरा कोन॥ नाना मामा हम नहि मोसा,
कोइसे नहि आलाप॥ कोन॥२॥ बेटा पोतरा
गोत्रक नाहि, नाती दुहिता न जनता॥ दादीया

ची बेटी पोती, ना हम नारी मा ना॥ के०॥३॥
गुरु चेला नहिं हम काहू के, योगी भोगी नांहि॥
के०॥ पांच भूतमें नहिं हम कोई, नहिं कोई कुल ठां
ह॥ के०॥४॥ दरशन ज्ञानी चिद्घन नामी, शि
व वासी हम अना॥ के०॥ चारित्र नवनिध अनु
पम मूरति, ज्ञाना नंद सुअना॥ के०॥५॥ इति॥

॥पद पंचावनमुं॥

॥राग सोरठा॥ जडि हगा अेरे तूं जडि ह
गा अेव प्यारी तूं जडि हगा अेवा॥ टेक॥ तेरे
अंतर डूंगर हरि लिये, रही कुंज सखी में अ
पार॥ हांसी खूसी अरु नातरां कीयां, तूं कांई
भूलि गवार॥ तूं जडि०॥१॥ कपडी सोटे तेरे अं
तर, माहरो कीयो भोला॥ धूंढ३ योगी यति
सन्यासी॥ मुंडित कियो तें रोला॥ तूं जडि०॥
२॥ मुंहगी आंवी कानन झाडी, अरु विध वेख

कराया॥ कपट करी सहु पाखंड कीया, जन जूठ्यो
मन ल्याय रे॥ तूं जडिंगा॥ आधर घर लटक्यो तेरे
साथें, पोतें पाप लगाया॥ जग तूं ग्रह न जो से भोखुं
तुं कपटी नी छिपजाया॥ तूं जडिंगा॥ २॥ जैसो दे-
खी ल्यो हूं उदासी, निर्धि चारित्र लहाया॥
ज्ञाता नंद चेतन मय मूरति, ध्यान समाधि
लहाया॥ तूं जडिंगा॥ ५॥ इति॥

॥ पद छपन्नमुं॥

॥ राग मल्हार॥ प्यारे साहेब शुं चित्त

लावो रे, साहेब दूर कहावो रे॥ प्या०॥ टेक॥ साहेब जेह
छेह जगव्यापी, नहि कहुं नेह जणावे रे॥ प्या०॥ १॥ जेह
ए साहेब नेह जणावे, तेजपुंज जग पावे, पारसनाथ
कहे कोई ए जरमा, विष्णु शिव कहावे रे॥ प्या०
॥ २॥ ध्यान ध्येय एग पारस, रूप ज्योति रूप
जरम लावो॥ केवल ज्ञानी ज्ञानीते विष्णु, शि

यवासी शिव भावैरी।ध्याग।३।भेति रूपसा
हज तो ईगही, तिनसुं ध्यान लगावो। लिधि
धारिज ज्ञाना नंद भूरति, ध्यान समाधि स
मावोरी।ध्याग।४।ईति।

।।पद सत्तावन्नमुं।।

।।राग मल्हार।। देखो पिया आगम लहवेरी
आयो, नाना भूषन लायो।।देखा।टेक।। विनय
कनकनो धाट बनायो, संयम रतन लगायो।।
निरमल ज्ञानको हीरक जिनमें, दरशन मानक
लायो।।देखो।।१।। नायक वैडूर्यनी पंगति मौक्तिक
ध्यान लगायो।। सुमिति गुपति नीलम विद्रुम
जिहां, शेष तत्व कहलायो।।देखा।।२।। ओ सहु भू
षण मोल अमोला, निरंजन चित्त लो लायो।
।।हरषे लिधि धारित निहालो, ज्ञानानंद र
मायो।। देखा।।३।।ईति।।

॥पद ज्ञानवन्तमुं॥

॥राग मल्हार॥ज्ञानकी दृष्टि निहालो वा-
लम तुम अंतर दृष्टि निहालो॥वा०॥टेक॥ बा
ह्य दृष्टि देखे सो मूढा, कार्य नांहि निहालो॥घर
म धरम कर घर घर भटके, नांहि धरम दिखा
लो॥वा०॥१॥ बाहिर दृष्टि योग वियोगें, होत
महा मत वालो॥ अपर नरनिम मद मत वालो
सुज पिछान निहालो॥वा०॥२॥ बाहिर दृष्टि
योगें भविजन, संसृति वास रहानो॥ तिनतें
नवनिधि धारित आदर, ज्ञानानंद प्रमानो॥
वा०॥३॥इति॥

॥पद ज्ञानगुणस्थानमुं॥

॥राग मल्हार॥ज्ञानकी दृष्टि विचारो, सा
धो नांही आतम दृष्टि संभारो॥ सा०॥टेक॥
अनुक्रमें शुध्य ज्ञाने अनुभव, ज्ञेय सकल सु

विचारो॥ ज्ञाने ज्ञेयकी ओउता आरु . अंधिकार
तम सुं निवारो॥सा०॥ ४॥ ज्ञान दृष्टिकुं अंतर
आवे, सुद्ध रूपि रूप पछियाना, अंतरातम
ज्ञानातम आवें॥ होय परमातम जनो॥ सा०॥
५॥ परमातम ते निःकुं गुन भोगी, धारित ज्ञा
न अज्ञानोपज्ञाना लंद चेतन मय मूर्त्ति, आ
नंदभाव सुभनो॥सा०॥ ६॥ इति॥

॥पद्द साठमुं॥

॥राग मल्हार॥ अनुभव ज्ञान संभारो,
साधो भाई मत अंडत हठ वारो॥सा०॥टेक॥
ज्ञान विना जे किरिया मांजे, अंध नर सम भर
न डोले॥ आगम मांते देश आराधक, सर्व वि
राधक बोले॥सा०॥१॥ किरिया छांडी ज्ञान कुं
माने, पंगुल नर सम जनो॥ सरव आरा
धक, दिव्य विचारें, देश विराधक मानो॥सा०

शाति नतें ज्ञान सहित जे किरिया, करतां क
रत सारो॥ जिम अंध पंगुल दोनुं मिलकर, व
नसें निसरे सारो॥ सकल शाति नतें अनेकंतम
त पक्ष छांडी, अंतर भाव विचारो॥ अनुप
म नव निधि चारित्र संयुत, ज्ञाना नंद सं
भारो॥ सा०॥ ३॥ इति॥

॥ पद अेकशो ७ मुं॥

॥ राग बिहाग॥ सूनो सखी मोकुं सूर
भयो॥ सु०॥ टेक॥ बहु वासर सें विनय क
मायें, अंगें दुःख रह्यो॥ अेक दिन मज्जन स
नान करी अम, भूषन अंग रह्यो॥ सु०॥ १॥
रंग कसूंबा चूनडी पहिरी, पांयमी चरत रह्
यो॥ छग योगी मतवालो आयो, मोसें लग
ति लह्यो॥ सु०॥ २॥ दिन भर मोसें गीत ग
ायो, सांजे नाच नच्यायो॥ रंग महल जिय

सेजें पोढी मोने रंग लालच्यायो॥ सु०॥३॥ त-
न मय अेकंत अंगे लपट्यां, रयणें नींद विहा-
यो॥ जागही पण हसी होडी आछे, मोकुं तो म-
येकायो॥ सु०॥४॥ ओर भयो उठ आग्यो यो-
गी, ना अनु चिग मायो॥ सखि कहु स्वामिनि
कुमलानी, मौन करी सर मायो॥ सु०॥५॥ तिन अ-
वसर निणही तिहां आली, हसकर करयत ला-
यो॥६॥ तें निधि चारित नित्य साथें, ज्ञाना नंद
अेलायो॥ सु०॥७॥ इति॥

॥पद ४८ मुं॥

॥राग विहाग॥ मेरो पिया सखि हेज
मनायो॥ मे०॥१॥ पिया विना रंग महेलजि-
य, सूनी सेहेज रह्यायो॥ आन पान दुःख दाय-
क मोकुं, ज्युं उर विष समायो॥ मे०॥२॥ शो-
ल स्रृंगार जे विरह व्यथायें, कैसें रयण वि-

लायो॥ अंग अंग छिन भंगुर माफरो, तैसें उ
ठुं पिन लायो॥ मे०॥ २॥ ग्रीतमें चारित भित्तके
संगें, ज्ञाना नंद पिया पायो॥ ग्रीषम तापें
हिम ज्युं जरे मन, सेज धरी मरप ऊायो॥ मे०॥ ३॥

॥ पद त्रेशठ मुं॥

॥ राग बिहाग॥ तुं जागूरा ने क्युं मारे मूढ॥
टुं०॥ टेक॥ जागो लोगो हम जाजूंगे, नहिं क्यु
ई भने गूढा॥ जाग॥ मांहे जेलें अहनिश, यात
विचारो मूढा॥ तुं०॥ १॥ जेसन भिस छोरो थारा
पासें, रमण करे पिल जोसा॥ तुं कुसला ई बि
त्य मद शोधे, छेत युत करे कमडोला॥ तुं०॥ २॥
निश्चय निर्धन नहिं तुझ सरीजो, नहिं क्यु ई मा
ने निठोर॥ ई तने चारित ज्ञाना नंद, छोरो
लियो पित्त ठोर॥ तुं०॥ ३॥ ई ति॥

॥ पद चोशठ मुं॥

॥राग जिल्हा॥ जग गुरु निरपेख होन
दिखाया॥ निगोद॥ अपना अपना हठ स
बु ताने, कैसें मेल मिलाया॥ वेद पुराना सब
ही थाके, तेरी कथन न पाया॥ जग॥१॥ सब
जग बिन गुरु ताके कारन, मद गज ऊपर
धाया॥ ध्यान ध्यान कछु जाने नाहिं, पोतें
धर्म जलाया॥ जग॥२॥ चोर चोर मिल मु
लकनें लूंट्यो, नहिं कोई नृप दिखलाया॥
किनके आगल जाई पूकारे, अंधो अंध प
लाया॥ जग॥३॥ आग में देखत जगनविति
रखुं, मन गमता पेख लाया॥ तिनतें मूरख ध
र्म धर्म कर, मत जूठे मन लाया॥ जग॥४॥ छेन
कारण जग मत पेख छांडी, निधि चारित्र ज
गाया॥ ज्ञानानंद बिन त्यारें निरजन. जग
पाखंड लखाया॥ जग॥५॥ इति॥

॥ पद पांसठ ६५ ॥

॥ राग जिल्हा ॥ जग गुरु मूरख जगत जना
या ॥ जना ॥ टेर ॥ मूरख मूरख जकु जो जग जन, गुरु
पंडित केई जया ॥ पंडित मूरख मूरख जकु जन दी
से, जग मतलब जकु त्याया ॥ जग ॥ १ ॥ पंडित
पंडित नहिं कोई जगमें, कुजहां कोई जनाया ॥
शिष्य विचारी तेहुनें लाभे, संस्कृति आलप गिना
या ॥ जग ॥ २ ॥ तेहुकुं दर्शन जगमें दुर्लभ, ते तारक
जग मांहि ॥ तिनतें नवनिधि यारित लावे, ज्ञाना
नंद अथाह ॥ जग ॥ ३ ॥

॥ पद छासठ ६६ ॥

॥ राग रामश्री ॥ निरपेक्षता मोकुं लागे
पिया तमा ॥ निरा ॥ टेर ॥ पक्ष पातमें घर घर लट
की, नहिं निरपेक्ष दिजलाई ॥ पि ॥ १ ॥ संयोगी सं
योग नजीनी, योगी योगन माई ॥ पि ॥ २ ॥

संन्यासी संन्यासन कीनी, ब्राम्हण ब्राम्हणी
साधो॥पि०॥ राम सनेही राम की प्यारी, यतिग
ण यतिनी साधो॥पि०॥ आपने आपने मत
पंथ गहेला, सहु दुनिया जहु साधो॥पि०॥ पण भ्र
माणुं कोण हे साचो, अवनी तो भरमा साधो॥पि०
॥ऊ॥ दिव्य विचारे निज अनुभवतां, जग पाखंड
दिखा साधो॥पि०॥ निधि चारित्र अरु ज्ञाना नंदनो.
विमल वचन सतसाधो॥पि०॥७॥ इति॥

॥पद स. ८ आठमुं॥

॥राग रामग्री॥चाल म वचन सुहा साधो॥पि
॥ आगम वाणी पक्षपात नहिं दिव्य विचारे. नि
ज अनुभव दिल साधो॥पि०॥ ऐक्षिय सुज विर
माण यति कहिये, दशायति धर्म धरा साधो॥पि०॥
भव और विगन संवेगी कहिये, योग धरण ते यो
गी॥पि०॥ चारित्र भाव संन्यासी भनी, जरा

मन परम गुण लोभी॥पि०॥यासों हित रमणते
रामका प्यारा, अंकूप सहु लाछौ॥पि०॥ निधि
चारित्र ज्ञानानंद अनुभव, ध्यान समाधि सु
हाछौ॥पि०॥३॥ इति॥

॥पद अडशठमुं॥

॥राग रामग्री॥ नारी प्रेम निवारो साधो
नारी कुटिला नारि निवारो॥सा०॥टेक॥ कुटि
ला नारी योगें साधो, तुम गति व्यश लिखी रे
रो॥सा०॥ते तुम मोह मद पान कराई, ऐनरीत
कलह विसेरो॥सा०॥१॥ निर्भर पण अेह नी
थाह न पामे, नूपर पंडिता जाणो॥ ईशाणीके
पगतल लोटे, ईशादिक परमाणो॥सा०॥२॥
नारी प्रेम विसूधे ढोलो, नहिं ज्युं ई समळे थे
जो रास॥सा०॥ तिनतें नवनिधि चारित संगें, ज्ञा
नानंद में जेलो॥सा०॥३॥ इति॥

॥पद अोगणोतेरमुं॥

॥राग रामग्री॥ नारी प्रेम लगायें साधो
भाई, नानी नारी रमायो॥ सा०॥टेक॥ प्रेम सं
योगें योग लगायो. सकल धर्म्म शुभ लायो॥
सा०॥ निज परमातमने देखे योगी, क्षण भर
संग लपटायो॥ सा०॥१॥ अविनाशी अकलंक
ना॥ तुम गुन नहि शुभ आयोरो॥ सा०॥ जड
पुद्गल धन आवरे न्यारा, अेहनी ममता वा
रो॥ सा०॥२॥ महोटा सहु योगी पण वंछे. अेह
नो संग सुखकारो॥ सा०॥ निधि चारित ज्ञाना
नंद प्रेमें, अेस नारी प्यारो॥ सा०॥३॥ इति॥

॥पद सीतेरमुं॥

॥राग रामग्री॥ अनुभव योग रमावो
साधो भाई निज घर अंतर लावो॥ सा०॥टे
क॥ मेरा तेरा क्या करता है, नहिं कछु तेरा ला

चो॥सा०॥जगजन किरिया कहा दिखलावे,
कहा जगजन समज चो॥सा०॥१॥ निज गति
ज मत पंथ हठता वारो, अंतर भाव विचारो
॥सा०॥ हाला हल अज्ञान निवारो, ज्ञान
सुधारस धारो॥सा०॥२॥ तत्व विचारें प्रेम
लगावो, निज गुण विमल निपा चो॥सा०॥ न
व निधि चारित प्रेमें आदर, ज्ञानानंद रमा
चो॥सा०॥३॥ इति॥

॥पद अठोत्तेरमुं॥

॥राग जंगलो॥ तुम साजि निरजोर
जोर्ग, सोतडी लेगई अम वालम चणतुणारे
॥आगें आगें पिया चलत है, पाछें सोत
डी चाली दासी पण छे तेहनें साथें, कुटिला
चित्त लोभाणी तु॰॥१॥ अमने लक्षण एह
चो दीसे, वालम गये नरमाणी मोह भूप

तिउं भलें भट ज्यों, भज नहिं निउले आणंद॥ तु०
॥राग क्रोधादिक तेहने रणधाला, छोट विषय
दुःख दाणं॥ तेहने चंडीहि सि साल जिसनाहे,
अहो निश लंपट सांणं॥ कुमता दासी युत दु
रित्या तिन पासें, रमण करे चित्त लाणं॥ मदिरा
पानें ते मतवासो, विकथा चउं भत लाणं॥ तु०॥
४॥ ग्रहक व्यापक लोगें लंपट, सुख विलास सु
हाणं॥ संस्कृति संग सकु अपनो जने, विगमे
डाल साद णं॥ तु०॥५॥ धन अवसर निधि चा
रित्र निरखे, ज्ञानानंद सहाणं॥ लोसें पंजीश
दिखत मासा, गुण संवेग रमाणं॥ तु०॥६॥ इति॥

॥पद ७० होत्तेरमुं॥

॥राग रगालो॥ चीरव चारोरे जाणं,

सांभल स्वामिनी वाणी सजी कहां चीना॥
टका समता सजी पियु निरंजन चासी, आ

गम मंत्री त्याणे॥ कुंवर च्यार सुभट संग लेई,
काम काम निरखाणे॥ धी॰॥१॥ निरखत निर
खत मोहके चोके, आणे गुपत रहाणे॥ आठ स
खिये च्यार सुभट युत, तेहने पासें ठाणे॥ धी॰
॥२॥ आगम मंत्री गुपत रहीने, अवसर लाधन
नाणे॥ अरजो अपनो सविचार, ततपर कारज ताणे॥
धी॰॥३॥ मोहना परिकर आगम निरखी, सघ
लो चित्त चमकाणे॥ धर्म रायको परिकर निरखी,
नाठा सहु डिकताणे॥ धी॰॥४॥ सुमति आगम
मंत्री साथें, चाल्यो निकसाणे॥ हरखें आव्यां नि
ज घर मांहें, राणी मेल कराणे॥ धी॰॥५॥ तिन
अवसर निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमा
णे॥ अनुभव प्याला प्रेम मसाला, रंगें पान करा
णे॥ धी॰॥६॥ इति॥

॥पद तहोंतेरमुं॥

॥राग बंगलो॥ तुम किहां चाल्योरे सांई, तुम
सांथें हुं चोगन भई आज॥तु०॥टेक॥ तेरे कातर
हम घर छांडी, थांरे संग चित्त लाई॥किन पर
हमने छांडिके चाले, कैसें प्रीत लगाई॥तु०॥१॥
किन कारन अमने दुःख दीनो, कोहुं घर मूकाई॥
घात विस्वास करे कहा मोसुं, कुणने पुकारुं भाई
॥तु०॥२॥ सांई कहे अम घरकी चाही, रीत पुरा
नी भाई॥ जबलग तेल दिपकु मां बाती
तबलग अम तम भाई॥तु०॥३॥ चेतनी कहकर सां
ई चाल्यो, अपने ठाम सुहाई॥ अनुपम नवनिधि
चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमाई॥तु०॥४॥ इति॥

॥पद ७९ मोतेरमुं॥

॥राग बंगलो॥ मुनि तम निरखोरे भाई,
अति भाव नत भाई॥टेक॥ ढोले कुई गंगा निर पखा
ले, कासी ऊतरण जाई॥विविध भांत कर मह

नतकीनी, तोपण स्थित नहिं भये॥मुखाधा ड
त्तीनी तिहां शुध्धि नहिं थावे, नहिं औषधगु
ण लाये॥ अति रंग तहनो नहिं पलट्यो, कहा करे
चतुराये॥मुखा०॥तहनी किरिया सघली कोकट,
ज्ञान कोकरता लाये॥तिन कारण निधि संयम
अनुभव, ज्ञानानंद रमाये॥ मुखा०॥ ६॥

॥पद पच्चीसमुं॥

॥राग कंगलो॥ अनुभव लावोरे योगी, नि
जघर मांहि रमावो॥ अ०॥ टेक॥ अनुभव ज्ञान
जगतमें दुर्लभ, अलप संसृतिनें भयो दुर्ल
भ्य अभव्य जयने, अनुभव नांही लहाये॥
अ०॥ १॥ कडवी तुंबडी ओसो भरडी, अडशठ ती
रथ न्हाये॥ तोपण तुंबडी कडुता न छांडी, कहा
तीरथ करसाये॥ अ०॥ २॥ तिनतें निजघट अंतर
निरखो, अनुभव रीति सुहाये॥ तनमय नव

तिथि वारिभ योगें, ज्ञानानंद लहाई भजनाउा

इतिश्रीज्ञानविलास
संपूर्णः॥

अथ

॥श्रीसंयमतरंगःप्रारभ्यते॥
॥पद पहेलुं॥

॥राग भैरव॥योगानंद आदर कर संतो,
अइहण दुति सय लावो॥यो०॥टेक॥ अंतर घट
थिर कर सोधन करके, थंभन कर लावो॥यो०॥
॥थिर कर मूरत मारन जुगत लखकर, सुषमन प
रचाइ ल्हो॥ कुंभक रेचक पूरक लावें, प्रत्या
हार प्रमाणो॥यो०॥ धरणा धारण ध्यान समाधि

सपतम, श्वास रोधन करतां नो॥ अनुपम अ
नहद थती अनुयोगें, सोहं सोहं गानो॥ यो०
॥३॥ सोहं सोहं रटना रटतां, नवनिधि संयम
लायो॥ ज्ञानानंद परमातम शोधि, इंअतह
रज लहायो॥ यो०॥४॥ इति॥

॥पदजीभु॥

॥रागलेश्या॥ भग भन निंदी तन कर सं
तो, योग निंद संभारो॥ भ०॥ टेक॥ ज्ञानानाल
जधि नियान नुं ध्यान कर, सहज संपद आया
रो॥ भ०॥ षा विविध विषमय इंद्रि नवि छेड़के
निर्लेपी वीतरागो॥ शत्रु मित्र समभाव रहे
नित्य, इद्रासन ध्यान भगो॥ भ०॥ राम्योग
निरभय भावें, किनने छेड न करे अपगारो॥ मीत
समान सेवे वसु रिपुगण, वंधन कूले भग
सारो॥ भ०॥ ३॥ तस कर श्या पदनो वसु नवि

त्वय, पंच विजय लहे स्वारो॥निधि चारित ज्ञाना
नंद आकर, परमानंद निहारो॥ज्ञा॥४॥इति॥

॥पद त्रीजुं॥

॥राग भैरवी॥प्राण पिया तम ऐसी सज
ज पीयो रे॥सज॥टेर॥निज सुख परिण
ति अनुपम सजज, तिणी भरी विवेक सेयो
रे॥प्राण॥तत्व विचार विविध सुमसाला, उ
पसम कंकर कूंडी मेचो रे॥प्राण॥१॥कुटिल नि
वृत्ति समता प्रेमे, संयम रगड तागो रे॥प्रा
॥चरम शुक्ल पथ सुरली सर केरा, संचर
साइ गुझालो रे॥प्राण॥२॥अनुभव ज्ञान उ
रतन पियाला, भरभर समता पिलावे रे॥
प्राण॥निधि चारित्र ज्ञानानंद योगी, पीकर
ध्यान लगावे रे॥प्राण॥३॥इति॥

॥पद चोथुं॥

॥राग भैरवी॥ गगन मंडलगत परम अडेण ड़ेपि लायो रे॥ ग०॥ १॥ चंद उडु तो चंद न निरखुं, तरणि पिण न लखायो रे॥ ग०॥ तेज सिखा जिन दीपन निरखुं, लगा मग ड़ेपि सुखदायो रे॥ ग०॥ २॥ घन समीर परम सुख उपाधि, रहित ड़ेपिर दरसायो रे॥ ग०॥ सज लग व्यापी पायेहि अते, पण नहिं लाच रमायो रे॥ ग०॥ ३॥ पंडित योगी साध ले थाके, निलहठ पज लपटायो रे॥ ग०॥ आपहिं निरखे आपहिं अते, सहल समाधि लगायो रे॥ ग०॥ ४॥ तव घर घरकी भरम ना मेटी, सहज रूप परखायो रे॥ ग०॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, ज्योति निरख हरखायो रे॥ ग०॥ ५॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग वेलावल॥निज परिणति चित्त चारियें,परपरणति तज सारा॥निज०॥टेक॥ जबलग रहे पर परिणति, तबलग भवजल मझधारा॥निज०॥१॥अपनी पूंजी खोजनहिं, कुमता संग चित्त जोला॥राजपूत होय पर मतें, अथर सम डोला॥निज०॥२॥किंपाक फलसम रूप रेह, तव संग सुख जेहा॥अंतर हाला हल लही, दुर्धर दुःख लगे हा॥निज०॥३॥ अब जड तु छांडरे, चिंतामणि जीला॥नवनिधि संयम आदरी, ज्ञाना नंद हीला॥ निज०॥४॥इति॥

॥पद छठुं॥

॥राग वेलावल॥पर परिणति कुंतज करी, निज परिणति लहे सारा॥पर०॥टेक॥निज परिणति करजस लहे, आतम लोक सुजस॥

रागपणाथाऽभृंगी होय जिम ईलिका, भृंगी
सर अनुरागा अरनी अगनी परगटे,
पय गत सर पिव जगा पणा रा जिम शशि
थी अमृत लहे, पारस कुनक चिम्या रागति
म निज परिणति आपेरयां, सहजे पर
संग वारा पणा गुण समता संग रमण
करे, प्यार सपि युत तेहा नव निधि संय
म तन मय, ज्ञानानंद सुभ गेहा पणा ॥४॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग काफी ॥ चेतन तुं क्यों करे भूला,
हिंडोला करमका झोला ॥ अ ॥ चाला ॥ साथो
तम निज घर देखो, मत पंथ हुठता नाहिं पे
खो ॥ सा ॥ चेतन विलख हे सजही, अपनो
न छांडे कबही ॥ सा ॥ धा कोई मकारें
नहिं देखो, ऊपर जीवको लेखो ॥ रास

भ गंगा जल धोयो, तोपण बोटे ऊकडा
यो॥ साखा॥२॥ सूकर पायसकुं छंडी, अ
शुचि भोगें भ मंडी॥ मधु घृत कर सींच्यो
तबहीं, नींब न मीठो होय कबहीं॥ साखा॥
३॥ ज्ञानी ध्यानीकुं द्वेषी, निज मत पक्ष
पातें पेखी॥ तिनतें अनुभव ज्ञानानंदे,
सुजन चारित्र आनंदे॥ साखा॥४॥ इति॥

॥पद आठमुं॥

॥राग काफी॥ देखो प्यारे सब जग
कबही, नाहिं कोई शांति मूरत पेखी॥ दे०॥
मुनिजन उपसम गुण धारी, कबही को
प कारण सारी॥ दे०॥१॥ सेठकुं तसकर
सकु गावे, तसकर सेठ करी जावे॥ सतवा
दीकुं कहे कूडा, मिरजाकुं सत कहे मूडा॥ दे०
॥२॥ कमल भल सूरी जानो, श्रुति दृशां

त कहे मानो॥ तिनतें निधि चारित धारी, ज
जे ज्ञानानंद अधिकारी॥ केशा॥ ३॥ इति॥

॥ पद नवमुं॥

॥ राग काफी॥ सब जग जन अपनी ताने,
जिहां कोई न परमाने॥ सा॥ टेक॥ जे कोई परमा
नइं पूछे, ताना तानी कर कुछे॥ सा॥ १॥ गी
तारथ नी नहिं माने, करी जे तो पाखंड सकु
ल नो॥ श्रुति गत साची नहि जावे, जग जन
कूड सकु लावे॥ सा॥ २॥ मत वाला जम जकु
मलिया, नहिं कोई परमारथी मलिया॥ तिनतें निधि
संयम चित्तें, जे ज्ञानानंद सुजस नित्यें॥ सा॥ ३॥

॥ पद दशमुं॥

॥ राग काफी॥ मतलबियो जग जन देखो,
कोई उपगारी नहिं ऐसो॥ म॥ टेक॥ दुनियां
पटुतर स्वारथ की, पाछन पूछे परमारथ की॥

मनाशागत यौवन निस्नेही, तरुणी पण वि
षयी नरेहीा लोलन पाछे नहि लावे, अमृत
पण अंजा कुण जावो मनाशा जेह विचारे मु
नि समजे, पर उपगारकशुन जूलो। अनुपम
निधि चारित पावो, जिम निर्मल ज्ञानी नेह
लावो मना३॥ इति॥

॥पद अगीआरमुं॥

॥राग हुंगा॥ हमरी मुनजी जिन जोरीरे
लोगो॥ ए चाल॥ अबलानी छे जात सुनोपि
या, ऐसी न जेलो होरीरे॥ अना टेक॥ तुम न हा
नी वहू सजि संयोगें, आछे मतवाली गोरीरे॥
अना कुटिला साथें तुमें पण पहोता, मदनना
गां जेसी होरीरे॥ अना॥२॥ अविरतनां पकवा
न खिहां तुम, हरजे लोलत जोरीरे॥ अना मि
थ्या लाल गुलाल उडाई, योगतें कुमकुम छो

रीरे॥अ०॥२॥ इंद्रिय विषय जिहां रंग पिचका
री, मोहराजकी जेरीरे॥अ०॥ च्यार कषायें तुं
मतवालो, रंग मच्यायो होरीरे॥अ०॥३॥ ऐसी
होरी खेली तोपण, तृपत न भई ते गोरीरे॥अ०॥
च्यार भी छूमसें तुमने नाखी, ले गई खेलन हो
रीरे॥अ०॥४॥ अजतो पिया मन मांह समजो,
नारी चंचल चित्त जेरीरे॥अ०॥ जिम चारित्र
युत ज्ञानानंदे, नव निधि पामे छोरीरे॥अ०॥५॥

॥पद छत्रीसमुं॥

॥राग होरी॥ होरी खेले ज्ञानडियां॥ मेरो
अब केसें निकसन होय दईयां॥ अक्यालो होरी
खेले चास मिया, मेरो अब केसें जवनो होय द
ईयां॥होना०॥१॥ पंच महाव्रत वाघा पहेरी, शी
ल विभूषन ले सईयां॥ ज्ञान गुलाल अबीर
उडाई, कुमकुम शांति भरे सईयां॥होना०॥

संयम रंग सुरंग भरीने, पिचकारी आगमके
सईयां॥ समता साथें सुमति गुप्ति सखी,
होरी खेले ताथैईयां॥ होगा॥२॥ शुक्ल समकित
पकवान नुं भोजन, चेतन करत घरे सईयां॥
निधि चारित युत ज्ञानानंद, निज गुन होरी
घरे सईयां॥होगा॥३॥इति॥

॥पद तेरमुं॥

॥राग ठुमरी॥ पर विकथा तुं कहा करत है,
अपनी न काहे विचारत हैरे॥पर०॥टेक॥ जगमें
पर विकथा कर संतो, ज्ञान ध्यान चित माचत
हैरे॥पर०॥१॥ अपनी विकथा काहे न चारे, पोतें
कुरित भरावत हैरे॥ गर्हा संयम दिव्य विचारे,
अंतर भाव छिपावत हैरे॥पर०॥२॥ जब लग अप
नी कथनी न जाने, कहा उपदेश सुनावत हैरे॥नि
धि चारित्र ज्ञानानंद निज पद, काहे न चित्त र

भावत है॥२॥ पण॥३॥ इति॥

॥पद चौदमुं॥

॥राग कुमरी॥ गगन मेहेरा रसाल आडंब
र, जल पर मित वसु छाया॥ग०॥ टेक॥ शांति
न पर अशुभ मल गल मैथुन, करत कलोल सु
छाया॥ग०॥१॥ ताहू आडंभ पान पुगत है,
अनादि अनंत वसु संगें॥ता नीचें अेकर
हत भरणा, पायो गल निज रंगें॥ग०॥२॥
गरहन मित वसु बाहर दीसे, जैसें जीवन यं
छे॥ता झलांतर तेहथी गल भयो, मृगछन न
रपति वंछै॥ग०॥३॥ जिन दिन वे गल नर
पति जाने, अपनो बोल गमावे॥ता तपनिधि
चारित्र ज्ञानानंद, मातंग आसन पावे॥
ग०॥४॥ इति॥

॥पद पन्नरमुं॥

॥राग सोरठ॥ दीपक होत उजियारो॥ए॰
॥टेक॥ जिन दीपक मंदिर अंधियारो, कैसें करे उ
जियारो॥दी॰॥१॥घोर घटायें रयण अंधारी
भुवन न परख सारो॥दी॰॥२॥ कूड कूड योगें
अकुल परिणति, बिन गुण दीपकी सारो॥दी॰॥
३॥ बिन दिपक चेतन भयो परपर, स्वभाव
विभाव सधारो॥दी॰॥४॥ सज कर तप क
प किरिया विरथा, आतम अनुभव धारो॥
दी॰॥५॥ जिन अनुभव अंधक नर ढूढत, अ
नुभव दीप उगारो॥ दी॰॥६॥ तातें अवधूम
त ठकुराणी, ज्ञेय ज्ञान सुविच्यारो॥दी॰॥७
॥तेहथी निधि चारित रिधि पामी, ज्ञाना
नंद निहारो॥दी॰॥८॥ इति॥

॥पदछोत्तमुं॥

॥राग सोरठ॥ प्यारी नेह लगारो॥

प्या०॥टेर॥ जिन प्यारी घर घर में लटकत,
ऊपर लाय देआरो॥ प्या०॥१॥ कुमति योगें
च्यार नगर में, विविध रूप विसतारो॥ प्या०॥
२॥ पांच जतन वेस पहरायो, जिन प्यारी
जिन हारो॥ प्या०॥३॥ तेवीस विषय के रंग में
नाची, पाप थान विसतारो॥ प्या०॥४॥ हा
स्यादिक चल शेरे घेरयो, जिन सुख सुख
विसरारो॥ प्या०॥५॥ तिनतें प्यारी युत लि
धि चारित, ज्ञानानंद लहे सारो॥ प्या०॥६॥

॥ पद सत्तरमुं॥

॥ राग चइया॥ अेक समीरज सहर बनाहे
अद्भूत पंथ बाजार तनाहे॥ अे॥ टेर॥ दस
मार दस ही दरवाजे, चीठी आसा चीठी नगर
बिराजे॥ अे॥१॥ चोवीस वसंत जिहां नित
प्रति दीपे, सेत हेत सज लगाकुं जीपे॥ अे॥

आंनो ध्यानो ओकही कहें, ओक विना रहे अणगार वि
चालें॥ ओ०॥४॥ ओक द्रव्य गत नित्य अनित्यं, पर
पट भाव वसे सज चित्तें॥ ओ०॥ जिन दिन सघलो
ओळे गमावे, तो निधि चारित्र ज्ञान निपावे॥ ओ०
॥५॥ इति॥

॥पद अढारमुं॥

॥राग वइरा॥ गुरुगम अनुल शैली धारो,
ईस पक्ष निर्वाह निवारो॥गु०॥ एक सरव सम
य रवि केवि कर हीना, विविध स्वापद युत गहन
विपिना॥गु०॥१॥ मिरगा निज आस वन राजन,
नित प्रति राख अखंड समाजन॥गु०॥ निर्दय निज वै
री गण मारे, मांस विना न लजे जिन आरे॥गु०
॥२॥ पक्षी हरि जल परमुख लेया, पिण मिरगा न
वि वस कियां सोया॥गु०॥ तेहने पिन मिरगा जिन
आज कीया, इन समरथ वस करने सीया॥गु०॥३॥

अमर जिहां इसें लगधारे, मरन जीवन नहि जे
हुं सोरे॥ गुण॥ ७॥ गहिन हरिथी नपुंसक भयो, अ
नंत वली पिण नहिं तो सायो॥ गुण॥ ८॥ अेक हि घा
तें मिथ्याने मार्यो; छठी रयनी रात सुधारयो॥ गु
ण॥ नय निधि चारित्र उमंगा संगें, लहें निर्मल ज्ञा
नानंद रंगें॥ गुण॥ ९॥ इति॥

॥ पद जोगणीरानुं ॥

॥ राग लंगलो॥ ज्ञान विचारो रे नाथे, गुरु
गम शैली आदर संतो॥ ज्ञा॰॥ टेक॥ गगन मंडल
गत विविध तूर घनी, घोर स्वरें करवा लगा॥ पाथो रुण
जिन घना घन वरसे, गिरीषम ताप समा लगा॥ ज्ञा॰
॥ १॥ यामें रहत जतासा जोरा, वनर गलें छगता
नो॥ वासर विन अरुण प्रकासे, तेजें अल हल
भानो॥ ज्ञा॰॥ २॥ मानस नहिं विम मानस मे
ला, निरंजन लहै आनंदो॥ विधि चारित ज्ञाना नं

हयेमें, रमण करे सुख केहा॥ज्ञान॥३॥ इति॥

॥पदछवीश॥ मुं॥

॥राग कंगलो॥ ज्ञान विचारो सांई, अटप
ट अनुभव प्रीत लगासी॥ ज्ञान॥ टेक॥ कर्ण कुंडी
ये येंपाथे गल, झालर वासक हांसी॥ घला घल व
रसत तरली पूरे, आपो आप वहासी॥ ज्ञान॥१॥
ताते अवधू चारने वरजो, निकसा स्नू जतलावो॥
चार पांच सखि वरजें झिलमिल, मोकुं फिरहय ला
वो॥ ज्ञान॥२॥ अष्ट दस विच लोचन लिमो, तिरि
वेणी लल कांर्णा॥ पश्चिम पावड साला मारग, आ
रुणिघाडो सांर्णा॥ ज्ञान॥३॥ आचिलिय चालित्र चलि सां
भल निरंजे, मुगताफल तड सांर्णा॥ तवलिवि चारित्र
ज्ञानानंद, नाचे हरखे लसार्णा॥ ज्ञान॥४॥ इति॥

॥पदसतावीश॥ मुं॥

॥राग तिल्लाना॥ लेगी यासें यारी फीनी

हो, ज्ञान दिनंदा आवो गोरे ॥ ज्ञान दिनंद त्रिभुव
वन चंदा, तट नी तर निवसंदा, जरम त्याक छोर
धरंदा, धाती त्रसम दिपंदा ॥ अवध सादि सांत
दृढ आसन धारी, सुंनिज परिणति त्यायी पाझ्ले
य मसाला प्रेम झ प्याला, योगनीर दय सायीण अ
॥ रा ॥ तत्व विचार ज्ञान वधारी, अनहद धुनि चित्त ला
ई ॥ निधि चारित्र सुखसेले प्यारी, ज्ञाना नंद भवय अ
धी अवो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद छवीसमुं ॥

॥ राग तिलक ना ॥ गगनें घन निरजानी

हो, हरंभ जहानी ॥ गगनो रे ॥ ॥ तिहां धुपि छेग
अभिसर निरज्ञानी, परमानंद निसानी ॥ तट मुग
ता फल तडि सोहानी, फूल फूल सोभ न अनी हो ॥
हु ॥ गा ॥ अगा हें योगी जेस्यो ध्यानी, गतागति
छोडन अनी ॥ गरजन रथ चपला द्युति मानी, झिर

गिरवरसें पानी हो ॥ कं० ॥ २ ॥ गंगा सुगुरें जाया मो
ती पानी, अजरामर हरखानी ॥ निगुरें भूंड तिरि
षा परि मलानी, नहिं पामे गुण जानी हो ॥ कं० ॥ ३
॥ गंगा आपहिं तिरजे आपहिं जनी, आगल
उहाजेपानी ॥ निधि संयम ज्ञान नंद योगी, ज
गियस रहे सहलानी हो ॥ कं० ॥ ४ ॥ गंगा ॥ इति

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ पिउ मेरा निज घर आवे
रे ॥ पि० ॥ टेक ॥ वालम तुम लागी कुटिला निसि
दिन, पर घर घर लटकावे ॥ सान परें निरलज गु
ण जाहर, रंक ताव दिखलावे रे ॥ पि० ॥ १ ॥ उप
न जोर निज घरमें वालम, यन ओठार घरावे ॥
सेलें तुज मुज साथें लोगो, किम मन चंकि
त पावे रे ॥ पि० ॥ २ ॥ राज सांभल मोह नृप हु
नसें थाशे बहुत अराजा ॥ पि० ॥ तातें कुटिला

संगच्छरले, घरमें बैसो स्थिताजि॥ पि०॥ ३॥
इतनी सांभल या भुज घरनी, निहचै तेहने
भली॥ निधि संयम ते वानी धारी, ज्ञानानंद
विलसानी॥ पि०॥ ४॥ इति॥

॥ पद चोवीशमुं॥

॥ राग मल्हार॥ मेरी तुं मेरी काहा डेरा॥ मे०
॥ टेर॥ मेरी प्यारी गुण गण भूषित, हिरदय हु
रपेरा॥ तुम विन नांहि रहुं छिण ठामें, जिम शि
व सुगति पेरे रे॥ मे०॥ १॥ इम पियु वाणी सांभ
ल महिषी, परम परमोद वहै॥ दंपति मिल ऊरसें
ले जैसें, अंतर तत्व गहै रे॥ मे०॥ २॥ अंगो अंग
इरसन उर प्रेमें, धन सुगति कुं वर सावे॥ तब नि
धि संयम ज्ञानानंद, शीतलभाव निपावे रे॥ मे०॥ ३॥

॥ पद पचीशमुं॥

॥ राग गोडी॥ निरुपत छाह गमावै संतो॥

निळणा टेक॥ जो जे आठ जंबूनडे तेनें, आज
कहांसें आव्या वेसू पीसत तेल नजीकलें, भूरज
लग कहा जावो॥ संग॥ २॥ जोपी कुणिधर रिभुता
न पामे, तिम जडवंस निहालो॥ सेलडी गांठे र
स नवि पामे, पंकज सेतन लालो॥ सं०॥ ३॥ अ
नुपम दूधें साप पिलावै, हालाहल होय अवा
धन थी पिन मगसिल नवि ली जै, निजड म
धुता न पावै॥ सं०॥ ४॥ जेह विचार करी लाईसं
तो, निधि चारित्र रमायो॥ तव ज्ञानानंद परज
नुजवतां, कमला सफळनि पावो॥ सं०॥ ५॥ इति

॥ पद छवीशमुं॥

॥ राग गोडी॥ तन मय सदागम सेवो॥

आज्यूतणा टेक॥ जन सदागम सेवन
नांहि, पोपपतें जपटेयो॥ रतनपुंज पा कन
सुत जने, चंदन छेयन समछेयो॥ जं०॥ १॥

मोटे मोटे पाकुन तईवर, रतन थेहन दिसला।
वोारासल सूतर हय गज मोसें, लेवे ते मूढ क
हावे॥ अ०॥२॥ रतन उजलवल उन पीवर सम,
चेवण घृत पूरमानो॥ सकल वसतु एम मोल पे
दा वै, थोर साये नवि जन्हो॥ अ०॥३॥ अन्य
यपूर बनपरमें रहकर, क्युंकर जाल गमावो॥
तेहथी निज घर संयम आदर, ज्ञानानंद र
मावो॥ अ०॥४॥ इति॥

॥पद सत्तावीसमुं॥

॥राग जिल्हा॥ हडक सान रंगवारो॥

संतो॥ हणा टेसा पवन वेग निज हय पर चे
ढकर, उंत कृपाण धारयारो॥ कूतरा सूतरी दरसी
हलकर, चलरे नूपर पाडो॥ सं०॥१॥ विषहर
अमृत पान संयोगे, निर्विष भाव वधारो॥
सहाजम संयम धरनृप आला, निजिद

पुरें वरतारो॥ संग॰॥२॥ इण जग तीनो हुंक न भावे,
दरशन नाण न पायो॥ ते हुं विना संयम पिण नांहिं,
साध्य सिद्धि किम लावो॥ संग॰॥३॥ साधक सुलभसा
धन नवि पामे, तेहथी हुंक निवारो॥ लिधि संयम
ज्ञानानंद अनुभव, परमानंद सुख धारो॥ संग॰॥४॥

॥पद अठावीशमुं॥

॥राग जिल्हा॥ हुंक ध्यान संग नाचो अनघू
॥ हुं॥ टेक॥ जिम जिम निर्मल धन धन वरसे, भांहि
नव पल्लवशाखो॥ तिम तिम हुंकिय वायु विकारे, अ
हनिस हुंक सरावो॥ अ॰॥१॥ काली कुतरी पणछे
तेहवी, सरिखो अंग मिलायो॥ निज मति अंगेंकि
रियर पेखियो, अति संगति टलायो॥ अ॰॥२॥ नृप
जिन नृप बिति ते पलावे, अग अन भान न भाने॥
तेहने गुरु अन हित जतलावे, तोपिन ध्यान न अ
नो॥ अ॰॥३॥ हुंक हुंक जहु डसे अग अनसे, न

गहे अपलस गायो सन्मुख विष्टायें पाहुनला
जे, पोतें अशुचि भरायो अगा०॥४॥ पेज पातीमु
ति निति विलोपी, याभना हाभना पेलायो॥ तेहथी
निधि संयम ज्ञानानंद, सुधारस अनुभव पायो
अगा०॥५॥ इति॥

॥पद ओगणचालीसमुं॥

॥राग कल्याण॥ ऐसी तुं करी ठगाई, संतो
ऐ॥टेक॥ ममता सूतरको लेकर, तृष्णा मांज लगा
ई॥सं०॥१॥ कुतूहल रंग विरंग तुक्कली, मूर्छा तीली
सुहाई॥ विविध माया धनुष लगाके, लटकन मिथ्या
लहाई॥सं०॥२॥ कुटिल प्रवृत्ति पवन वसतें, गगनें शो
ष चलाई॥ ओक लेकर डोर लीनी, नयन विषय पर धाई
सं०॥३॥ झपट झपट आपवश गये, परभावें हरजाई॥
तिनतें ज्ञानानंद नव निधि, ऐसी संयम लाई॥सं०॥४॥

॥पद चालीसमुं॥

॥राग कल्याण॥ जैसा पतंग चढाई, संतो
॥ जै०॥टेक॥ ध्यान पतंग पर ज्ञान चिचिन, संय
म डोरी लगाई॥ सं०॥१॥ मेरु दंड पर मासन धर
उर, षेचरी मुद्रा धारी॥ सूक्षम पवनें गगन मंडल
गत, दृष्टि पतंग पर सारी॥ सं०॥२॥ गुणश्रेणी
गत जोर रहो, अप्रमत्त भाव चधारी॥ सकलप
रत्यक्त थिति पाय, लग लक्ष सूर विचारी॥ सं०
॥३॥ सफल पर सिधि जाप संतो, वीर प्रमोद ला
रच्या॥ ज्ञानानंद नव निधि संयम, नाचे निर
भहरषाया॥ सं०॥४॥ इति॥

॥पद छत्रीसमुं॥

॥राग झींझोटी लंगला॥ अनुभव रस
गत माती रंग राती॥ अ०॥टेक॥ गगन मंड
ल गत ठग अमिसरवर, निरंजन ब्रम्हत्म राती पे
तातट ठग मुगता फल तछेयर, निकलंक कूल कुल

भाती॥ रं०॥३॥ मुगतकुं अभिलख भावत पीव
त, रंग खुमार घुमाती॥ रं०॥ जह निशि शशि
रवि करत विकाश, दुर्धर तिमिर हरती॥ रं०॥४
॥ अनहद धुनि संग शंकर नाचे, निस्पृह भा
व रमाती॥ रं०॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद रंगें,
गावत नाटक राती॥ रं०॥५॥ इति॥

॥ पदछत्रीसमुं॥

॥ राग झिंझोटी जंगला॥ विरथा जनम ग
माया, योग न भाया॥ वि०॥ टेक॥ जगमें पहेले
हम ही जनमे, मात जनक पछें जाया॥ वि०
मामा मामी नाना नानी, पछें गुरु भाई रमा
या॥ वि०॥२॥ जग समजन या कैम समजाई,
मो मन नांही रमाया॥ वि०॥ चेलेने निज गुरु
जनमाया, गुरुने शीस भनाया॥ वि०॥३॥ पहेले
योगी पाछे भोगी, अनादि अनंत भोगाया॥

आपहिं मात अनकु गुरु पेला, जगमांही जरम्या
या॥ पिं०॥३॥ पाहन वाहन जेसी थूळे, आंधो
अंध पसाया॥ पिं०॥ तिनतें संतो बिधि संय
मयुत, ज्ञानानंद सुख्याया॥ पिं०॥४॥ छ॥ति॥

॥पद त्रेतीश मुं॥

॥राग पाजका॥ वालमिया रे विरथा जनम गमाया
॥टेक॥ परसंगतकर हसहिसि जटका, परसें प्रेम लगा
या॥ परसें भया परंगलाया, परकुं लोग लगाया॥
॥विं०॥१॥ माटीखाना माटीपीना माटीमें रम अना॥
॥माटी पीवर माटी भूजन, माटी रंगसो लीना रे॥विं०
॥२॥ परदेशीसें नातरा कीना, मायामें लपटाना॥ बिधि
संयमज्ञानानंद अनुभव, गुरुबिन नांहि लहाना रे॥विं०
॥३॥ छ॥ति॥

॥पद चोत्रीश मुं॥

॥राग पाजका॥ योगिया रे गुरु बिन ज्ञा

न नलायाा टेक।ा दुर्धर केसरी जकरी लई,
जकरी वाघ जंघायाा जकुरी येकुटे वाघन
यावे, ऐसे बन हरखायाा रे।ा गु०।ा४।ा तुरि
य वेग हय याजुक योगें, नाग कुटुंब डसायाा
।ा समय अनादे ऐत ठीत नरके, भम ज्ञाये
नरमायाा रे।ा गु०।ा५।ा जिन नर ज्ञानकी या
तन लनी, अनुभव वासन लायाा ।ा गुरु
किरिया संयम ज्ञानानंद, यरण कमल त
परायाा रे।ा गु०।ा६।ा इति।ा

।ापद पांत्रीशमुं।ा

।ा राग वसंत।ा अयरज अेक नजर गत
आयो, ज्ञानी गुरु जतलायो।ा टेक।ा त्रिभुव
नमें अेक बाल कुमारी, जिश हसति कहला
या अे।ा अ०।ा१।ा जिन घरमां उग पलमें
निपने, नंदन तिन सुंन दायी अे।ा रूप

अनूप चार दीकरी, ते पिन योगन अर्पे जो ॥ अ॰
॥ २ ॥ नेह जनक ते वल्लभ तेहना, मात विना अ
गअया जो ॥ ते इया चिदानंद परनी, योगी भाव
रमाया जो ॥ अ॰ ॥ ३ ॥ सेअ दोउ अनुभव रंगें, अ
ह निसि प्रेम जगाया जो ॥ निधि संयम ज्ञानानंद
योगी, शुद्ध क्रिया दरसाया जो ॥ अ॰ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ विविध तूर धुनि नभ मंडल ग
त, ज्ञानी मुनि दिल लाया जो ॥ टेक ॥ चिद घन
शुषिर तत वितत, घोर सरें संभलाया जो ॥ वि॰ ॥ १ ॥
भेर सूरअ परब्रह्म सुभावें, योगी साधन साधना
जो ॥ अनुभव तत्त्वसु ज्ञान कुमारी, उनहुन ठीत
रे आराधना जो ॥ वि॰ ॥ २ ॥ तूर नाद पन तूर धनि
सुन, नव निधि सहज निपाया जो ॥ संयम ज्ञा-
नानंद सह तव, नाचै हसे हरखाया जो ॥ वि॰ ॥ ३ ॥

॥पद ४७ श्रीराग में॥

॥राग झिंझोटी॥ रहो जंगले में बालम कई ते
हे राजरे॥टेर॥ निज परिणति जा अनुपम जंग
ला, संयम और सुगा राजरे॥रहो॰॥ चरण करण सपत
ति कंगुरा, अनंत विरल थंभ सा राजरे॥रहो॰॥१॥ शीतल
भूमि पर निर्भय सेजें, निरवेद परम पद लाछै रे॥रहो॰
॥ विविध तत्व विचार सुजडी, ज्ञान दरस सुगति
भाछै रे॥रहो॰॥२॥ अहनिस रवि शशि करत विकासा,
सलील अमीरस या छै रे॥रहो॰॥ विविध तूर धुनि सां
भल बालम, सांद्र चाह अवगाछै रे॥रहो॰॥३॥ ध्येय
ध्यान लय चढी हे कुमारी, उतरे क्युं जहु न रामी रा रहो॰
॥ सुन निधि संयम धरनी चाख्या, ज्ञानानंद सुख
धामी रा रहो॰॥४॥ इति॥

॥ इतिश्रीसंयमतरंगसंपूर्ण॥

अथ

॥श्रीयशोविजयजीकृत आनंदघनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी॥

प्रारंभः॥

॥पदपहेलुं॥

॥रागकनडो॥ मारग चलत चलत गात, आ नंदघन प्यारो॥ रहत आनंदभरपूर॥मा०॥१॥ ताको स्वरूप भूप, त्रिहुं लोकथें न्यारो॥ बरखत मुख परनूर॥मा०॥२॥ सुमति सखीके संग, नित नित दोरत॥ कबहु न होत ही दूर॥ जश विजय कहे सुनो हो आनंदघन, हम तुम मिले हजूर॥मा०॥३॥ इति॥

॥पदबीजुं॥

॥आनंदघनको आनंद, सुजशही गाव

ता॥ रहत आनंद सुमता संगा॥ आनं०॥ सुम
ति सखी और नवल आनंदघन, मिल रहे गं
ग तरंगा॥ आनं०॥२॥ मन मंजन करके निर्मल की
यो है चित्त, तापर लगायो है अविहड रंगा॥ जस
विजय कहे सुनत ही देखो, सुख पायो जोत अ
भंगा॥ आनं०॥३॥ इति॥

॥पद त्रीजुं॥

॥राग नायकी ताल चंपक॥ आनंद कोउ
नहीं पावे, जोई पावे सोई आनंदघन ध्यावे॥
आ०॥ आनंद कौन रूप कौन आनंदघन, आनंद
गुण कौन लखावे॥ आ०॥१॥ सहज संतोष आ
नंद गुण प्रगटत, सब दुविधा मिट जावे॥ जस
कहे सोही आनंदघन पावत, अंतर ज्योत
जगावे॥ आ०॥२॥ इति॥

॥पद चोथुं॥

॥राग ताल रुपक॥ आनंद ठोर ठोर नहिं पा
या, आनंद आनंद में समाया॥ आ०॥ रति अ
रति दोउ संग लीय वरजित, अरथ ने हाथ तपा
या॥ आ०॥१॥ कोउ आनंदघन छिद्रही पेखत,
जसराय संग चढी आया॥ आनंदघन आनंद
रस झीलत, देखत ही जस गुण गाया॥ आ०॥२

॥पद पांचमुं॥

॥राग नायकी॥ आनंद कोउ हम देखलावो,
आ०॥ कहा ढूंढत तुं मूरख पंछी ॥ आनंद
हाट न बेकावो॥ आ०॥१॥ ऐसी दशा आनंद
सम प्रगटत, ता सुख अलख लखावो॥ जोई पा
वे सोई कछु न कहावत, सुजस गावत ताको वधा
वो॥ आ०॥२॥ इति॥

॥पद छठुं॥

॥राग कानडो ताल रुपक॥ आनंद की गत

आनंदघन न्यगो॥आ॥बाई मुज सहज ज
यल अलोज पद, वासुज सुरस जोजानो॥आ॥
२॥सुरस विलास सज प्रगटे आनंदरस, आ
नंद अक्षय जननो॥आ॥३॥ असी दशा ज
ज प्रगटे चित्त अंतर, सोहि आनंदघन पिछानो॥
आ॥४॥इति॥

॥पद सातमुं॥

॥जेरी आज आनंदभयो मेरो तेरो-
मुज निरज निरज रोम रोम शीतलभयो अं
गो अंग॥जेरी॥१॥ शुद्ध समजण समता
रस झलत, आनंदघन भयो अनंत रंग॥जे
री॥२॥ असी आनंद दशा प्रगटी चित्त अं
तर, ताको प्रभाव चलत निरमल गंगा बाही
गंग समता दोउ मिल रहे, जस विजय झल
त ताके संग॥जेरी॥३॥इति॥

॥पद आठमुं॥

॥राग जंगलो ताल॥ आनंदघनके संग
सुजसही मिले जब, तब आनंद सम भयो
सुजस, पारस संग लोहा जो फरसत, कंचन
होत ही ताके जसा॥आ०॥१॥ खीर नीर जो मि
ल रहे आनंद, जस सुमति सखीके संग॥ भ
यो है एकरस, भव खपाई सुजस विलास॥
भये सिद्ध स्वरूप लीये धस मरसा॥आ०॥२॥
॥इति श्री जसोविजयजी कृत आनंदघनजी
की स्तुति रूप अष्टपदी संपूर्ण॥

।इति श्री रसविलासत
थाविनयविलासअनेङ्गा
नविलासाज्य राग माला
समाप्ता।

समाप्त.